Basic Theories of Upliftment of Powar Community

समाजोत्थान का मौलिक सिध्दांत

इतिहासकार
प्राचार्य ओ.सी.पटले

Basic Theories of Upliftment of the Powar Community

समाजोत्थान
का
मौलिक सिध्दांत

विचारक

इतिहासकार ओ. सी. पटले

समाजोत्थान का मौलिक सिद्धांत
(Samajotthan ka Maulik Siddhant)

प्रथम संस्करण, अक्षय तृतीया–2023.

ISBN- 978- 93- 5812- 951- 9

(C)लेखक
इतिहासकार प्राचार्य ओ सी पटले
आमगांव (M.S.)441902.
मो. नं. 9422348612.
ocpatle@gmail- com

प्रकाशक
ओ सी. पटले
अध्यक्ष–भवभूति रिसर्च अकॅडमि, आमगांव.
रजि. क्र. महा. –267/2011 गोंदिया M.S.

मुखपृष्ठ सजावट
श्री. संतोष पुंडकर, आमगांव.

संगणक टंकलेखक
महेश कॉम्पुटर सेंटर, आमगांव.

मुद्रण स्थान
नचिकेत प्रकाशनःअनिकेत अनिल सांबरे
वर्धा रोड़, नागपुर–440015.
मो. 8600044435 emailnachiketprakashan/gmail- com

मूल्य ₹ 250/-

लेखक को मनोगत''

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी से. येको कारण प्रत्येक व्यक्ति ला समाज मा रव्हनो अत्यंत प्रिय से. व्यक्ति को जीवन निर्वाह समाज मा संपन्न होसे. प्रत्येक व्यक्ति को समाज को प्रति काही दायित्व भी होसे. अतः प्रत्येक व्यक्ति न् समाज ला जान लेनो परम् आवश्यक से. अनेक समाजशास्त्रज्ञों न् मानव देह को आधार पर समाज व समाज को प्रति दायित्व ला समझन को व समझावन को प्रयास करीसेन. येन् समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण (Sociological Approach) ला आत्मसात करके प्रस्तुत लेखक को अनुसार समाज व व्यक्ति को दायित्वों की परिभाषा निम्नलिखित से.

मनुष्य मा प्राण होसे. प्रकृति को सभी प्राणियों अना वनस्पतियों मा भी प्राण होसे. सबको जीवन को आधार श्वसनक्रिया से. तद्वतच प्रकृति को साथ–साथ शरीर को प्रत्येक अंग न् आपआपलो कार्य संपादित करनो आवश्यक से. शरीर का अंग यदि कार्य करनो बंद कर देईन त् शरीर कमजोर होय जाये अना भविष्य मा एक दिन नष्ट होय जासे.

समाज भी मानव शरीर वानी होसे. जनसमुदाय, प्रबुद्ध वर्ग, सामाजिक संगठन, मातृभाषा अना संस्कृति ये समाज का अंग–प्रत्यंग आती. समाज मा जबवरी सामूहिक चेतना रहें अना समाज को प्रत्येक अंग आप–आपलो कार्य सही ढ़ंग लक करत रहें, तबवरी पोवार समाज स्वस्थ रहें अना आपलो उत्कर्ष करत रहें.

अतः वर्तमान 36 कुलीय पोवार समुदाय मा आम्हीं सब एक आजन, आमरो गौरवशाली इतिहास से, आमरी गौरवशाली पहचान से, पोवारी या आमरी मातृभाषा आय अना सनातन हिन्दू धर्म पर आधारित आमरी श्रेष्ठ संस्कृति से, येव भाव जगावन की नितांत आवश्यकता से. येव कार्य संपन्न करनो सामाजिक संगठनों को व साथ–साथ समाज को प्रबुद्ध वर्ग को भी दायित्व से. लेकिन 1982 पासून पोवार समाज को काही संगठनों द्वारा आपलोच समाज की ऐतिहासिक पहचान मिटावन को षड़यंत्र प्रारंभ भयी से. वय ''पोवार'' येन् ऐतिहासिक नाव को स्थान पर ''पवार'' अना मातृभाषा को ''पोवारी'' येन् ऐतिहासिक नाव को स्थान पर ''पवारी'' येव नवीन अनुचित नाव प्रतिस्थापित करन को षड़यंत्र कर रहया सेत. पोवार जाति मा अन्य काही जातियों ला मिलावन साती या साजिश चल रही से. अतः वर्तमान समय मा पोवार समाज को अस्तित्व पर संकट का बादल मंडराय रहया सेत. असी अवस्था मा समाज को अस्तित्व की लड़ाई लड़नो येव समाज को प्रबुद्ध वर्ग

(शिक्षक, प्रोफेसर, साहित्यिक, पत्रकार, प्रशासनिक अधिकारी, इंजीनियर वकील, डॉक्टर, उन्नत किसान, उद्यमी आदि.) को दायित्व से. या बहुत हर्ष की बात से कि पोवार समाज को युवा प्रबुद्ध वर्ग ''अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार) महासंघ'' को बॅनर खाल्या संगठित होयकर आपलो अस्तित्व अना ऐतिहासिक पहचान की लड़ाई पूरी क्षमता को साथ लड़ रहीं से.

वर्तमान समय मा पोवार समाजोत्थान का उद्देश्य (Aim and Objectives) अना उद्देश्यों को क्रियान्वयन (implementation) को संबंध मा युवा पीढ़ी ला पथप्रदर्शक साबित होये, असो साहित्य को नितांत अभाव से. येन् अभाव की पूर्ति को उद्देश्य लक या किताब साकार करेव गयी से. अना या किताब समाज ला समर्पित करन को समय परम् हर्ष की अनुभूति होय रही से.

विचारक
इतिहासकार ओ सी पटले

●●●

गौरवशाली समाज नवनिर्माण की आकांक्षा

लोकमंगल की कामना करनेवाला व्यक्ति उत्तम ग्रंथ, महापुरुषों को जीवन व ऐतिहासिक घटनाओं मा निहित तत्वों (Principles) पर ध्यान केंद्रित करके मुख्य–मुख्य तत्व अवगत कर लेसेती. येन् तत्वों को आधार पर समकालीन सामाज व्यवस्था (Social System) मा सुधार करन को उद्देश्य लक नवीन उपयुक्त ज्ञान को सर्जन कर् सेती. येन् ज्ञान ला सिद्धांत अथवा दर्शन (Philosophy) कव्ह् सेती.

विचारक की श्रेणी का व्यक्ति नवीन ज्ञान को आधार पर राष्ट्र अथवा समाज की सदोष, कमजोर, कालबाहय व्यवस्था मा सुधार करन को उद्देश्य लक नवचेतना जागृत करके समाज ला उत्कर्ष को दिशा मा अग्रेसर करन को प्रयत्न कर् सेती. असो महान कार्य करनसाती लक्ष्य की निश्चित जाणीव, प्रखर निष्ठा, त्याग ना समर्पण की आवश्यकता रव्ह् से.

उपर्युक्त विचार प्रस्तुत लेखक को गहण अध्ययन– अनुभव पर आधारित सेती. येन् विचारों को आलोक मा ''गौरवशाली पोवार समाज को नवनिर्माण'' येव पावन लक्ष्य सम्मुख ठेयके वोला साध्य करनसाती लेखक द्वारा एक स्वतंत्र दर्शन विकसित करेव गयेव. येन् दर्शन को अनुसार प्रस्तुत लेखक पोवार समुदाय मा नवी चेतना जागृत करन को संकल्प लेयके स्वीकृत लक्ष्य को प्राप्ति साती विगत अनेक साल पासून अविरत कार्य कर रही से.

●●●

लेखक द्वारा वैचारिक क्रांति : स्वजनों के अभिप्राय (हिन्दी)

पोवार समाज में समाज की ऐतिहासिक पहचान मिटाने के प्रयास शुरु थे। समाज के स्वतंत्र अस्तित्व, मातृभाषा पोवारी एवं सनातन हिन्दू धर्म के प्रति अनास्था एवं अश्रद्धा के भाव पनप रहे थे। इस स्थिति में आमूलाग्र परिवर्तन लाके पोवार समाज में, ''अपना उत्थान स्वयं के बलपर करने की आकांक्षा'' उत्पन्न की गयी। समाज की गंगा उल्टी दिशा में बह रही थी उसे सही दिशा में मोड़ा गया। इस प्रक्रिया को वैचारिक क्रांति के नाम से संबोधित किया गया है। प्रस्तुत लेखक द्वारा यह क्रांति युवाशक्ति के बलपर आश्चर्यजनक गति से सफल हुयी। इस सफलता पर कुछ प्रमुख स्वजनों का अभिप्राय साक्ष्यों के स्वरुप में निम्नलिखित है–

01. आदरणीय श्री पटले सर आप अटल हिमालय पर्वत की तरह समाज के हितों की सुरक्षा में सदैव अभेद्य रहे, उन लोगो के लिए जिन्होंने पोवारी को दीन–हीन बनाने की भरसक कोशिश की। आपके जज्बे और जुनून का हम सदैव गुणगान करते रहते है। पोवारी स्वाभिमान आंदोलन के शुरुआती चरण में हल्के राजनैतिक पृष्ठभूमि के लोगों ने आपको रोकने का बहुत प्रयास किया था, जिसका मैं स्वयं साक्षी रहा हूँ। कई दफा आपको सोशल मीडिया पर जानबूझकर दबाने की भरसक कोशिश भी की गई। उनके गुस्से का बहुत बार आप अनायास ही शिकार होते रहे किंतु आपके पग अंगद के भांति कभी डगमगाये नहीं।

आपकी कलम की स्याही को पूर्वजों की प्रेरणा का सत् मिलता रहा एवं वह उनकी इच्छाओं तथा पहचान को दर्ज करती रही। नमन है आपके समाज हित को, आपके जज्बे को और जुनून को. . .

आप स्वार्थ से परे सीधी और सच्ची बात के सजग प्रहरी के रुप में हर मंच पर दिखाई देते रहे।

आपको अपने जीवन में न किसी राजनीतिक जमीन की और नाही किसी पद की चाह रहीं, यही आपकी श्रेष्ठता है। आपके मार्गदर्शन में सदैव समाज का कल्याण साध्य होता रहेगा एवं जब तक गौरवशाली पोवार समाज रहेगा आनेवाली पीढियां आपके कार्य को गर्व से सराहती रहेगी।

–इंजी. नरेशकुमार गौतम, भोपाल
महासचिव– अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार) महासंघ.
मंग. 22/12/2022.

02. आदरणीय, आप अपनी लेखनी में धधकती ज्वाला लिए हो,ऐसी हस्ती समाज हित में अग्रेसर होने से हमारा भी मन चाहता है कि चलों ! पोवार समाजोत्थान के अभियान में हम सब खुद को झोंक दे !!

–प्रा. डॉ. प्रल्हाद हरिणखेड़े, मुंबई

सदस्य–अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार)महासंघ

मंग. 22 / 12 / 2020.

03. आदरणीय, आप किसी भी विषय का विश्लेषण बहुत ही सुन्दर ढंग से करते है. आपका कार्य सही मायने में वंदनीय है।

इजी. महेन पटले, नागपुर

संरक्षक–अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार) महासंघ

मंग. 29 / 01 / 2021.

04. सर जी, यह सच है कि युवाशक्ति जाग उठी है, और आपने उसमें नयी चेतना तथा समाजोत्थान की सही सोच उत्पन्न की है। किसी में हिम्मत नहीं थी सामाजिक संगठनों की गलत नीतियां उजागर करने की! वह कार्य आपने किए है और कर रहे हैं, समाज आपका सदैव ऋणि रहेगा।

विद्या बिसेन (प्रसिद्ध गायिका), बालाघाट

मध्यप्रदेश महिला अध्यक्ष–अखिल भारतीय
क्षत्रिय पोवार (पंवार) महासंघ.

सोम. 20 / 05 / 2019

05. सर, आप हमारे आदर्श है और आप पर हमें गर्व है। आपकी सुलझी हुई सामाजिक समज और समाज के प्रति गंभीरता, आपके लिखित विचारों में झलकती है। आपका अध्ययन इतना सूक्ष्म होता है कि एक भी विषयवस्तु कही बिखरी हुई प्रतीत नहीं होती। आप अपनी पवित्र सोच को उचित शब्दों में जो लिखते है, वह बेमिसाल है। आपका शब्दकोश समृद्ध है। निरंतर लिखते रहने के कारण आपके विचारों से समाज में वैचारिक क्रांति आयी है।

प्रा. बी. जी. पटले (इतिहास), महागांव.

माजी सदस्य–माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक शिक्षण मंडल,
विभाग–नागपुर. शनि. 01 / 06 / 2019

05. आदरणीय सर, मातृभाषा पोवारी यह पोवारी संस्कृति का दर्पण है. पोवारी के संरक्षण– संवर्धन और समाजोत्थान में आपके प्रयास अद्वितीय है। हम भी आपसे मातृभाषा और समाज के उत्कर्ष में योगदान देने के लिए प्रेरित है।

– गुलाब बिसेन, कोल्हापुर

संपादक– झुंझुरका पोवारी बाल ई–मासिक

मंगळ. 29 / 12 / 2020

●●●

लेखक को परिचय

1.	नाव	—	ओंकारलाल चौतराम पटले
2.	जन्म दिनांक	—	10 फरवरी1946.
3.	जन्मभूमि	—	मोहाड़ी, तहसील–गोरेगांव, जिला–गोंदिया (महाराष्ट्र) 441807.
4.	कर्मभूमि	—	आमगांव, जिला–गोंदिया(महाराष्ट्र) 441902.
5.	शैक्षणिक योग्यता	—	एम. ए. (इतिहास), एम. ए. (राजनीति शास्त्र), एम. एड्. राजनीति शास्त्र विषय मा नागपुर युनिवर्सिटी टॉपर.
6.	व्यावसायिक अनुभव	—	भवभूति महाविद्यालय, आमगांव मा प्राध्यापक, श्री शंकरलाल अग्रवाल बी. एड्. कॉलेज गोंदिया मा प्राचार्य.
7.	प्रकाशित ग्रंथ	—	(1) प्रतिबिंब (श्री. लक्ष्मणराव मानकर गुरुजी जीवनचरित्र)– 2000. (2) भवभूति अब गीतों में–2004. (3) उत्तर मध्ययुगीन परगने कामठा (1751–1818) च्या विशेष संदर्भात–वीर राजे चिमना बहादुर, I.C.H.R.,भारत सरकार द्वारा अनुदान प्राप्त ग्रंथ–2018. (4) राजाभोज महाकाव्य– 2019. (5) पोवारी भाषा संवर्धनः मौलिक सिद्धांत व व्यवहार (भाषा संवर्धन पर लिखेव गयेव सर्वप्रथम अना पोवारी भाषा पर लिखेव गयी किताबों मा अद्वितीय ग्रंथ से. येव ग्रंथ गुगल अना पोवार समाज मा सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ को रुप मा उभरकर सामने आयी से.)– 2022. (6) पोवारों का इतिहास(1658–2022)–2023
8.	अनुवादित ग्रंथ	—	महर्षि जैमिनी रचित व रामगोपाल अग्रवाल द्वारा प्रकाशित संस्कृत ग्रंथ को मराठी अनुवाद. –2018.
9.	संशोधनात्मक लेख	—	(1) भवभूति संबंधी लेख प्राचीन तीर्थ संरक्षिणी (लखनऊ), जैन बालादर्श (प्रयागराज), अमर

उजाला (आगरा) मा प्रकाशित. (2) शिक्षण संबंधी लेख शिक्षण संक्रमण (पुणे) अना शिक्षण समीक्षा (नागपुर) मा प्रकाशित.

10. गीत रचना – स्वामी विवेकानन्द, स्वामी रामकृष्ण परमहंस अना राष्ट्रीय विषयों पर रचित कविताएं केंद्र भारती (जोधपुर) व विवेक ज्योति (रायपुर) मा प्रकाशन.

11. आडिओ सी. डी. प्रकाशित– महाकवि कालिदास, महाकवि भवभूति, स्वामी रामकृष्ण परमहंस, भारत के कोहिनूर डॉ. भीमराव आंबेडकर.

12. दूरदर्शन साक्षात्कार –
(1) इ. टी. व्ही. की सह्याद्रि उपवाहिनी अना रायपुर दूरदर्शन लक महाकवि भवभूति को इतिहास संबंधी साक्षात्कार को प्रसारण. –2003.
(2) यूट्यूब को झक्कास मराठी मिडिया द्वारा महाकवि भवभूति व वीर राजे चिमणा बहादुर को इतिहास को प्रसारण. –2022.

13. सामाजिक कार्य –
(1) भवभूति रिसर्च अकॅडमि, आमगांव– अध्यक्ष (रजि. क्र. महा. एफ. 267/2011 गोंदिया)
(2) पोवारी भाषिक क्रांति प्रणेता, सनातन हिन्दू धर्म अना वैनगंगा तटीय पोवार समुदाय मा जनजागृति को कार्य.

14. आगामी प्रकाशन –
(1) राजाभोज को राजत्व (Rajabhoj's kingship)
(2) दिग्विजय महाकाव्य (स्वामी विवेकानन्द इनको जीवन–चरित्र पर आधारित)
(3) गोंदिया जिला को स्वर्णिम इतिहास (1751–2022.)
(4) ग्राम दर्शन (Village Philosophy)

●●●

About theA uthor

Historian Mr. O. C. Patle publishedA book "Bhavabhuti Ab Geeton Mein" (Bhavabhuti now in his songs) he has also published some Audio CDs and cassettes to keep legend's memories alive- State's local TV Channel, Sahyadri and E TV Marathi telecasts some documentaries on the life of this great poet-

Refer Legacy
Bhavabhuti & Wikipedia
en.m. Wikipedia Org- ●●●

ग्रंथ की पार्श्वभूमी

पोवार समाज येव 1700 को आसपास मालवा–राजस्थान लक स्थानांतरित भयेव व वैनगंगा अंचल मा स्थायिक भय गयेव पोवार समाज येव सनातन हिन्दू धर्म को अभिन्न अंग से. सनातन हिन्दू धर्म येव दुनिया को सबसे प्राचीन व मोठो धर्म से. येव एकमात्र धर्म असो से जेन् स्वीकार्यता, आपसी सम्मान व शांति को मूल्यों को साथ विविध परंपराओं व मान्यताओं ला समाहित कर लेयी सेस. तात्पर्य, सनातन हिन्दू धर्म येव उदार व महान से.

भारत वर्ष ला आज़ादी मिलेव को पश्चात यहां लोकशाही शासन पद्धति को स्वीकार करेव गयेव. येको कारण भारत मा समाजवादी, साम्यवादी, बहुजनवादी, आंबेडकरवादी, वामपंथी, राष्ट्रवादी असी अनेक विचारधारा अस्तित्व मा आयी. शिक्षण मा वामपंथी विचारधारा को प्रभाव बढ़ेव. राष्ट्र मा आधुनिकीकरण व पाश्चात्यीकरण को प्रचलन भी बढ़ेव. हिन्दू धर्म मा हिन्दू धर्म को विरुद्ध मान्यता वाला अनेक संप्रदाय अस्तित्व मा आया. असो एक वैचारिक विभिन्नता को माहौल मा पोवार समाज को समाजिक संगठन समाज ला योग्य दिशा देनो मा असमर्थ साबित होन लग्या. येन् अंधाधुंध परिस्थिति मा समाज मा भाषिक व सांस्कृतिक संकट की स्थिति उत्पन्न भयी. वैचारिक असमंजस की येन् स्थिति मा लक सामाजिक संगठन व समाज को प्रबुद्ध वर्ग ला सही दिशा देन की व समाज ला सैद्धांतिक अधिष्ठान देन की आवश्यकता अनुभव होन लगी. आधुनिक युग मा उत्पन्न येन् आवश्यकता को कारण प्रस्तुत लेखक को मन मा पोवार समाज की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक पार्श्वभूमी को आधार पर विविध उपयुक्त विचार सिद्धांत रुप मा समाज ला देनो परम् आवश्यक से,या अनुभूति होन लगी. परिणास्वरुप **"समाजोत्थान का सिद्धांत"** येव ग्रंथ साकार भयेव.

अनुक्रमणिका

●●●

विभाग 1 : समाजोत्थान का मौलिक सिध्दांत

अध्याय–1
सामाजिक चेतनाः अर्थ,स्वरुप व महत्व
(Social Conciousness : Meaning,NatureA nd Importance)

1. संकल्पना को उदय व विकास

पोवार समाज लगभग 300 साल पहले मालवा लक स्थानांतरित होयके वैनगंगा अंचल मा स्थायी रुप लक वास्तव्य कर रहीं से. आज़ादी को बाद समाज मा शिक्षण को प्रचार–प्रसार भी भयेव. सामाजिक संगठनों द्वारा समाजोत्थान का प्रयास भी भया. परंतु आज़ादी को बाद लगातार सत्तर साल वरि पोवार समाज मा भाषिक व धार्मिक अस्मिता को विकास की उपेक्षा होत गयी. परिणामस्वरुप पोवार समाज मा भाषिक आंदोलन व सर्वांगीण व्यापक जनजागृति की आवश्यकता निर्माण भयी व 2018 मा सामाजिक चेतना आंदोलन (Movement for Social Conciousness)की जोरदार शुरुआत भयी.

प्रारंभ मा सामाजिक चेतना आंदोलन येव केवल भाषिक चेतना पुरतो मर्यादित होतो. लेकिन 2018 पासून 2020 येन् तीन वर्षों मा सामाजिक चेतना या संकल्पना निरंतर विकसित होत गयी. पोवार समाज व पोवारी भाषा का नाव बदलन का अनुचित प्रयास शुरु होता. येन् प्रयासों ला अनुचित मानके परंपरागत–ऐतिहासिक नावों को संरक्षण ला भी सामाजिक चेतना आंदोलन को उद्देश्यों मा प्रमुख स्थान देयेव गयेव. असो पद्धति लक सामाजिक चेतना या संकल्पना व्यापक बनत गयी. अतः सामाजिक चेतना को अर्थ, स्वरुप, महत्व व सर्वांगीण सामाजिक चेतना विकसित करन की प्रक्रिया संबंधी विचार मन–मस्तिष्क मा साकार भया.

2. सामाजिक चेतना को अर्थ

सामाजिक चेतना को अर्थ से–''समाज मा भाषिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, राष्ट्रीय व वैचारिक जागृति विकसित करनो!'' सामाजिक चेतना या संकल्पना केवल जाणीव जागृति पुरती मर्यादित नाहाय, बल्कि येको मा समाज को विभिन्न अंगों को प्रति प्रेम, अस्मिता, स्वाभिमान, समाज को सर्वांगीण विकास की आकांक्षा व येन् आकांक्षा को परिपूर्ति साती सेवा–समर्पण की भावना को विकास आदि. विषय अंतर्निहित सेत.

3. सामाजिक चेतना को महत्व

मानव सामाजिक व बुद्धिजीवी प्राणी से. सामाजिक चेतना की संकल्पना को अनुसार ''सामाजिक जीवन मा प्रेम, अस्मिता, स्वाभिमान आदि. मनोभावों ला महत्वपूर्ण स्थान से. प्रेम, अस्मिता, स्वाभिमान ये समाजोत्थान का प्रेरक तत्व आती. अतः जेन् समाज मा भाषिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, राष्ट्रीय प्रेम–अस्मिता–स्वाभिमान ये तत्व जाग जासेती वू समाज समाजोत्थान साती प्रेरित होसे व उज्ज्वल भविष्य निर्माण को लक्ष्य की दिशा मा अग्रसर होसे. अस्मिता व स्वाभिमान ये समाजोत्थान का प्रेरक तत्व आती. ''

प्रस्तुत लेखक को प्रामाणिक अभिमत से कि ''भविष्य मा पोवार समाज को जेव नेतृत्व सामाजिक चेतना या संकल्पना (Concept) अवगत कर लेये,वू समाजोत्थान साती सार्थक प्रयास करनो मा सफल होये. येको विपरीत जे कर्णधार सामाजिक चेतना येन् महत्वपूर्ण संकल्पना की उपेक्षा करेती वय समाज ला योग्य दिशा देनो मा व सही दिशा मा आगे बढ़न ला प्रेरित करनो मा असफल साबित होयेत. तात्पर्य, समाजोत्थान की दृष्टि लक सामाजिक चेतना या संकल्पना अत्यंत महत्वपूर्ण से. ''

4. उपसंहार(Conclusion)

सामाजिक चेतना की संकल्पना मा लक समाजोत्थान को सिद्धांत अना समुदाय को जैविक सिद्धांत की उत्पत्ति भयी से. पोवार समुदाय को सर्वांगीण उत्थान साती ये दूही सिद्धांत व येन् ग्रंथ मा निहित प्रत्येक तात्विक चर्चा महत्वपूर्ण से.

अध्याय–2

पोवार समाजोत्थान ला सिध्दांतों को नवो आयाम

1. श्रेष्ठ परिवर्तनकारी विचारों को सर्जन

कोनतोच प्रकार को साहित्यिक सर्जन साती उत्तम शैक्षणिक पार्श्वभूमी त् आवश्यक होसेच, लेकिन जब् एखाद व्यक्ति स्वयं परमार्थ भाव आत्मसात करके अना आपली दसों इंद्रियों की शक्तियों ला एकजुट करके भाषा, संस्कृति, समाज, धर्म, इतिहास, राजनीति आदि. मा लक कोनतोच एक अथवा अनेक विषयों को चिंतन पर आपलो ध्यान, दीर्घकाल वरि केंद्रित कर देसे, तब् काही समय पश्चात् वोको द्वारा श्रेष्ठ परिवर्तनकारी विचारों को सर्जन संभव होसे.

आपली लेखनी द्वारा श्रेष्ठ वैचारिक नवसर्जन की कामना करने वालो व्यक्ति न् आपली दसों इंद्रियों की शक्तियों ला एकजुट करके उपर्युक्त एक अथवा अनेक विषयों पर चिंतन करन की दीर्घकाल वरि कठीन साधना करनों पड़् से. या साधना जब् परिपक्व होसे तब् मस्तिष्क अना शारीरिक दृष्टि लक पीड़ादायक अवश्य होसे. लेकिन येन् पीड़ा की दुसरों ला अनुभूति करावनों असंभव से. जसो प्रसव पीड़ा ला शब्दों को माध्यम लक समझावनों असंभव से, तसोच ज्ञानसाधना की येन् पीड़ा ला भी शब्दों को माध्यम लक समझावनो असंभव से. लेकिन येन् पीड़ा की फलश्रुति आनंददायक रव्ह् से. या फलश्रुति साधक मा नवचैतन्य संचारित कर् से, जनमानस ला नवी दिशा देसे व समाज मा वैचारिक क्रांति कर देसे. या निष्पति समुदाय अना राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत ला समृद्ध करनों मा भी योगदान देसे. असा व्यक्ति कोनतोच समुदाय मा जब्–जब् उत्पन्न होसेती तब्–तब् वोन् समुदाय को वैचारिक क्षेत्र मा उत्कर्ष होसे.

2. सामाजिक सिद्धांतों की उत्पत्ति

भौतिक शास्त्रों को सिद्धांतों की उत्पत्ति भौतिक प्रयोगशाला मा संपन्न प्रयोगों मा लक होसे. सामाजिक शास्त्रों को सिद्धांतों की उत्पत्ति समाज मा करेव गयेव प्रयोगों मा लक होसे.

प्रस्तुत लेखक को मन मा पोवार समाज की भाषिक, सामाजिक, धार्मिक व वैचारिक स्थिति को संबंध मा भयंकर असंतोष व्याप्त होतो. परिणामस्वरुप लेखक न् विशिष्ट परिकल्पना (Hypothesis) को आधार पर 2018 पासून पोवार समाज मा भाषिक, सामाजिक व वैचारिक क्रांति आनन को प्रयास शुरु करीस. समस्त प्रयासों ला एक प्रयोग (An Experiment) को

दृष्टि लक देखेव गयेव. लेखक द्वारा शुरु करेव गयेव क्रांति ला उच्चशिक्षाविभूषित युवाशक्ति को व्यापक समर्थन प्राप्त भयेव. येको कारण क्रांति सफल भयी. अंततः जेन् विचारों को आधार पर पोवारी क्रांति सफल भयी, वोन् विचारों ला सिद्धांतों को स्वरुप देयेव गयेव. विचारों ला सिद्धांतों को स्वरुप देन को कारण पाच सिद्धांतों की उत्पत्ति भयी. ये सिध्दांत निम्नलिखित सेती–

- पोवारी भाषा संवर्धन को मौलिक सिध्दांत (Basic Theory of the Powari Language Promotion)
- स्वतंत्र अस्तित्ववादी सिध्दांत (Theory of Independent Existence)
- पोवार समुदाय को उत्थान को सिध्दांत (Theory of Upliftment of the Powar Community)
- समुदाय को जैविक सिध्दांत (Organic Theory of the Community)
- पोवार समुदाय को सामाजिक समझौता सिध्दांत (Social Contact Theory of the Powar Community)

उपर्युक्त पाचही सिद्धांत प्रत्यक्ष अनुभव– अध्ययन, निरीक्षण–परिक्षण व निष्कर्ष पर आधारित सेती.

3. समाज ला सिद्धांतों को नवो आयाम

उपर्युक्त पाच सिद्धांत समाज को उच्चशिक्षाविभूषित महानुभावों द्वारा उपयुक्त व महत्वपूर्ण मानेव गया सेत. उनको द्वारा येन् सिद्धांतों को आलोक मा समाज ला उत्तम दिशा देन का प्रयत्न निरंतर शुरु सेत. इन सिद्धांतों द्वारा सामाजिक संगठनों ला भी आपलो दायित्व अना समाजोत्थान की सही दिशादृष्टि प्राप्त भयी. भविष्य मा ये पांचही सिद्धांत समाज ला निःसंदेह पथप्रदर्शक साबित होयेत.

उपर्युक्त सिद्धांत न केवल पोवार समुदाय साती बल्कि सनातन हिन्दू धर्म को अनुयाई समस्त समुदायों व सामाजिक कार्यकर्ताओं ला समान रुप लक उपयोगी व पथप्रदर्शक साबित होयेत, असो पूर्ण विश्वास से.

●●●

अध्याय 3.

पोवार समुदाय को उत्थान को सिद्धांत

Theory of Upliftment of the Powar Community

(पोवारोत्थान की सप्तपदी)

1. पोवारोत्थान की सप्तपदी

पोवार समुदाय को उज्ज्वल भविष्य को निर्माण साती सामाजिक संगठनों की एक स्पष्ट नीति रव्हनों आवश्यक से. पोवार समुदाय को इतिहास व वोको स्वरुप को अध्ययन को आधार पर पोवारोत्थान की नीति मा निम्नलिखित प्रमुख सात पहलू समाविष्ट होनो आवश्यक से–

1–1. **भाषिक पहलू** (Linguistic Aspect):– मातृभाषा को प्रति प्रेम विकसित करनो, मातृभाषा को ऐतिहासिक नाव को संरक्षण, मातृभाषा को संवर्धन व उत्थान.

1–2. सामाजिक पहलू (Social Aspect):– सामाज को प्रति प्रेम व अस्मिता को विकास, व्यावसायिक मार्गदर्शन, न्याय–नीतिपूर्वक धनोपार्जन, आर्थिक समृद्धि.

1–3. सांस्कृतिक पहलू (Cultural Aspect) :– संस्कृति को संरक्षण व संवर्धन, सांस्कृतिक अस्मिता व स्वाभिमान को विकास. सजातीय विवाह ला प्रोत्साहन.

1–4. धार्मिक पहलू (Religious Aspect):– धार्मिक अस्मिता को विकास, सनातन हिन्दू धर्म को प्रति श्रद्धा अना निष्ठा को विकास.

1–5. ऐतिहासिक पहलू (Historical Aspect):– इतिहास की जानकारी, गौरवशाली इतिहास को प्रति स्वाभिमान को विकास, समाज की ऐतिहासिक पहचान को संरक्षण.

1–6. राष्ट्रीय पहलू (National Aspect):– परिसर प्रेम, अन्य सभी समुदायों को प्रति सामाजिक समरसता व राष्ट्र को प्रति प्रखर स्वाभिमान.

1–7. वैचारिक पहलू (Conceptual Aspect) :– नवी पीढ़ी को शैक्षणिक व वैचारिक उत्थान. भाषिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, स्थानीय, राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय विषयों की उत्तम समझ को विकास. वैज्ञानिक व तार्किक दृष्टिकोण को विकास. पुस्तक संस्कृति को विकास.

उपर्युक्त सात पहलुओं को एकात्म स्वरुप ला शास्त्रीय दृष्टिकोण लक पोवारोत्थान की सप्तपदी अथवा पोवारोत्थान को सिद्धांत (Theory of Upliftment of the Powar Community) असो संबोधित करनो अधिक उत्तम से.

पोवार समुदाय को सर्वांगीण उत्थान साती वोको संगठनों ला समाजोत्थान सिद्धांत को दार्शनिक अधिष्ठान (Philosophical Base) प्राप्त होनो नितांत आवश्यक से. येव सिद्धांत सनातन हिन्दू धर्म मा निहित सभी समुदायों साती समान रुप लक उपयोगी व महत्वपूर्ण से.

2. बुनियादी दायित्वों की चतुःसूत्री

पोवार समाज को उज्ज्वल भविष्य साती प्रत्येक व्यक्ति का चार प्रमुख दायित्व सेत. येला बुनियादी दायित्वों की चतुःसूत्री असो संबोधित करेव गयी से. या चतुःसूत्री निम्नलिखित से–

1. मातृभाषा को संरक्षण व संवर्धन.
2. संस्कृति को संरक्षण व संवर्धन.
3. समाज की परंपरागत पहचान को संरक्षण.
4. परंपरागत पहचान को प्रति जागरूक समाज को निर्माण साती प्रयत्नों की पराकाष्ठा.

विशेष ज्ञातव्य/जानकारी–

- पोवारी भाषा संवर्धनः मौलिक सिद्धांत व व्यवहार 2022, pp. 196. – लेखक ओ सी पटले (येन् ग्रंथ मा पोवारोत्थान की सप्तपदी उपलब्ध से.)
- पोवारों को इतिहास (1658–2022) 2023, pp. 115–119. – लेखक ओ. सी. पटले (येन् ग्रंथ मा समाजोत्थान सिद्धांत को विस्तृत विवेचन उपलब्ध से.)

अध्याय 4.
समुदाय को जैविक सिद्धांत[1]
(Organic Theory of the Community)

1. प्रास्ताविक

भारतवर्ष की अनेक विशेषताओं मा जाति संस्था या एक प्रमुख विशेषता से. साधारणतः प्रत्येक जाति की एक विशेष भाषा अना विशेष संस्कृति रव्ह् से. प्रत्येक जाति को लोगों मा आम्हीं सब परस्पर रक्त संबंधी आजन येव भाव विद्यमान रव्ह् से. जाति को भीतर अनेक कुल या गोत्र रव्ह् सेत. सभी कुल परस्पर एक दूजोसीन वैवाहिक संबंध प्रस्थापित कर् सेत. जातिप्रथा मा अन्य जाति लक वैवाहिक संबंध प्रस्थापित करनो वर्जित रव्ह् से.

जाति प्रथा मा अनेक गुणदोष सेत. लेकिन आपलो गुणों को कारण अज भी अस्तित्व मा से. प्रस्तुत लेख मा जाति ला समुदाय को नाव लक भी संबोधित करेव गयी से. प्रत्येक समुदाय अपलो विकास करन साती प्रयत्नशील रव्ह् से. लेकिन वर्तमान युग मा अनेक समुदाय अनजानों मा आपली मातृभाषा व संस्कृति की उपेक्षा कर रहया सेत. येको कारण वय आपलो समुदाय को सर्वांगीण विकास करनो मा विफल होसेती. प्रत्येक समुदाय आपलो सर्वांगीण विकास को उद्देश्य मा सफल होये पायजे, येन् उद्देश्य लक मानव शरीर को रुप मा समुदाय ला देखकर वोन् समुदाय को कोन–कोनतो पहलुओं को विकास ला प्राथमिकता देये पायजे, या बात समझावन को प्रयास करनो येव येन् अध्याय को प्रमुख उद्देश्य से. समुदाय ला मानव शरीर की उपमा देयके वोला वोको हित–अहित की बात् समझावन को येन् नवो दृष्टिकोण ला ''समुदाय को जैविक सिद्धांत'' को नाव लक संबोधित करेव गयी से.

2. समुदाय को जैविक सिद्धांत (Organic Theory of the Community):

जैविक सिद्धांत को अनुसार मातृभाषा या समुदाय को ह्दय अना आत्मा को समान से. तसीच समुदाय की संस्कृति या समुदाय की धमनियों अना रक्त संचार को समान से. समुदाय का सामाजिक संगठन ये समुदाय की बुद्धि अना डोरा को समान सेत. केवल संगठनच नहीं बल्कि समुदाय को प्रबुद्ध वर्ग (शिक्षक, साहित्यिक, पत्रकार, उन्नत किसान, उद्यमी, वकील, डॉक्टर, प्रशासनिक अधिकारी, इंजीनियर) की भूमिका भी बुद्धि व डोरा वानी रहें पाहिजे.

समुदाय का सर्वसामान्य व्यक्ति, संगठन द्वारा जे भी निर्णय लेया जासेती, उन निर्णयों को दिशा मा कार्य करन सहज प्रेरित होय जासेत. येको

कारण सर्वसामान्य समाज की भूमिका शरीर को हाथ–पाय येन् कर्मेंद्रियों को समान से.

3. सिद्धांत को परिप्रेक्ष्य मा सबको दायित्व

3–1. राष्ट्रीय संगठन को दायित्व

मातृभाषा अना संस्कृति पर समाज को अस्तित्व निर्भर से. मातृभाषा या संस्कृति की संवाहक से. अतः यदि मातृभाषा नष्ट भयी त् संस्कृति नष्ट होये. तसोच संस्कृति नष्ट होयेव लक समाज को स्वतंत्र अस्तित्व भी नष्ट होये. येको कारण मातृभाषा ला हृदय अथवा आत्मा की उपमा देयेव गयी से. अना संस्कृति ला धमनी व रक्त संचार की उपमा देयेव गयी से.

उपर्युक्त उपमाओं को परिप्रेक्ष्य मा समुदाय की मातृभाषा अना संस्कृति की सुरक्षा को ध्यान ठेवनो व आपलो विवेक बुद्धि को अनुसार येन् दूही तत्वों को संरक्षण–संवर्धन का निरंतर प्रयास करनो येव सामाजिक संगठनों को बुनियादी कार्य से. वस्तुतः प्रस्तुत जैविक सिद्धांत को पहले लेखक द्वारा संशोधित समाजोत्थान को सिद्धांत (सप्तपदी) मा उल्लेखित समाज को भाषिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, राष्ट्रीय व वैचारिक पहलू असो कूल सातही पहलुओं को विकास ला चालना देनो येव सामाजिक संगठनों को दायित्व से. येको कारण संगठनों ला डोरा व बुद्धि की उपमा देयेव गयी से.

3–2. प्रबुद्ध वर्ग को दायित्व

सामाजिक संगठन आपलो समस्त दायित्वों को निर्वाह सही ढंग लक कर रहया सेत अथवा नहीं ? येको पर ध्यान ठेयके येन् दायित्वों को निर्वाह साती उनला सचेत व प्रेरित करन को, अना सामाजिक संगठन यदि कोनतो भी प्रकार को समाजहित विरोधी कार्य करनों मा तत्पर रहेत त् असो अवस्था मा सामाजिक संगठनों को अनुचित कार्यो को खिलाफ जनजागृति करनो व उनको गलत कार्यों पर अंकुश लगावनो येव कार्य समाज को प्रबुद्ध वर्ग को से. येको कारण बुद्धिजीवी वर्ग ला भी समाज को डोरा अना बुद्धि की उपमा देयेव गयी से.

3–3. सामान्य जनों को दायित्व

सामान्य जनों को संपूर्ण समय निजी जीवन कार्यों मा खर्च होय जासे. उनको जवर संगठनों द्वारा अपनाई गई नीति की समीक्षा करन की न् तो फूरसत रव्ह् से अना न् योग्यता भी रव्ह् से. अतः सामाजिक संगठनों द्वारा संचालित समाजोत्थान को कार्य मा तन–मन लक सहयोग देनो येव सामान्य समुदाय को जैविक सिद्धांत

जनों को कार्य से. संगठनों की योजना सामान्य जनों को सहयोग लक पूरी होसे. येको कारण येन् वर्ग को समुदाय ला हाथ अना पाय की उपमा देयेव गयी से.

लेकिन जब् संगठन अना प्रबुद्ध वर्ग को बीच मतभेद की अवस्था रहें तब् असो स्थिति मा उचित–अनुचित पर विवेकबुद्धि लक विचार करके उचित दिशा मा आगे बढ़नो येव सामान्य जनों को दायित्व है.

4. सिद्धांत उत्पत्ति की पार्श्वभूमी

36 कुल पोवार समाज की राष्ट्रीय महासभा न् 1982 पासून मनगढ़ंत वांशिक एकता को आधार पर पोवार, भोयर अना परमार आदि. जातियों को एकीकरण करनो प्रारंभ करीस. येन् नीति को अंतर्गत वोन् पोवार समाज अना वोकी मातृभाषा को नाव बदलके पोवार समाज की ऐतिहासिक पहचान नष्ट करन को कार्य प्रारंभ करीस. पूर्ण समाज निद्रितावस्था मा होतो. लगभग 40 साल वरी महासभा द्वारा अपनाई गयी येन् नीति को दुष्परिणामों पर एक भी व्यक्ति न् बिल्कुल विचारच नहीं करीस. लेकिन 2018 पासून येन् बात पर प्रस्तुत लेखक को ध्यान गयेव. येको बाद ज्योति लक ज्योति जलत गयी अना आमरो समाज हितचिंतक प्रबुद्ध वर्ग न् पोवार समाज की मातृभाषा, संस्कृति व ऐतिहासिक पहचान बचावन को प्रमुख उद्देश्य लक 2020 मा अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार) महासंघ की स्थापना करीस. येन् प्रत्यक्ष सामाजिक अनुभव को आधार पर प्रस्तुत लेखक द्वारा शुरुवात मा समाजोत्थान को सिद्धांत (Theory of Upliftment of the Powar Community) व तत्पश्चात पोवार समुदाय को जैविक सिद्धांत (Organic Theory of Community) को सृजन भयेव. ये दूही सिद्धांत न केवल पोवार समाजोत्थान साती उपयुक्त सेत बल्कि भारतवर्ष को सभी समुदायों साती पथप्रदर्शक सेती.

5. निष्कर्ष व सुझाव

पोवार समुदाय को उत्थान को सिद्धांत येव सामाजिक संगठनों को उद्देश्यों सीन संबंधित से. लेकिन जैविक सिद्धांत येव उद्देश्यों को अंमलबजावनी (Implementation) सीन संबंधित से. जैविक सिद्धांत को संशोधन का प्रमुख निष्कर्ष व सुझाव निम्नलिखित सेत–

5–1. मातृभाषा व संस्कृति को संरक्षण

मातृभाषा या समाज मा एकता विकसित कर् से, तद्वतच वा संस्कृति संवाहन को कार्य कर् से. संस्कृति को द्वारा समाज संस्कारित होसे व समाज ला स्थायित्व प्राप्त होसे. अतः सामाजिक संगठनों द्वारा मातृभाषा व संस्कृति को संरक्षण–संवर्धन को कार्य ला प्राथमिकता देये पायजे.

5–2. सार्वजनिक चेतना (Public Conciousness)

समुदाय को जैविक सिद्धांत येव सामाजिक संगठनों को साथ–साथ समाज को प्रबुद्ध वर्ग ला भी महत्वपूर्ण स्थान देसे व समाज कल्याण साती सदैव जागरुक रव्हन की अपेक्षा कर् से. येन् सिद्धांत को अनुसार जनजागृति को माध्यम लक समाज को वैचारिक विकास (Conceptual Development) करनों अना वोला सही दिशा देनो येव प्रबुद्ध वर्ग को दायित्व से.

5–3 समाजिक क्रान्ति

सामाजिक संगठनों द्वारा यदि समाज हित को विरुद्ध कार्य होत रहे त् प्रबुद्ध वर्ग द्वारा जनमत जागृत करके सामाजिक संगठनों पर अंकुश लगाये पायजे. शांति पूर्ण ढंग लक समाज मा प्रखर जागरूकता अथवा सामाजिक क्रांति आने पायजे. अना युवाशक्ति को सहयोग लक व्यापक अभियान चलायके मातृभाषा अना संस्कृति को संरक्षण–संवर्धन को कार्य अविरत करें पायजे.

5–4. आत्मनिर्भर समाज को निर्माण

जब् कोनतो भी समुदाय आपलो संगठनों पर डोरा बंद करके विश्वास कर् से तब् संगठन निरंकुश बन जासेती. पदाधिकारियों मा अहंकार पराकाष्ठा पर पहुंच जासे अना वय समाज हित को विवेकपूर्वक विचार न करता स्वार्थ–प्रेरित होयके, मनमुताबिक निर्णय लेयकर समाजविघातक निर्णय समाज पर थोपनों शुरु कर देसेती. अतः समाज को वैचारिक उत्थान करके आपली मातृभाषा, संस्कृति, ऐतिहासिक पहचान आदि. को संरक्षण–संवर्धन साती समाज ला स्वयं आपलो पाय पर उभो करन को दायित्व समाज को प्रबुद्ध वर्ग द्वारा संपन्न होये पायजे.

सारांश, आधुनिक युग मा जेन् समुदाय को प्रबुद्ध वर्ग अना सर्वसामान्य व्यक्ति भी जागरूक अना सक्रिय रयके संगठित रुप लक आपली मातृभाषा व संस्कृति को संरक्षण–संवर्धन साती प्रयत्नशील रहेती, केवल असाच समुदाय आपलो अस्तित्व टिकावनों मा व उज्ज्वल भविष्य साकार करनों मा सफल होयेती.

---

1. न्यूज प्रभात–डिजिटल नेटवर्क, लेखक–ओ सी पटले, प्रकाशन तिथि रवि. 01/01/2023.

अध्याय 5.
पोवारी भाषा संवर्धनः मौलिक सिद्धांत
(Powari Language Promotion: Basic Principles)

1. भाषा संवर्धन सिद्धांतों की आवश्यकता

पोवारी भाषा ला लोकप्रियता, प्रतिष्ठा एवं गौरव को दिशा मा आगे बढ़ावनो येवच पोवारी भाषा संवर्धन को अभिप्राय से. नवयुग मा भाषा संवर्धन साती औपचारिक व संगठित प्रयासों की आवश्यकता से. येन् प्रयासों ला उपयुक्त दिशा देन साती पोवारी भाषा संवर्धन का सिद्धांत प्रस्थापित करनो आवश्यक होतो. भविष्य मा ये सिद्धांत भाषा संवर्धन साती मार्गदर्शक तत्व (Directive Principles) साबित होयेती.

2. भाषा संवर्धन का सिद्धांत (Basic Principles)[1]

पोवारी भाषा संवर्धन का प्रमुख सिद्धांत निम्नलिखित सेती–

2–1. सामाजिक एकता को सिद्धांत
2–2. संस्कृति रक्षण को सिद्धांत
2–3. भाषिक अस्मिता को सिद्धांत
2–4. स्वतंत्र पहचान को सिद्धांत
2–5. आत्मियता को सिद्धांत
2–6. भाषिक निष्ठा को सिद्धांत
2–7. परिवर्तनशीलता को सिद्धांत
2–8. व्याकरणमुक्त लेखन को सिद्धांत
2–9. प्रमाण भाषा निर्मिति को सिद्धांत
2–10. राष्ट्रीय लिपि को सिद्धांत
2–11. भाषिक माधुर्य को सिद्धांत
2–12. लिखित साहित्य को सिद्धांत
2–13. उदारीकरण को सिद्धांत
2–14. सशक्तिकरण को सिद्धांत

3. सिद्धांतों की उत्पत्ति व उपयोगिता

उपर्युक्त भाषा संवर्धन का सिद्धांत, प्रस्तुत लेखक को मौलिक संशोधन (Original Research) की फलश्रुति आय. प्रस्तुत लेखक द्वारा इ. स. 2018 मा पोवार समाज मा नवी भाषिक क्रांति आनन को प्रयास करेव गयेव व क्रांति साकार करेव गयी, वोन् अनुभव पर अधिष्ठित सेती.

यहां सिद्धांतों को केवल नामनिर्देशन करेव गयी से. कारण येन् सिद्धांतों को विस्तृत विवेचन प्रस्तुत लेखक द्वारा रचित **पोवारी भाषा संवर्धनः मौलिक सिद्धांत व व्यवहार (Powari Language Promotion: Principles and Practice)** येन् ग्रंथ मा पृष्ठ क्रमांक 52–58 पर उपलब्ध से. येव ग्रंथ E-BOOK को स्वरुप मा Google पर भी उपलब्ध से. मातृभाषा को उत्थान येव समाजोत्थान को एक अभिन्न अंग से, तसोच लेखक द्वारा संशोधित सभी सिद्धांतों की पाठकों ला परिपूर्ण कल्पना आये पाहिजे, येन् उद्देश्य लक भी यहां भाषा संवर्धन सिद्धांतों (Principles) को नामनिर्देशन करेव गयी से.

नवयुग मा भाषा संवर्धन साती साहित्य संम्मेलन,कवि सम्मेलन, साहित्यिक स्पर्धा आदि. गतिविधि आवश्यक सेती. नवी पीढ़ी अथवा युवाशक्ति ला येन् समस्त गतिविधियों मा उस्फूर्त सहभाग साती प्रेरित करन अना वोला भाषा संवर्धन की सही दिशा देनसाती ये सिद्धांत सदैव दीपस्तंभ (Light House) वानी पथ प्रदर्शित करन को कार्य करेती.

1. **विशेष ज्ञातव्य/जानकारी**

पोवारी भाषा संवर्धन : मौलिक सिद्धांत व व्यवहार, 2023, pp. 52–58. लेखक– इतिहासकार प्राचार्य ओ सी पटले. (येन् ग्रंथ मा पोवारी भाषा संवर्धन को सभी मौलिक सिध्दांतों को विस्तृत विवेचन उपलब्ध से.)

अध्याय 6.

पोवार समुदाय को सामाजिक समझौता सिद्धांत

(Social Contract Theory of the Powar Community)

1. छत्तीस कुल को सामाजिक समझौता

पोवार समुदाय का लोग 1700 को आसपास मालवा–राजस्थान लक स्थानांतरित भया अना वैनगंगा अंचल मा आयके स्थाई रूप लक बस गया. यहां आवन को सदियों पयले 36 कुल को एक सैनिक संघ होतो. येव सैनिक संघ कालांतर मा जाति व्यवस्था मा बदल गयेव. लगभग 1700 मा या संपूर्ण जाति मालवा लक वैनगंगा अंचल में स्थानांतरित भयी.

उपर्युक्त 36 कुल को सैनिक संघ मा सम्मिलित लोग प्रदीर्घ काल वरि एक विशेष प्रदेश मा एकसाथ रव्हन को कारण उनको द्वारा एक स्वतंत्र मायबोली, समान संस्कृति अना समुदाय को भीतर वैवाहिक संबंध प्रस्थापित करन की परंपरा विकसित भयी. येको कारण येव सैनिक संघ जाति व्यवस्था मा परिवर्तित भय गयेव. या जाति पोवार नाव लक विख्यात भयी. जाति को नाव को आधार पर येन् जाति की मातृभाषा ला ''पोवारी'' (Powari) नाव लक संबोधित करेव गयेव अना येव नाव प्रचलित भय गयेव.

समान प्रदेश में वास्तव्य, समान भाषा, समान संस्कृति को कारण ये लोग स्वयं आपलो समुदाय ला समान रक्त–संबंधी मानन लग्या. अतः येन् समुदाय मा अंतर्निहित 36 कुल को लोगों को बीच एक अलिखित समझौता (Unwritten Social Contract) भयेव कि ''स्वयं की मातृभाषा, संस्कृति व रक्त शुद्धता को संरक्षण साती वय 36 कुलीय पोवार केवल आपलो समुदाय को भीतर, आपलो कुल छोड़कर अन्य कुल को साथ वैवाहिक संबंध प्रस्थापित करेती. अन्य समुदाय को साथ वैवाहिक संबंध प्रस्थापित करनो वर्जित रहें. '' येन् समझौता ला 36 कुल को लोगों की मान्यता प्राप्त होती. येन् अलिखित समझौता को कारण 36 कुल को सैनिक समुदाय जाति व्यवस्था मा परिवर्तित भयेव.

2. सजातीय विवाह का लाभ

सजातीय विवाह या जातिप्रथा की एक प्रमुख विशेषता से. सजातीय विवाह का प्रमुख लाभ निम्नलिखित सेत–

2–1 संस्कृति को संरक्षण

सजातीय विवाह को कारण प्रत्येक जाति की स्वतंत्र भाषा व संस्कृति को संरक्षण–संवर्धन होसे. लेकिन विजातीय विवाह, जसो अजगर मोठो–मोठो

जीवों ला निगल जासे, तसोच विभिन्न समुदायों की मातृभाषा, संस्कृति, स्वतंत्र पहचान अना अस्तित्व ला निगल जायेत. विविधतापूर्ण अनमोल सांस्कृतिक विरासत साती अंतर्जातीय विवाह सर्वथा अनुचित सेत.

2–2. समायोजन मा सहजता

सजातीय विवाह को कारण कोनती भी कन्या समान संस्कृति वालो घर मा ब्याही जासे, येको कारण ससुराल मा समायोजन (Adjustment) करनो मा सहजता अनुभव कर् से.

2–3. परिवार में समरसता

सजातीय विवाह संपन्न होनो पर कन्या की सासू यदि वोको माय को माहेर को कुल की रहे त् कन्या आपली सासू ला मौसी कसे. यदि सासू वोको पिताजी को कुल की रहे त् वा वोला बुवाजी मानन लग् से. येन् प्रकार लक नवी बहू व ससुराल मा समरसता उत्पन्न होय जासे. या समरसता परिवार की सफलता साती मजबूत अधिष्ठान देय जासे. असी स्वाभाविक समरसता उत्पन्न करनो मा अंतर्जातीय विवाह विफल साबित होसेत.

2–4. दुय परिवारों को मिलन

सजातीय विवाह मा केवल वर–वधू को नहीं बल्कि दुय परिवारों अना दुही पक्ष को रिश्तेदारों को भी मिलन होसे. येको कारण असा विवाह सब ला स्वाभाविक खुशी प्रदान कर् सेती.

2–5. सामाजिक ढांचा की सुरक्षा

पाश्चात्य राष्ट्रों की सबसे मोठी समस्या या से कि वहां को सामाजिक ढांचा (Social Structure) संकट मा से. कारण कि वहां अनिर्बंध विवाह ला मान्यता से. येको कारण वहां ''लिव इन रिलेशनशिप'' को प्रचलन अस्तित्व मा आयेव, जेको कारण वहां परिवार संस्था अना संपूर्ण सामाजिक ढांचा विनाश को कगार पर पहुंच गयेव. भारत मा भी यदि अंतर्जातीय विवाह को प्रचलन सर्वमान्य भय गयेव त् यहां भी पाश्चात्य राष्ट्रों वानी स्थिति उत्पन्न होये. परिवार संस्था अना सामाजिक ढांचा बचावन साती केवल सजातीय विवाह येवच रामबाण उपाय से.

2–6. गुणवत्ता को जतन

संकरण को कारण वृक्ष–फल–फूल–पशु–पक्षी मा गुणवत्ता को पतन होसे. याच बात मानव समुदाय ला भी लागू होसे. संकरण लक मानव जाति मा भी गुणवत्ता, संस्कृति, संस्कार अना श्रेष्ठ परंपराओं को पतन होनो स्वाभाविक से सजातीय विवाह प्रथा रक्तशुद्धता अना गुणवत्ता को जतन को दृष्टि लक उत्तम से.

3. मेंढा अधिवेशन(1965) की समीक्षा

उपर्युक्त सामाजिक संविदा मा 36 कुल का सभी व्यक्ति सहभागी भया होता. लेकिन येन् प्राचीन समझौता ला दरकिनार करके 1965 को मेंढा अधिवेशन मा विभिन्न जातियों को एकीकरण को प्रस्ताव पारित करेव गयेव.

प्राचीन काल मा संपन्न समझौता 36 कुल को व्यक्तियों की परस्पर सम्मति लक भयेव होतो. प्रस्तुत लेखक को अभिप्राय से कि, ''येव समझौता पोवार समुदाय मा समाविष्ट 36 कुल को समस्त व्यक्तियों की मान्यता को बिना तोड़नो जायज नाहाय. अतः छत्तीस कुल मा लक काही कुलों को मुट्ठीभर मोठो–मोठो व्यक्तियों द्वारा प्राचीन समझौता ला भंग करनो येव पूर्णतः गलत से.''

मेंढा अधिवेशन मा छत्तीस कुल का समस्त व्यक्ति अथवा 36 कुल का प्रतिनिधि (Representatives) उपस्थित नोहता. येको कारण येन् अधिवेशन मा पारित विलिनीकरण को प्रस्ताव सरासर नाजायज से. पोवार समुदाय येन् समझौता ला मानन साती बाध्यकारी नाहाय.

अध्याय 7.

पोवार समाजोत्थान व समाजसेवा का मार्गदर्शक तत्व.

1. पोवार समाजोत्थान का मार्गदर्शक तत्व

(Guiding Principles of Upliftment for Powar community)

जेन् क्षत्रिय वंशियों मा 36 कुर सेती व जिनकी मातृभाषा पोवारी से,असो समुदाय पोवार कहलाव् से. पोवार समाज ला भविष्य को सफर मा पथप्रदर्शक साबित होयेती असा बारा प्रमुख तत्व निम्नलिखित सेती–

1. समाज की मातृभाषा, संस्कृति, इतिहास व स्वाभिमान को जतन व संवर्धन करनो येव सामाजिक संगठनों को प्रमुख दायित्व से.
2. सनातन हिन्दू धर्म येव पोवारी संस्कृति को उद्गमस्त्रोत व आत्मा आय. अतःपोवार समाज न् आपली भाषा, संस्कृति, इतिहास व स्वाभिमान को संरक्षण–संवर्धन करन को साथोसाथ सनातन हिन्दू धर्म को संरक्षण व संवर्धन ला भी प्राथमिकता देनो आवश्यक से.
3. पोवार(पंवार) नाव लक जे संगठन पंजीकृत सेती, केवल वयच संगठन 36 कुलवंशीय पोवारी का संगठन आती.
4. पवार नाव लक नोंदनीकृत संगठन पोवार समाज को हित साध्य नहीं कर सकत. असा संगठन 36 कुलीय पोवारों की भाषा, संस्कृति, इतिहास, स्वतंत्रता व स्वाभिमान नष्ट करन का चक्रव्यूह आती.
5. समाज को उत्थान– पतन को प्रथम महत्वपूर्ण तत्व स्वाभिमान येवच से. समाजोत्थान साती सर्वप्रथम सोयेव समाज व खोयेव स्वाभिमान ला जगावनो पड़् से. समाजोत्थान साती स्वाभिमान, आत्मविश्वास व समर्पण भाव आवश्यक सेती.
6. पोवार समाज न् आपलो हित संरक्षण साती हमेशा आपली मातृभाषा व समुदाय को सही नाव लिखें पाहिजे.
7. समाज ला जेन् कालखंड मा सही नेतृत्व मिल जासे, वोन् कालखंड मा समाज को उत्थान होसे. सही नेतृत्व को अभाव येव पोवार समाज को सामाजिक पतन को एक महत्वपूर्ण कारण से.
8. केवल सामाजिक संगठनों को बलपर समाजोत्थान संभव नाहाय. समाज को प्रबुद्ध वर्ग न् जागरुक रहके समाज को पथप्रदर्शित करत रव्हनो आवश्यक से. येव प्रबुद्ध वर्ग को निसर्गदत्त दायित्व से.

9. समाज मा जब्–जब् एखाद विचारक अथवा तत्वज्ञ को उदय होसे तब् समाज ला उर्जितावस्था प्राप्त होसे. समाज मा जब् गहण अंधकार छाय जासे तब् स्वाभाविकताः श्रेष्ठ विचारक को उदय होनो संभव होसे.
10. समाज मा जब् घनो अंधकार व्यापत जासे तब् समाज मा कोनी एक व्यक्ति अंधकार मिटावन साती निसर्गतः(Naturally) सिद्ध होत जासे. उचित समय आवनो पर वू समाज को पथप्रदर्शित कर जासे.
11. सामाजिक नेतृत्व करनेवालों को हाथ लक यदि वैचारिक चूक भयी त् वोको पर पश्चाताप करन की पारी आव् से. अतः समाज को पुढ़ारियों न् विवेकशील दूरदृष्टी ठेयके समाज संबंधित नीति निर्धारित करें पाहिजे.
12. समाजोत्थान को कार्य करों या समाज ला समाजोत्थान का श्रेष्ठ विचार देव, लोकप्रियता बढ़ेव पर हितशत्रु आपोआप तैयार होसेती. असो समय सत्य ना साहस लक नैया पार होसे.

2. समाज सेवा : मार्गदर्शक तत्व (Guiding Principles of Social Service)

1. पहले आपलो व्यक्तित्व विकसित करो, आपलो उदरनिर्वाह की समस्या हल कर लेव, बाद मा आपलो पूर्ण क्षमता लक समाज सेवा करो.
2. समाज सेवा लक आनंद की प्राप्ति होसे व व्यक्तित्व मा अधिक निखार आव् से.
3. व्यक्ति ला समाज द्वारा सुरक्षा प्राप्त होसे, व्यक्तित्व विकास का अवसर प्राप्त होसेती. अतः समाज सेवा करनो येव मानव को परम् पावन धर्म से.
4. समाज सेवा करन साती एखाद संगठन सीन जुड़ के अथवा स्वतंत्र रुप लक समाज सेवा करनो संभव से.
5. पहले आपली योग्यता व क्षमता ला पहचानो. तत्पश्चात आपली क्षमता को उच्चतम लाभ समाज ला मिल पाये असो स्वरुप की समाज सेवा को चयन करों व समर्पण भाव लक समाज सेवा करों.
6. समाज सेवा को बदला मा समाज सीन कौनसी भी अपेक्षा न् करता समाज सेवा करनो आवश्यक से.
7. समाज सेवा येव परोपकार को कार्य से. अतः भगवान श्रीकृष्ण को कर्मयोग को सिद्धांत को अनुसार भविष्य मा तुम्हारी समाज सेवा को तुम्हाला व तुमरो परिवार ला चांगलों फल प्राप्त होनो सुनिश्चित से.
8. शारीरिक अथवा मानसिक ये सभी प्रकार की समाज सेवा, समान रुप लक महत्वपूर्ण सेत. आपली समाज सेवा ला श्रेष्ठ व दूसरों की समाज

सेवा ला हीन अथवा निरर्थक माननों येव अज्ञान अथवा अहंकार को लक्षण से.

9. व्यक्ति न् आपली समाज सेवा की दूसरों न् तारीफ करें पाहिजे, असी अपेक्षा मन मा न् ठेवता समाज सेवा करें पाहिजे. तुम्हारो कार्य जेतरो निःस्वार्थ व व्यापक से वोको अनुरुप एक ना एक दिन समाज को आशीर्वाद तुम्हाला अवश्य प्राप्त होये.
10. चाहें केतरी भी उत्तम समाज सेवा कर लो, आलोचना भी सहनो पड़् से. आलोचना लक आत्मपरीक्षण को व आपलो कार्य ला अधिक मजबूत करन को सुअवसर प्राप्त होसे.
11. समाज सेवा को दिखावा करनेवाला व्यक्ति सच्ची समाजसेवा करनेवालों की आलोचना अवश्य कर् सेती. लेकिन विद्वत्ता व समाज सेवा को ढोंग करनेवाला,सच्चो समाजसेवक को कार्य को सम्मुख लंबी अवधि वरि टिकाव लेनो मा असमर्थ साबित होसेती.

12 आलोचना की फूकट चिंता न् करता नदी को प्रवाह को समान समाज सेवा मा तुम्हीं अविरत आगे प्रस्थान करत जानों पर नदी को कचरा वानी आलोचक भी आपोआप किनारों पर फेकेव जासेती.

●●●

अध्याय 8.

36 कुलीय पोवार समुदाय की व्याख्या

(तीन सौ साल को इतिहास पर आधारित)

1. समुदाय की महत्वपूर्ण विशेषता

वैनगंगा तटीय क्षत्रिय पोवार समुदाय की अन्य क्षत्रिय समुदायों लक अलग असी काही विभेदक विशेषताएं सेती. पोवार समुदाय लगभग 300 साल पहले इ. स. 1700 को आसपास मालवा–राजस्थान लक स्थानांतरित भयेव व वैनगंगा अंचल मा स्थायी रुप लक बस गयेव. येन् तीन सौ साल मा पोवार समाज की जे विशेषताएं देखी गयी, वोन् विशेषताओं को आधार पर येन् समुदाय की एक विशेष पहचान वैनगंगा क्षेत्र मा प्रस्थापित भयी. येन् विशेषताओं को आधार पर पोवार समुदाय येव क्षत्रिय कहलावने वालो अथवा अन्य कोनतोही समुदाय दुन भिन्न से. अतः पोवार समुदाय की येन् सामाजिक–सांस्कृतिक विशेषताओं ला विभेदक विशेषताएं (Descriminatry Characteristics). कव्हनो संयुक्तिक से.

2. विभेदकारी विशेषता नष्ट करन का प्रयास

पोवार समाज को काही तथाकथित पुढ़ारियों द्वारा 1965 पासून वांशिक एकता की मनगढ़ंत कल्पना को आधारपर अनेक जातियों को विलिनीकरण को अफलातून प्रकार शुरु से. येव प्रयास पोवार समुदाय साती आत्मघाती से. कारण येको लक पोवार समुदाय की मातृभाषा, संस्कृति व स्वतंत्र अस्तित्व समाप्त होये. लेकिन विलिनीकरण को समर्थक व्यक्तियों द्वारा पोवार समुदाय को स्वतंत्र अस्तित्व नष्ट करन साती समुदाय की विभेदक विशेषताओं (Descriminatry Characteristics) ला नष्ट करन का प्रयास शुरु सेती. इनको सांस्कृतिक आक्रमण लक वैनगंगा तटीय 36कुलवालों पोवार समुदाय की परंपरागत पहचान ला सुरक्षित ठेवन साती वोकी मुख्य विशेषताओं को आधार पर व्याख्या करनो आवश्यक से.

3. विभेदक विशेषता व व्याख्या

अतः विगत 300 साल को इतिहास को आधार पर पोवार समुदाय की प्रमुख परंपरागत–विभेदक विशेषताएं निम्नलिखित सेती–'

1. जेव समुदाय क्षत्रिय कहलाव् से अना 1700 को आसपास मालवा, राजस्थान, धार लक आयके वैनगंगा अंचल मा स्थायी रुप बस गयेव, वू समाज पोवार समुदाय को नाव लक जानेव जासे. '

2. जेन् समुदाय की मातृभाषा पोवारी से, वोन् समुदाय ला पोवार कसेती.
3. जेन् समुदाय की सनातन हिन्दू धर्म पर अधिष्ठित असी श्रेष्ठ संस्कृति से.
4. जे सोलह संस्कारों मा लक काही प्रमुख संस्कारों को अज भी पालन कर् सेती.
5. जेन् समुदाय का प्रथम आराध्य प्रभु श्रीराम अना हनुमानजी सेती. सर्वप्रथम गणेश जी की पूजा लक धार्मिक कार्य संपन्न होसेती. जेव समुदाय महावीर (हनुमानजी) को पूजक से. तुलसी–वृंदावन, महादेव की पिंडी अना महावीर ला पानी चढ़ाव् से.
6. जेव समुदाय गांव की मातामाय ला अनन्य भाव लक मान् से. दुर्गा देवी को उपासक से. जेन् समुदाय को भावभक्ति मा गांव की मातामाय, भंगाराम अना शिवलाबाई ला महत्वपूर्ण स्थान से.
7. जेन् समुदाय मा चवरी पूजा ला अनन्य साधारण महत्व से.
8. जेन् समुदाय मा महादेव, बाघदेव व पटील देव का बोहला प्रस्थापित करन की प्रथा से.
9. जेन् समुदाय मा 36कुर सेती. जेव समुदाय स्वयं ला स्वाभिमान लक 36 कुरया पोवार असो संबोधित कर् से.
10. जेव समुदाय आपलो अंतर्गत 36कुल मा वैवाहिक संबंध प्रस्थापित कर् से. असो समुदाय ला पोवार समुदाय को नाव लक पहचान प्राप्त से.

उपर्युक्त प्रमुख दस विशेषताएं पोवार समुदाय मा पाई जासेत. इन दस विशेषताओं लक युक्त समुदाय ला पोवार समुदाय को नाव लक पहचान प्राप्त से.

4. उपसंहार

पोवार समुदाय ला आपलो अस्तित्व बचावनसाती आपली विभेदक विशेषताओं अथवा मातृभाषा व संस्कृति को जतन करनो आवश्यक से. (1965 पासून जेन् नवीन तत्वों अथवा संकल्पनाओं को आधार लेयके पोवार समुदाय को स्वतंत्र अस्तित्व नष्ट करन का प्रयास होय रहया सेती, वोन् संकल्पनाओं को उपर्युक्त विशेषताओं मा उल्लेख नाहाय.)

विगत तीन सौ वर्षों को उत्तम सांस्कृतिक वारसा सही सलामत नवीन पीढ़ी ला बहाल करनो येव वर्तमान पीढ़ी को आद्य कर्तव्य से.

●●●

अध्याय 9

पोवार समाजोत्थान : वर्तमान दशा ना दिशा

1. महासंघ को पुनर्जीवन

राष्ट्र को उद्धार साती समय–समय युगांतरकारी महापुरुष अवतरित होसेती. येला एक नैसर्गिक नियम को दृष्टि लक देखनो पर प्रत्येक समुदाय मा भी वोको उद्धार साती काही व्यक्ति समोर आव् सेती, येन् बात पर आमरो दृढ़ विश्वास प्रस्थापित होय जासे.

36 कुल पोवार समुदाय भी दिशाहीन होय रहेव होतो. समुदाय की पहचान, मातृभाषा, संस्कृति अना इतिहास ला बदलन को व नष्ट करन को प्रयास शुरु होतो. पोवार समाज को उत्कर्ष साती 1905 मा 36 कुल क्षत्रिय पोवार समुदाय की एक राष्ट्रीय प्रतिनिधिक संस्था की स्थापना करेव गयी होती. परंतु नागपुर को काही व्यक्तियों की गलत सोच को कारण 1982 पासून येन् संस्था पर संकट का कारा बादल मंडरान लग्या अना 2006 मा येन् संस्था मा दूसरों जाति को लोगों ला प्रवेश देईन. येको कारण पोवार समाज को अखिल भारतीय संगठन को लोप भय गयेव.

उपरोक्त परिस्थिति मा पोवार समुदाय की ऐतिहासिक पहचान अना सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षण साती, जिनको मा पोवार जाति को प्रति अटूट प्रेम होतो व पोवार जाति को अस्तित्व नष्ट नहीं होये पाहिजे असो जेन् व्यक्तियों ला लगत होतो, असा व्यक्ति कंबर कसके व खांब ठोक के सामने आवनों स्वाभाविक होतो. अतः विचारों की ज्योति लक ज्योति जलत गयी व अंततः भारत भर मा बिखऱ्या पोवार समुदाय का अनेक प्रबुद्ध जन 2020 मा अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार) महासंघ को रुप मा एक सूत्र मा बंध गया. अना आपली ऐतिहासिक पहचान (समाज व मातृभाषा को ऐतिहासिक नाव) व सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षण–संवर्धन मा पूरो शक्ति को साथ जुट गया.

समस्त पार्श्वभूमी को आधार पर संकेत मिल रही से कि महासंघ को माध्यम लक आमरों समुदाय ला वर्तमान सामाजिक संकट लक छुटकारा प्राप्त होये. अना महासंघ को माध्यम लकच आमरों समाज को उद्धार व पोवारोत्थान होये. यदि असो नहीं रव्हतो त् विपुल क्षेत्र मा इतन–उतन बिखरया, विविध प्रकार का क्षमता संपन्न अनगिनत व्यक्ति निःस्वार्थ भाव लक समाजोत्थान को पावन उद्देश्य लक महासंघ को रुप मा संगठित होयके सही दिशा मा कसा कार्य प्रवण होय जाता ? ये सब व्यक्ति आपलो पोवार समाज ला बचावन को

उद्देश्य लक आवश्यक जनजागृति करन दिन–रात कसा जुट जाता ? येव काही जादू को चमत्कार नोहोय !

प्रस्तुत लेखक की अंतर्रात्मा कसे कि विधि को विधान अथवा अदृश्य सामाजिक नियमों को अनुसारच वर्तमान मा सबकुछ घटित होय रही से. अतः प्रत्येक सुशिक्षित व्यक्ति न् नैसर्गिक नियमों ला समझन की कोशिश करें पाहिजे अना आम्हीं सब जन अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार) महासंघ द्वारा प्रारंभ करेव गयेव ''पोवारोत्थान को महायज्ञ'' सीन आपलो ला जोड़ के यहां आपआपली आहुति पूर्ण निष्ठापूर्वक देन को कार्य संपन्न करें पाहिजे. आमला आपलो 36 कुलीय पोवार समाज ला बचावन को पुनीत कार्य करके येन् नश्वर जीवन ला सार्थक करनों से. येव एक सुअवसर आमरो वर्तमान पीढ़ी ला मिली से. या आमरों सब साती परम् सौभाग्य की बात से.

2. ध्येयपथ व आवश्यक सावधानी

पोवार समाज को ऐतिहासिक चरित्र ला ध्यान मा ठेयके आमला भविष्य कर प्रस्थान करनों से. समाज कल्याण को येवच श्रेयस्कर पथ से अना येवच अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार) महासंघ को उद्देश्य से. येको मा पोवार समाज को हित व शाश्वत कल्याण निहित से. येन् लक्ष्य प्राप्ति की राह मा आवने वालों संभावित भटकावों पर एक दृष्टिक्षेप निम्नलिखित से.

भारतवर्ष ला 1947 मा स्वतंत्रता प्राप्त भयी. लोकशाही शासन प्रणाली अपनावन को कारण अनेक नवीन राजनीतिक विचारधारा अस्तित्व मा आयी. काही नवीन विचारधारा नवो मुखौटा धारण करके पोवार समाज ला आपली सत्ता प्राप्ति को साधन को रुप मा वापर करन प्रयत्नशील सेती. अतः ये विचारधारा सनातन हिन्दू धर्म पर मनगढ़ंत आरोप लगावत पोवार समाज ला वोको ऐतिहासिक चरित्र लक भटकावन साती निरंतर प्रयत्नशील सेत. पोवार समाज का काही व्यक्ति आपलो स्वयं ला राजकारण मा टिकायके ठेवनसाती वोन् विचारधाराओं की कठपुतली बनकर आपलो समाज ला वोको ऐतिहासिक चरित्र लक भटकावन को कार्य कर रहया सेती. महासंघ को निष्ठावान व्यक्तियों न् असो व्यक्तियों सीन प्रत्यक्ष न् उलझता, आपलो समुदाय ला वोको ऐतिहासिक चरित्र को बोध करावत सही दिशा मा अग्रसर करावन को कार्य निरंतर करत रहें पाहिजे. येन् पद्धति लक अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार) महासंघ,आपलो लक्ष्य प्राप्ति मा सफल होये.

सामाजिक संगठन को नेतृत्व मा समाज संगठित होसे. लेकिन समाज को प्रत्येक लहान–मोठो राजनीतिक नेतृत्व समाज की संगठित शक्ति ला आपलो राजनीतिक नेतृत्व ला चमकावन को उद्देश्य लक प्रयुक्त करन को

हर वक्त प्रयास करत रव्ह् से. परिणामस्वरुप पोवार समाज आपलो ऐतिहासिक चरित्र लक दूर हटन की अना भटकन की संभावना हर पल बनीं रव्ह् से. अतः महासंघ न् बहुत सावधानीपूर्वक आपलो लक्ष्य प्राप्ति की दिशा मा बढ़नो आवश्यक से.

3. पोवार समाज : एक विकसनशील समाज

वैनगंगा तटीय पोवार येव 1700 को आसपास मालवा लक आयके वैनगंगा अंचल मा स्थायी रुप लक बस गई से. पोवार समाज की स्वतंत्र मातृभाषा, श्रेष्ठ संस्कृति, परंपरा अना ऐतिहासिक पहचान से. येव समाज शैक्षणिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि. सभी क्षेत्र मा ऊंचों शिखर संपादित करनसाती प्रयत्नशील असो विकसनशील समाज से. पोवार समाज 36 कुलीय पोवार समाज को नाव लक सुपरिचित से. येन् समाज को युवा प्रबुद्ध वर्ग अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार) महासंघ नामक संगठन को माध्यम लक समाजोत्थान साती सक्रिय से. स्वयं की सांस्कृतिक विरासत व गौरवशाली पहचान को संरक्षण साती सक्रिय युवाशक्ति को कारण समाज मा सर्वत्र उत्साह को वातावरण संचारित से व समाज को भविष्य उज्ज्वल से.

4. पोवार समाज मा कार्यरत संगठन

पोवार समाज मा राष्ट्रीय स्तर का दुय संगठन कार्यरत सेती. प्रथम, अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार) महासंघ, अना दूसरों, राष्ट्रीय क्षत्रिय पवार महासभा. दूही का केंद्रीय कार्यालय नागपुर मा सेती. स्वाभाविकतः काही पोवार बंधु–भगिनियों को मन मा येव प्रश्न उपस्थित होसे कि पोवार समाज मा राष्ट्रीय स्तर को दुय संगठनों की का जरुरत से ? काही व्यक्तियों द्वारा समाज मा येव भ्रम जानबूझकर फैलायेव जाय रही से कि समाज मा येन् दुय संगठनों की आवश्यकता नाहाय. येको कारण येन् भ्रम को निवारण करनो येव येन् अध्याय को एक प्रमुख उद्देश्य से.

5. महासंघ अना महासभा मा अंतर

महासंघ अना महासभा को बीच प्रमुख भेद निम्नलिखित सेती–

5–1. महासंघ येव राष्ट्रीय स्तर को संगठन केवल 36 कुलीय पोवार समाज की मातृभाषा पोवारी, पोवारी संस्कृति व पोवार समाज की ऐतिहासिक (परंपरागत) पहचान को संरक्षण–संवर्धन को कार्य कर् से. महासंघ येव पोवार समाज को उत्कर्ष ला सर्वोपरि स्थान देयके कार्य करने वालों राष्ट्रीय संगठन से. येन् संगठन मा मोठो संख्या मा शिक्षक, प्रध्यापक, साहित्यिक, पत्रकार, उद्यमी, उन्नत किसान, इंजीनियर, प्रशासनिक अधिकारी, वकील, डॉक्टर असो विविध क्षेत्र मा कार्यरत उच्चशिक्षाविभूषित युवाशक्ति को विपुल सहभाग से.

येको विपरीत महासभा येव पोवार, भोयर, परमार असी तीन भिन्न जातियों को संगठन से. तिन्हीं जातियों ला एक मा विलिन करनो येव महासभा को प्रमुख उद्देश्य से.

5–2. महासंघ न् आपलो नामकरण मा समाज को ऐतिहासिक / परंपरागत पोवार (Powar) नाव ला प्राधान्य देईसेस. येको विपरीत महासभा न् आपलों नामकरण को समय पोवार (Powar) नाव ला कचरा की पेटी मा फेंक के अन्य समाज को पवार (Pawar) नाव ला महिमा मंडित करीसेस. येन् नावों को आधार पर दूही संगठनों को चित्र ना चरित्र स्पष्ट होय जासे.

5–3. महासंघ की दृढ़ मान्यता से कि ''पोवार समाज की सांस्कृतिक विरासत ला बचावनो येवच संगठन को प्राथमिक दायित्व से. कारण पूर्वजों न् हजारों वर्षों की तपस्या लक अनमोल सांस्कृतिक विरासत अर्जित करीसेन, अनेक आक्रमणों को समय असंख्य बलिदानों को बावजूद भी आपलो प्राण हथेली पर लेयके वोला बचाई सेन अना आमरी वर्तमान पीढ़ी को हाथ मा सुपूर्द करीसेन. अतः एखाद संगठन द्वारा आपलो मन को आवेग को अनुसार समाज की अनमोल सांस्कृतिक विरासत ला खेल को पत्ता वानी बिखेर देनो येव केवल अविवेकपूर्ण कार्य से. ''

येको विपरीत महासभा को दृष्टि लक पोवार समुदाय की सांस्कृतिक धरोहर को अपेक्षा विविध जातियों को एकीकरण महत्वपूर्ण से.

5–4. महासंघ येव पोवार समाज को सुप्त सामर्थ्य ला जागृत करके,संगठित करके, वोको स्वयं को बलपर वोको उत्थान करनसाती कार्यरत से. येको विपरीत महासभा या अन्य जातियों की बैसाखी को सहारा लेयके पोवार समाज को उज्ज्वल भविष्य साकार करन को रंगीन सपना देख रही से. महासभा ला 36 कुलीय पोवार समाज को निज सामर्थ्य पर विश्वास नाहाय.

6. निष्कर्ष व उपयुक्त सुझाव

उपर्युक्त विवेचन को आधार पर दूही संगठनों मा विद्यमान सैद्धांतिक भेद (Theoretical Difference) स्पष्ट रुप लक उजागर होसे. येन् सैद्धांतिक भेद को आधार पर दूही को जमिनी स्तर को कार्यों मा विद्यमान भेद (Practical Difference)की सबला सहज कल्पना आय जासे. या बात स्पष्ट होसे कि महासंघ अना महासभा ये दूही संगठन परस्पर पूरक नाहाती. मूलतः दूही अलग–अलग प्रकार की विचारधारा (Ideology) पर आधारित भिन्न प्रकार का संगठन (Basically Different Type Of Organizations) सेत.

पोवार समाज येव एक स्वाभिमानी समाज से. येला गौरवशाली इतिहास को अधिष्ठान से. स्वयं की क्षमताओं पर आत्मविश्वास से. येको

कारण समाज ला आपली मातृभाषा, संस्कृति, गौरवशाली ऐतिहासिक पहचान अना आपलो स्वतंत्र अस्तित्व अत्यंत प्रिय से. अतः अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार) महासंघ येव पोवार समाज की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षण व स्वतंत्र अस्तित्व कायम ठेवनसाती, सजातीय विवाह प्रथा को सशक्तिकरण साती व समाज को शाश्वत हित साध्य करनसाती कटिबद्ध से व अविरत कार्य कर रहीं से.

तात्पर्य, दूही संगठन का उद्देश्य परस्पर विपरीत सेती. महासंघ येव पोवार समाज को स्वतंत्र अस्तित्व कायम ठेवनसाती कार्यरत से. येको विपरीत, महासभा या पोवार समाज को स्वतंत्र अस्तित्व विलुप्त करनसाती क्रियाशील से. प्रत्येक व्यक्ति ला कौनसो संगठन सीन जुड़नो से ? अना कौनसो संगठन सीन जुड़नो नाहाय ? पोवार समाज को अस्तित्व बचावनो से ? अथवा नष्ट करनो से ? येको निर्धारण करन की बुद्धि से अना सबला स्वयं निर्णय लेन की व्यक्तिगत स्वतंत्रता प्राप्त से. समाज मा अनावश्यक भ्रम फैलावनो सर्वथा गलत से. पोवार समाज येव धर्मनिष्ठ, स्वाभिमानी समाज से. येन् समाज को बालक पासून बुजुर्ग वरि प्रत्येक स्वाभिमानी व्यक्ति सत्य को साथ पूर्ण सामर्थ्य लक उभो से अना आपलो सांस्कृतिक विरासत व सामाजिक ढांचा ला बचावन साती सदैव तत्पर से.

अध्याय 10.

पोवार समुदाय अखंड सांस्कृतिक प्रवाह : अवरोध व संघर्ष

1. 36 कुलीय पोवार समुदाय

36कुलीय पोवार समुदाय येव केवल एक जाति–समुदाय नहीं बल्कि येव एक अखंड सांस्कृतिक प्रवाह आय. येव शेकड़ो साल पासून आपली मातृभाषा, संस्कृति अना ऐतिहासिक पहचान को जतन करत एकता को बलपर समुदाय को उत्कर्ष करन को उद्देश्य लक प्रयत्नशील से. येव समुदाय स्वयं ला भारतवर्ष को अभिन्न अंग मानके राष्ट्रीय एकात्मता ला सर्वोपरि मान् से

2. क्षत्रिय वंश को सामान्य परिचय

पोवार समुदाय क्षत्रिय कहलाव् से. क्षत्रिय वंश की कूल 36 शाखा निम्नलिखित सेती–

सूर्यवंशीय क्षत्रिय– 10 शाखा
चंद्रवंशीय क्षत्रिय– 10 शाखा
ऋषि वंशीय क्षत्रिय–12 शाखा
अग्निवंशीय क्षत्रिय– 04 शाखा

क्षत्रियों की कूल 36 शाखा

3. विलीनीकरण को प्रयास

पोवार समुदाय येव उपर्युक्त चार प्रकार को क्षत्रियों मा लक अग्निवंशीय क्षत्रिय कहलाव् से. अग्निवंशीय क्षत्रियों की अनेक जाति सेती. सब जातियों की अलग–अलग मातृभाषा, संस्कृति व ऐतिहासिक पहचान से.

पोवार समुदाय मा राष्ट्रीय क्षत्रिय पवार महासभा नामक एक संस्था, स्वयं ला अग्निवंशीय संबोधित करनेवाली (वास्तविक अथवा स्वयंघोषित) पोवार, परमार, भोयर आदि. जातियों ला परस्पर एक दूसरों मा विलीन करन को प्रयास 1965 पासून कर रहीं से. 1982 पासून या संस्था पोवार (Powar) समाज अना वोकी मातृभाषा पोवारी (Powari) को नाव मिटावन को कार्य कर रही से. या संस्था पोवार समुदाय पर पवार (Pawar) अना पवारी (Pawari) ये गलत नाव थोपन को प्रयास कर रही से. येन् संगठन को प्रधान कार्यालय नागपुर मा से. संस्था ला विलिनीकरण को कार्य मा केवल उपरी स्तर पर नगण्य सफलता मिली से. पोवार समुदाय को जनमानस की येन् स्वरुप को विलिनीकरण मा अजिबात रुचि नाहाय.

4. विलिनीकरण को पक्ष मा तर्क

जो लोग विलिनीकरण का पक्षधर सेती, वय आपलो पक्ष मा दुय तर्क देसेती. प्रथम, लोकतंत्र मा संख्याबल ला महत्व होसे. समस्त अग्निवंशीयों को एक मा विलीनीकरण होनो पर, उनको संख्याबल बढ़े अना वय दबाव तंत्र को उपयोग करके शासन द्वारा काही निर्णय आपलो समुदाय को हित मा करवाय पायेत. द्वितीय, पोवार समुदाय ला विवाह संबंध प्रस्थापित करन साती व्यापक क्षेत्र उपलब्ध होये.

विलिनीकरण का पक्षधर लोग, विपक्ष पर जातिवादी होन को आरोप लगाव् सेत अना उनला जातिवाद लक वोरया उठन को आवाहन कर् सेती.

5. विलिनीकरण को विपक्ष मा तर्क

पोवार, परमार, भोयर ये सब अलग–अलग जाति आती. ये जाति शेकड़ो साल पासून स्वतंत्र जातियों को रुप मा जीवनयापन कर रहीं सेत. अतः इन सबकी अलग–अलग मातृभाषा, संस्कृति अना स्वतंत्र अस्तित्व से. पोवार समुदाय का जे लोग विलिनीकरण को विरोध कर रहया सेत उनका तर्क निम्नलिखित सेत–

प्रथम, विलिनीकरण को कारण पोवार समुदाय की स्वतंत्र मातृभाषा, संस्कृति, ऐतिहासिक पहचान अना स्वतंत्र अस्तित्व नष्ट होये. द्वितीय, पोवार समुदाय का 99 प्रतिशत लोग आपली जाति को भीतर विवाह कर रहया सेत अना वोको मा वय संतुष्ट सेत. केवल शहर मा जायके स्थायी रुप लक वहां बस गया सेत असा काही मोठा लोग आपली संतति को अंतर्जातीय विवाह संपन्न कर लेई सेन, वय आपलो कार्य ला जायज साबित करन को उद्देश्य लक विलिनीकरण को निर्णय पूरो समाज पर थोपनों चाव्ह् सेत. तृतीय, विलिनीकरण को कारण अंतर्जातीय विवाह ला प्रोत्साहन मिलें. परिणामस्वरुप पोवार समुदाय को अस्तित्व नष्ट होये.

6. पोवार समुदाय : एक अखंड प्रवाह

36 कुलीय पोवार समुदाय की विशेष मातृभाषा, संस्कृति अना ऐतिहासिक पहचान से. अतः पोवार समुदाय ला एक विशेष सांस्कृतिक प्रवाह संबोधित करनो सर्वथा उचित से. येव समुदाय आपलो अखंड प्रवाह ला खंडित न करता पूर्ववत कायम ठेवनों चाव्ह् से.

36 कुलीय पोवार समुदाय आपली सांस्कृतिक धरोहर को व आपलो स्वतंत्र अस्तित्व को संरक्षण–संवर्धन करनो चाव्ह् से. अतः येव समुदाय अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार) महासंघ को नेतृत्व मा संगठित होयके आपली

मातृभाषा, संस्कृति व ऐतिहासिक पहचान को संरक्षण–संवर्धन साती प्रयत्नशील से, अना विलीनीकरण को प्रखर विरोध कर रहीं से.

7. अध्ययन व निष्कर्ष

पोवार समुदाय मा एक बाजू मा आपली सांस्कृतिक विरासत ला बचावन का प्रयास शुरु सेत अना दूसरी बाजू मा येन् समुदाय ला जड़मूल सहित नष्ट करन का प्रयास भी शुरु सेत. येन् दूही प्रकार को प्रयासों को सूक्ष्म अध्ययन करन को पश्चात जो निष्कर्ष प्राप्त भयेव, वू निम्नलिखित से –

7–1. महासभा को समर्थक एक भी व्यक्ति मा विलिनीकरण की नीति को कारण पोवार समुदाय की स्वतंत्र मातृभाषा, संस्कृति, ऐतिहासिक पहचान अना स्वतंत्र अस्तित्व नष्ट होये या बात मंचों पर लक उद्घोषित करन को नैतिक सामर्थ्य नाहाय. अतः ये व्यक्ति समुदाय ला भ्रमित करके आपली नीति अमल मा आन रहया सेत.

7–2. विलिनीकरण का समर्थक व्यक्ति कभी–कभी डिजिटल माध्यमों मा महासंघ को समर्थक व्यक्तियों ला जातिवादी कहकर उन ला भ्रमित करन को अना उनको मनोबल तोड़न को प्रयास करता देखेव जासेती.

7–3. वांशिक एकता का समर्थक यदि आपलो समुदाय को शाश्वत हितों को रक्षण साती प्रयत्नशील पोवार समुदाय को महानुभावों ला जातिवादी संबोधित करत रहेत त् असी परिस्थिति मा वांशिक एकता की बात करनेवाला महानुभाव येच अधिक प्रखर जातिवादी साबित होसेती.

7–4. विलिनीकरण का पक्षधर व्यक्ति राजनीतिक दृष्टि लक समाज को उपयोग करनो चाव्ह् सेत. उनको जवर सामाजिक अना सांस्कृतिक दृष्टि को अभाव से. येको कारण वय पोवार समुदाय को विशेष सांस्कृतिक प्रवाह ला अन्य प्रवाहों मा विलीन करके वोको स्वतंत्र अस्तित्व समाप्त करनो चाव्ह् सेत.

7–5. अंग्रेजों न् भारत की कमजोरी को फायदा उठायके भारत पर पहले आपलो वर्चस्व प्रस्थापित करीन. बादमा भारतवर्ष को सनातन हिन्दू धर्म अना यहां की संस्कृति ला नष्ट करन को प्रयास करीन. विलिनीकरण को कारण याच बात पोवार समाज पर भी घटित होये. अतः इतिहास सीन सबक लेयके पोवार समाज न् विलिनीकरण को प्रखर विरोध करके आपली मातृभाषा, संस्कृति व ऐतिहासिक पहचान बचावन को कार्य मा पूर्ण सामर्थ्य लक जुट जानों माच पोवार समुदाय की शाश्वत भलाई से.

7–6. वांशिक एकता की बात करके राष्ट्र की भाषिक व सांस्कृतिक विविधता ला उपेक्षित–दूर्लक्षित करनो अना वोला नष्ट करन को मार्ग प्रशस्त करनो येव कार्य विविधता मा एकता (Unity in Diversity) को सिद्धांत को विरुद्ध से. तसोच पोवार समुदाय को हित अना राष्ट्रीय हित येन् दूही प्रकार को हितों को दृष्टि लक सर्वथा अनुचित से.

●●●

अध्याय 11.

स्वतंत्र अस्तित्ववादी विरुद्ध वांशिक एकतावादी सिद्धांत

(Theory of Independent Existence Vs Racial Unity)

1. प्रास्ताविक

वैनगंगा तटीय 36कुलीय पोवार समाज मा दुय भिन्न सामाजिक सिद्धांत अस्तित्व मा सेत. प्रथम, स्वतंत्र अस्तित्ववादी व द्वितीय, वांशिक एकतावादी. इन दूही सिद्धांतों को नामकरण अना उनला परिभाषित करन को कार्य प्रस्तुत लेखक द्वारा इतिहास मा पहली बार होय रही से. इनको नामकरण, इनको मा निहित विचारों को आधार पर करेव गयी से. येन् दूही सिद्धांतों को स्वरुप निम्नलिखित से.

2. वांशिक एकतावादी सिद्धांत

येन् सिद्धांत का समर्थक भारतवर्ष मा स्थित पोवार,पंवार,भोयर, प्रमार, परमार आदि. असंख्य अग्निवंशीय क्षत्रिय समुदायों को आपस मा विलिनीकरण करनो चाव्ह् सेत. येन् सिद्धांत को बीजारोपण 1965 को मेंढा अधिवेशन मा भयेव. 1982 लक येला क्रियान्वित करन को कार्य अधिक तेज भयेव. प्रस्तुत सिद्धांत को समर्थकों न् 2006 मा पोवार समाज द्वारा प्रस्थापित अखिल भारतीय क्षत्रिय पंवार महासभा ला भंग (Dissolved) कर देईन. अना समस्त अग्निवंशीयों की प्रतिनिधिक संस्था को रुप मा ''राष्ट्रीय क्षत्रिय पवार महासभा'' येन् नाव की एक नवीन संस्था को गठण करीन. आगे चलकर 2014 को इटारसी अधिवेशन मा महासभा का अध्यक्ष डॉ. शरणागत जी (निवासी–बालाघाट) न् ''अज को बाद भविष्य मा सभी अग्निवंशीय जाति आपआपलो परंपरागत नाव त्याग करके सिर्फ अना सिर्फ पवार (Pawar) कहलायेती. '' असी घोषणा कर देईन. येन् घोषणा मा तानाशाही की झलक दिखाई देसे. वस्तुतः येन् सिद्धांत को समर्थकों न् पोवार समाज को भोलोपन को फायदा उठायके समाज को ''पवारीकरण'' को कार्य 1982 पासून तेज गति लक प्रारंभ कर देई होतीन. अतः वांशिक एकता को सिद्धांत ला ''पवारीकरण को सिद्धांत'' येन् नाव लक संबोधित करनो अधिक अर्थपूर्ण से. येन् सिद्धांत की सबसे मोठी कमजोरी या से कि येव सिद्धांत वस्तुस्थिति पर नहीं बल्कि ऐतिहासिक संभावना (Historical Probability) पर आधारित से अना येवच येन् सिद्धांत को सबसे कमजोर बिंदु से.

अलग– अलग समूह बनायके रव्हनो या मानव की एक स्वाभाविक प्रवृत्ति (Natural Tendency) से. येन् नैसर्गिक प्रवृत्ति को कारण प्राचीन

कालपासून पोवार जाति को स्वतंत्र अस्तित्व से. अतः वांशिक एकता अथवा पवारीकरण की नीति अनैसर्गिक (Unnatural) से.

3. स्वतंत्र अस्तित्ववाद को उदय

पोवार समाज मा 2018 मा ''पोवारी भाषाविश्व नवी क्रांति अभियान, भारतवर्ष'' व ''पोवार समाजविश्व आमूलाग्र क्रांति अभियान, भारतवर्ष'' येन् दुय आंदोलनों की दमदार शुरुआत भयी. वर्तमान मा भी ये आंदोलन पूर्ण ताकत को साथ शुरु सेत. परिणामस्वरूप समाज मा विपुल व गहरी जनजागृति आयी. येन् आंदोलनों को द्वारा एक नवीन ''स्वतंत्र अस्तित्ववादी सिद्धांत'' को उदय भयेव.

4. स्वतंत्र अस्तित्ववाद को स्वरुप

पोवार समुदाय मा आपली स्वतंत्र ऐतिहासिक पहचान पूर्ववत कायम ठेवन की अभिलाषा व इच्छा–आकांक्षा प्रबल रुप लक व्याप्त से. येवच स्वतंत्र अस्तित्ववादी सिद्धांत को उदय को मुख्य कारण आय. येव नवो सिद्धांत पोवार समुदाय की स्वतंत्र मातृभाषा, संस्कृति अना समुदाय को स्वतंत्र अस्तित्व कायम ठेवन को पक्षधर से.

पवारीकरण को सिद्धांत एकरुपता (Congruency)को समर्थक से. येको विपरित स्वतंत्र अस्तित्ववादी सिद्धांत विविधता (Diversity)को समर्थक से. पोवार समुदाय मा येव दूसरो सिद्धांत 2018 पासून विकसित होनो प्रारम्भ भयेव व 2020 मा पूर्णतः विकसित भयेव.

5. स्वतंत्र अस्तित्ववाद की विशेषताएं

प्रस्तुत लेखक को अनुसार स्वतंत्र अस्तित्ववादी सिद्धांत की मौलिक विशेषताएं निम्नलिखित सेत–

5–1. सांस्कृतिक विरासत को समर्थन

पोवार समुदाय की स्वतंत्र मातृभाषा,विशेष परंपराएं तथा ऐतिहासिक पहचान से. या येकी सांस्कृतिक विरासत आय. अना या विरासत नैसर्गिक रुप लक विकसित भयी से. स्वतंत्र अस्तित्व को सिद्धांत येन् नैसर्गिक रूप लक विकसित विविधता को पक्षधर से. येको विपरीत वांशिक एकता को सिद्धांत की सोच से. येको द्वारा अपनाई गयी, प्रत्येक समुदाय की अनमोल सांस्कृतिक विरासत नष्ट करन की सोच पूर्णतः अविवेकपूर्ण से.

5–2. इतिहास पर अधिष्ठित

पोवार समुदाय को स्वतंत्र अस्तित्व सदियों पासून से. परिणामस्वरुप येन् समुदाय जवर स्वतंत्र सांस्कृतिक विरासत से. 1700 को आसपास येव समुदाय मालवा–राजस्थान लक स्थानांतरित होयके वैनगंगा अंचल मा आयके

स्थाई रुप लक बस गयेव. येन् समुदाय को स्वतंत्र अस्तित्व ला ठोस ऐतिहासिक व सांस्कृतिक अधिष्ठान से. अतः येन् समुदाय को लोगों ला विलिनीकरण को नाव पर गुमराह करके षड़यंत्रपूर्वक येकी स्वतंत्र मातृभाषा, संस्कृति व स्वतंत्र अस्तित्व नष्ट करनो सर्वथा अनुचित से.

5–3. संवैधानिक आधार

भारतीय संविधान व संयुक्त राष्ट्रसंघ को युनेस्को (UNESCO) नामक संगठन भी सब समुदायों ला आपली–आपली मातृभाषा, लोककला व संस्कृति को संरक्षण–संवर्धन करन प्रोत्साहित कर् सेत. अतः स्वतंत्र अस्तित्व को सिद्धांत भारतीय संविधान व संयुक्त राष्ट्र संघ की नीति को अनुकूल से.

5–4. जनमत को आधार

स्वतंत्र अस्तित्व को सिद्धांत येव पोवार समुदाय को 99प्रतिशत जनमत अथवा सामाजिक इच्छा व संवेदना को अनुकूल से. अतः येव सिद्धांत महान दार्शनिक रुसो की सामाजिक ईहा (Common Will) की संकल्पना को अनुरूप से. तात्पर्य, येन् सिद्धांत मा पोवार समुदाय को शाश्वत कल्याण निहित से.

5–5. प्रजातांत्रिक जीवनप्रणाली को आधार

प्रजातांत्रिक जीवनशैली या विविधता मा एकता को सिद्धांत ला अपनाव् से. तानाशाही जीवनशैली या एकरुपता की पक्षधर होसे. स्वतंत्र अस्तित्व को सिद्धांत येव प्रजातांत्रिक जीवनप्रणाली को अनुरूप से.

5–6. सृष्टि को नियमों को अनुरूप

सृष्टि मा विविधता पाई जासे. मानव अनावश्यक हस्तक्षेप करके सृष्टि की विविधता व सौंदर्य नष्ट करन को गलत कार्य सदैव करत रव्ह् से. स्वतंत्र अस्तित्ववादी सिद्धांत सृष्टि को नियमों को अनुरूप से.

6. वाद व प्रतिवाद :एक दृष्टिक्षेप

हर्बर्ट स्पेंसर न् विचार प्रक्रिया पर संशोधन करके ''विचार विकास को सिद्धांत'' प्रस्तुत करीसेस. येन् सिद्धांत को अनुसार वाद (Thesis), प्रतिवाद (Antithesis) अना संवाद (Synthesis) असो अनुक्रम लक विचार विकसित होसे.

36 कुलीय पोवार समुदाय येव सदियों पासून एक स्वतंत्र जाति को रुप मा जीवनयापन कर रही से. अतः हर्बर्ट स्पेंसर को दृष्टिकोण लक यदि विचार करेव जाए त् स्वतंत्र अस्तित्व को सिद्धांत येव वाद (Thesis) आय. पवारीकरण को सिद्धांत येव प्रतिवाद (Antithesis) आय. अना संवाद (Synthesis) आब् भविष्य को गर्भ मा से.

7. उपसंहार (Conclusion)

स्वतंत्र अस्तित्व को सिद्धांत सदियों पासून अस्तित्व मा से. परंतु येला 2018को बाद प्रस्तुत लेखक द्वारा परिभाषित करेव गयेव. येको मा अनेक गुण निहित सेत. येको विपरीत वांशिक एकता को सिद्धांत येव राजनीतिक आकांक्षाओं लक प्रेरित से. येव सिद्धांत राजनीतिक दृष्टिकोण को व्यक्तियों ला व्यापक क्षेत्र मा विपुल जनसमुदाय को नेतृत्व करन को अवसर प्रदान कर् से. अतः काही महत्वाकांक्षी व्यक्ति मोठो मंचों को माध्यम लक स्वयं ला चमकावन को स्वार्थपूर्ण उद्देश्य लक येका हिमायती सेत.

येन् सिद्धांत का तरफदार चंद लोग अग्निवंशीय कहलावने वाली सभी जातियों ला अलग–अलग नावों को स्थान पर केवल पवार (Pawar) अना उनकी अलग–अलग मातृभाषाओं ला अलग–अलग नावों को स्थान पर केवल पवारी (Pawari) येव एकच नाव प्रतिस्थापित करनो चाव्ह् सेत.

पोवार समुदाय को जनमानस आपली मातृभाषा, संस्कृति, ऐतिहासिक पहचान अना स्वतंत्र अस्तित्व को पक्षधर से. अतः पोवार समुदाय को प्रबुद्ध वर्ग द्वारा जनजागृति को माध्यम लक ''स्वतंत्र अस्तित्व को सिद्धांत'' ला लोकप्रिय बनायके पवारीकरण को बेभान अश्व ला रोकनो सहज संभव से.

●●●

अध्याय 12.

राष्ट्रीय पहचान : प्रदीप्त आकांक्षा व परिपूर्ति का उपाय

1. राष्ट्रीय पहचान की आकांक्षा

पोवार समाज मुख्यतः गोंदिया, भंडारा, बालाघाट, सिवनी येन् चार जिलाओं मा बसी से. पवारीकरण को समर्थकों मा लक काही व्यक्तियों को कथन से कि ''पोवार समुदाय की संख्या कम से. येको कारण उनला येन् चार जिला को शिवाय अन्यत्र कोनी जानत नहीं. येको कारण समस्त अग्निवंशीयों को विलिनीकरण अथवा पवारीकरण आवश्यक से. पवारीकरण होयेव पर वैनगंगा तटीय 36 कुलीय पोवार समाज ला संपूर्ण भारतवर्ष मा सहजता लक पहचान प्राप्त होय जाये अना येव समाज भारतवर्ष पर शासन करें. '' येको पर लक अवगत होसे कि या एक गलत परिकल्पना (Hypothesis) भी आमरो समाज मा व्याप्त से. अना पवारीकरण की विचारधारा या राजनीतिक आकांक्षाओं लक प्रेरित से.

अतः यहां प्रश्न उपस्थित होसे कि पोवार समुदाय का लोग आपलो पुरुषार्थ, राष्ट्रीय चरित्र,भारतीयत्व को बलपर भारत मा आपली पहचान बनावन को लायक नाहात का ?

2. बल मा बल ''आत्मबल''

प्रस्तुत लेखक को प्रामाणिक अभिमत से कि पोवार समुदाय न् ऐतिहासिक संभावनाओं पर आधारित वांशिक एकता को बलपर आपली राष्ट्रीय पहचान बनावन को व भारतवर्ष पर राज करन को सपना देखनो सोड़ देये पाहिजे. कारण की कौनसी भी कौम या केवल आपलो आत्मबल, आत्मविश्वास अना राष्ट्रीय चरित्र को बलपर राजकीय सत्ता संघर्ष मा सफल होसे व राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय पहचान बनावनों मा भी कामयाब होसे. यहां येव लेख लिखता–लिखता ''भाई के भरोसे दो–दो लुगाई'' या एक हिन्दी कहावत अनायास याद आय गयी. तात्पर्य, आपलो समाज को उत्थान आपलो दम–खम पर करन की सोचनो अत्यंत उत्तम होये.

3. राष्ट्रीय पहचान का सही उपाय

पवारीकरण की विचारधारा या राजनीतिक आशा–आकांक्षाओं लक प्रेरित, भ्रामक अना पोवार समुदाय ला गुमराह करनेवाली विचारधारा से. पोवार समुदाय न् वांशिक एकता (Genetic Unity) अथवा पवारीकरण को स्थानपर पुरुषार्थ, राष्ट्रीय चरित्र, राष्ट्रभक्ति,राष्ट्रवाद आदि. गुण विकसित करनो पर

अना शैक्षणिक, भाषिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि. सभी क्षेत्र की उन्नति पर ध्यान केंद्रित करके हर क्षेत्र मा उंचाई हासिल करके आपली पहचान ला व्यापक बनाये पाहिजे.

4. उपसंहार

वर्तमान काल मा पोवार समुदाय ला केवल क्षेत्रिय पहचान प्राप्त से. समाज को प्रबुद्ध वर्ग न् आता भविष्य मा असा काही श्रेष्ठ कार्य करें पाहिजे कि देश को कानाकोपरा मा भी पोवार समाज ला एक उत्तम पहचान प्राप्त करनो संभव होये.

वर्तमान युग येव वैश्वीकरण (Globalizationv) को युग आय. अतः समुदाय मा ''वसुधैव कुटुंबकम्'' की भावना उत्पन्न होनो आवश्यक से. अना येन् आदर्श ला दृष्टिपथ मा ठेयके पोवार समुदाय ला भारतवर्ष को सामाजिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय अना मानव संसाधन (Man Power)को उत्थान की एक इकाई मानके कार्य करन की अना गौरवशाली पोवार समाज को नवनिर्माण की आवश्यकता से. आमला आपलो समाज पर पूर्ण विश्वास से कि येन् व्यापक दृष्टिकोण ला आत्मसात करके आता वू निःसंकोच आगे प्रस्थान करें.

येव लेख लिखता–लिखता लेखक की अंतर्रात्मा मा निम्नलिखित उद्घोष गूंज रही से–

पोवार समुदाय ला रुकन न् देबी।
पोवार समुदाय ला झुकन न् देबी ।।

अध्याय 13.

मोरो समुदाय अना मोरो समाज–धर्म

(My Community and my Social Liabilities)

1. सामाजिक संगठनों को दायित्व

समाज की मातृभाषा, संस्कृति, पहचान व इतिहास को संरक्षण–संवर्धन करत समाजोत्थान को प्रयास करनो येव सामाजिक संगठनों को धर्म से.

लेकिन पोवार समुदाय का काही संगठन धर्म विमुख भय गया सेती. वय अन्य समुदायों ला आपलो संगठन मा प्रतिनिधित्व देयके अंतर्जातीय विवाह ला भी प्रोत्साहित कर रहया सेती अना पोवार समुदाय को सामाजिक ढांचा (Social Structure) ला उध्वस्त करन को प्रयास विगत अनेक साल पासून कर रह्या सेत.

2. अनिष्ट कर ध्यानाकर्षण

बहुत बार आम्हीं सोचज् भी नहीं कि जो कर रहया सेज्, वोका कौनसा अनिष्ट परिणाम होयेत? जब् एखाद अन्य व्यक्ति द्वारा इन दुष्परिणामों लक अवगत करायेव जासे, तब् आम्हीं जागृत होय जासेज् अना अनुचित कार्य ला रोक देसेज् येन् वस्तुस्थिति ला ध्यान मा ठेयके समाज को प्रबुद्ध वर्ग ला आपलो सामाजिक संगठनों मा विजातीय व्यक्तियों ला स्थान देन को दुष्परिणामों की जानकारी प्रखरता लक अवगत करावनो, येव प्रस्तुत लेखक को धर्म से अना येवच प्रस्तुत अध्याय को मर्यादित उद्देश्य से.

3. विजातीय आकर्षण का दुष्परिणाम

यदि आम्हीं आपलो 36 कुलीय पोवार समुदाय को सामाजिक संगठनों मा अन्य समुदाय को लोगों ला स्थान देबी त् येका जे अनिष्ट परिणाम होयेत वय निम्नलिखित सेत–

1. आपली मातृभाषा पोवारी नष्ट होये.
2. आपली संस्कृति नष्ट होये.
3. आपलो समुदाय की स्वतंत्र पहचान नष्ट होये.
4. आपलो समुदाय को स्वतंत्र अस्तित्व समाप्त होये.
5. पोवार समुदाय अंतर्जातीय विवाह प्रथा द्वारा पूर्णतया नष्ट होये.
6. कालांतर मा संगठन को पदाधिकारी बनन साती विभिन्न समुदायों को बीच सत्ता संघर्ष होये.

7. दूसरो समुदाय का लोग कूटनीति को बल पर पोवार समुदाय की मातृभाषा, संस्कृति, पहचान अना स्वतंत्र अस्तित्व नष्ट करेती.
8. पोवार समुदाय को परंपरागत सामाजिक ढांचा (Social Structure) पूर्णतः उध्वस्त होये.
9. भावी पीढ़ी ला जब् इतिहास को माध्यम लक वर्तमान पीढ़ी की गलती अवगत होये, तब् नवीन पीढ़ी जूनी पीढ़ी ला दोष देये.
10. पोवार समुदाय आपली अनमोल सांस्कृतिक विरासत–भाषा, संस्कृति, पहचान, गौरवशाली इतिहास खोय देये, सांस्कृतिक दृष्टि लक पूर्णतः निर्धन बन जायें व भीड़ मा खोय जाये.

4. महत्वपूर्ण सुझाव

पोवार समुदाय को सदस्यों न् सभी समुदायों, भाषाओं, संस्कृतियों, राष्ट्र अना विश्व को प्रति अच्छा संबंध अवश्य प्रस्थापित करें पाहिजे. लेकिन अन्य समुदाय को व्यक्तियों ला आपलो संगठनों मा स्थान देन की भूल कदापि नहीं करें पाहिजे. येन् प्रकार की भूल अथवा जानबूझकर करेव गयेव कार्य पोवार समुदाय की मृत्यु शय्या (शरण) रचन को समान से.

पोवार समुदाय का काही पढ़या–लिख्या लोग समुदाय की मृत्युशय्या रचन को षड़यंत्र कर रहया सेत. असो अवस्था मा आमरो दायित्व से कि आम्हीं संगठित रूप लक मातृभाषा पोवारी, पोवारी संस्कृति अना पोवारी पहचान ला अधिक मजबूत बनावनसाती दिन–रात, पूर्ण उमंग को साथ क्रांतिकारी प्रयास करें पाहिजे. अंतिम लक्ष्य प्राप्त होत वरि आम्हीं अविरत परिश्रम करें पाहिजे.

अध्याय 14.

राष्ट्र की बुनियाद : सनातन हिन्दू धर्म

1. वर्तमान भारत

वर्तमान भारत येव धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र से. धर्मनिरपेक्षता को अभिप्राय से कि कोनतो भी धर्म को आधार पर शासन संचालित नहीं होन को ! लेकिन सब लोगों ला आपआपलो धर्म को अनुसार पूजा–उपासना करन की स्वतंत्रता प्राप्त रहें.

परंतु भारत सरकार न् धर्मनिरपेक्षता को साथो साथ, धर्म को आधार पर जे लोग अल्पसंख्यक सेती उनको प्रति तुष्टिकरण नीति अपनाईस. येन् नीति को तहत अल्पसंख्यकों ला विशेष सुविधा देनो प्रारंभ भयेव. लेकिन यदि हिन्दुओं न् आपलो धर्म को हित की बात करीन त् उनला सांप्रदायिक कह के चुप करावन की अनीति अपनायी गई. परिणामस्वरुप भारत मा अल्पसंख्यकों को मनोबल बढत गयेव. उनको धर्म फलत–फूलत गयेव. अल्पसंख्यकों मा सनातन हिन्दू धर्म की अवहेलना अना हिन्दुओं को देवी देवताओं पर अभद्र पोस्ट प्रेषित करन की प्रवृत्ति बढ़ी.

भारत सरकार न् भारत मा एक अलग प्रकार की धर्मनिरपेक्षता की नीति क्रियान्वित करीस. येको कारण सनातन हिन्दुओं को मनोबल टूंटेव, वय मोठो प्रमाण मा दिग्भ्रमित भया अना उनको मा स्वयं को सनातन हिन्दू धर्म को प्रति अनास्था व अश्रद्धा का भाव भी उत्पन्न भया. या स्थिति न केवल हिंदू धर्म बल्कि भारतवर्ष को अस्तित्व को परिप्रेक्ष्य मा भी अत्यंत चिंताजनक से. अतः आता हिन्दुओं न् भारतवर्ष को अस्तित्व को संरक्षण साती सनातन हिन्दू धर्म को संरक्षण करनों काहे आवश्यक से ? येव जान लेनो परम् आवश्यक भय गयी से. येन् आवश्यकता की परिपूर्ति येवच प्रस्तुत अध्याय को मुख्य उद्देश्य से.

2. सनातन धर्म राष्ट्र की प्राणशक्ति

सनातन हिन्दू धर्म येवच भारतवर्ष को मूल धर्म आय. प्राचीन काल मा सनातन संस्कृति को कारण भारतवर्ष न् संसार को ज्ञान विज्ञान मा अनमोल योगदान देईस अना विश्वगुरु कहलायेव.

सनातन हिन्दू धर्म को जबवरि अस्तित्व से केवल तबवरि आमरा धर्मग्रंथ, ऋषि–मुनि, महापुरुष, देवीदेवता, महान शासक इन सब ला देश मा प्रतिष्ठापूर्ण स्थान प्राप्त रहें. आमरो धर्म जब वरि अस्तित्व मा से, तबवरि

आम्हीं भारतवर्ष मा गर्व को साथ भारत ला भारतमाता, गाय ला गौमाता, गंगा नदी ला गंगा मैया, तुलसी को झाड़ ला तुलसी माता कव्हनो मा समर्थ सेज्.

राष्ट्र की अवधारणा या केवल भूप्रदेश वरि मर्यादित नाहाय. राष्ट्र की अवधारणा मा लोग अना लोगों की आस्था ला महत्वपूर्ण स्थान से. आमरी आस्था राष्ट्र ला प्राणवान बनाव् से. अतः जबवरि आम्हीं आपलो देश मा स्वतंत्रता पूर्वक आपली आस्था, श्रद्धा अना मान्यताओं को अनुसार जग सक् सेज् तबवरि भारतवर्ष येव सही मायना मा आमरों साती अर्थपूर्ण से. येको विपरीत जब् आमला आपलोच देश मा अन्य कोनतो भी धर्म की आस्था, श्रद्धा अना मान्यताओं को अनुसार जीवन जगन ला बाध्य करेव जायें वोन् दिवस आमरों स्वयं को राष्ट्र आमरो स्वयं साती अर्थशून्य होय जाये. अन्य शब्दों मा, भारत माता आमरो साती मृतप्राय होय जाये.

भारतवर्ष को प्राचीन स्वरूप ला कायम ठेयके आम्हीं आपलो धर्म, आस्था, श्रद्धा, मान्यताओं को अनुसार जीवनयापन कर सकबी असो भारतवर्ष ला कायम ठेवनो से त् सर्वप्रथम आमला आपलो सनातन हिन्दू धर्म को रक्षण करें पाहिजे. अतः आमरो साती तिन्हीं कर्तव्य महत्वपूर्ण सेत– प्रथम, सनातन हिन्दू धर्म को अस्तित्व सुरक्षित ठेवनो द्वितीय, राष्ट्र की सीमाओं ला सुरक्षित ठेवनो अना तृतीय, आपलो समुदाय को उत्कर्ष करनो.

3. श्रीराम व श्रीकृष्णः एक राष्ट्रीय चिंतन

रामायण अना गीता ये आमरा महान ग्रंथ आती. राम अना कृष्ण ये आमरा महान पूर्वज आती. ये दूही ग्रंथ सनातन हिन्दू धर्म को सिद्धांतों लक ओतप्रोत सेत. गीता का श्लोक व रामायण की चौपाई ये आमला अन्याय–अत्याचार, हर संकट अना बुराई को विरुद्ध संघर्ष करन की शक्ति देसेती. ये दूही ग्रंथ आमला संस्कारित कर् सेत व भारत को सभी महापुरुषों का प्रेरणास्रोत रहया सेत. ब्रिटिश काल मा आजादी की प्रेरणा अना शक्ति भी येन् महान् ग्रंथों लक मिली होती.

सनातन हिन्दू धर्म ''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामया'' (सभी सुखी हो, सभी निरोगी हो) येन् सिद्धांत पर अधिष्ठित से. संसार मा जो भी अच्छाई से, वोला ग्रहण करनों मा हिन्दू धर्म सदा तत्पर रव्ह् से. हिन्दू धर्म मा सुधार की एक लंबी परंपरा रही से. बुद्ध, महावीर, शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, कबीर, नानक, चैतन्य महाप्रभु, रामकृष्ण परमहंस, दयानंद सरस्वती, विवेकानन्द को समान महापुरुषों न् हिन्दू धर्म मा व्याप्त बुराईयों को विरुद्ध संघर्ष करके हिन्दू धर्म ला तेजोमय बनायके ठेयी सेन. रामायण अना गीता ये

दूही ग्रंथ हिन्दू संस्कृति की आत्मा आत. अना राम व कृष्ण ये आमरा महान पूर्वज आत.

4. हिंदुत्व को अर्थ

हिन्दुत्व ला साम्प्रदायिकता कव्हनो या एक गलत बात (wrong narrative) से, जो राजनीतिक स्वार्थ को कारण गढ़ेव गयी से. वास्तविकतः हिन्दू धर्म की सीख अथवा सिद्धांतों ला धारण करनों, येव हिन्दुत्व को सही अर्थ से.

हिन्दू धर्म येव सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामया...... की सीख देसे. लेकिन येको साथ–साथ हिन्दू धर्म, स्वधर्म को रक्षण साती अना दुष्टों को दलन साती हाथ मा शस्त्र धारण करन की अनुमति भी देसे. हिन्दू धर्म येव मानवतावादी धर्म से. येको मा मानवता ला सर्वोच्च स्थान से.

सामान्य अथवा विशेष नाम मा 'त्व' प्रत्यय लगावनो पर राम को रामत्व, मनुष्य को मनुष्यत्व, सती को सतीत्व, स्त्री को स्त्रीत्व, बंधु को बंधुत्व, देव को देवत्व होय जासे. ये सब भाववाचक नाम आपलो–आपलो मूल शब्दों की महान विशेषता का प्रतीक बन जासेत. येनच न्याय लक हिन्दू धर्म को गुणों ला धारण करन को अभिप्राय हिन्दुत्व असो होसे.

5. स्वामी विवेकानन्द जी को संदर्भ

स्वामी विवेकानन्द जी सभी धर्मों को सम्मान करत होता. लेकिन भारत को समग्र इतिहास को अनुशीलन करन को पश्चात उनको अभिप्राय से कि ''सनातन हिन्दू धर्म याच भारतवर्ष की प्राणशक्ति आय. ''

इतिहास को निष्पक्ष अध्ययन लक ज्ञात होसे कि भारतवर्ष अना सनातन हिन्दू धर्म को उत्थान–पतन मा अन्योन्य संबंध से. सनातन हिन्दू धर्म को जब्–जब् उत्कर्ष भयेव तब्–तब् भारत भी एक शक्तिशाली राष्ट्र को रुप मा उभरेव. तसोच सनातन हिन्दू धर्म को जब्–जब् पतन भयेव, तब्–तब् भारत कमजोर भयेव अना विदेशी आक्रांताओं को सामने नतमस्तक होनो पड़ेव. अतः सनातन हिन्दू धर्म येवच भारतवर्ष की प्राणशक्ति आय, येव एक शाश्वत सिद्धांत से.

6. राष्ट्र को सम्मुख वर्तमान संकट

स्वामी विवेकानन्द जी को समय जे संकट भारत को सम्मुख उपस्थित नोहता, असा अनेक संकट वर्तमान भारत को सम्मुख उपस्थित सेत. इनको मा लक प्रथम संकट से–वामपंथी विचारधारा अना दूसरो संकट से–जिहादी विचारधारा.

उपर्युक्त दूही विचारधारा सनातन हिन्दू धर्म व भारतवर्ष साती भयंकर खतरनाक सेती. तसोच क्रिश्चन मिशनरियों द्वारा सनातन हिन्दुओं को धर्मांतरण की ज्या समस्या स्वामी विवेकानन्द जी को समय विद्यमान होती, वा भी जसी की तसी आज भी कायम से.

7. पराधीन सपनेहूं सुख नाही !

सनातनी हिन्दुओं को केवल एकच राष्ट्र से भारत ! अना येव राष्ट्र सनातन हिन्दू धर्म व संस्कृति पर अधिष्ठित से. जेन् दिवस साम्यवादी, जिहादी अथवा धर्मांतरण की नीति मा विश्वास ठेवने वाला लोग भारतवर्ष की नींव ला नष्ट कर देयेत, वोन् दिवस भारतवर्ष मा हिन्दुओं की स्थिति शरणार्थियों अथवा गुलामी वानी होय जाये. हिन्दुओं ला आपली आस्था, श्रद्धा अना मान्यताओं ला तिलांजलि देयके व आपली भावनाओं ला तड़पत देखके भी गुलामी सारखी हालत मा जीवन जगन साती बाध्य होनो पड़े.

उपर्युक्त दूर्दिन भरेव भविष्य लक अगर बचनो से त् हिन्दुओं न् आता घनघोर निद्रा लक जागृत होन की अना सब भ्रांतियां दूर करके निज सनातन हिन्दू धर्म को संरक्षण अना वोला शक्तिशाली बनावन को कार्य मा जुटनो आवश्यक से. येव करन साती आपलो मन मा या एक बात दृढ़तापूर्वक बसाय लेनो आवश्यक से कि सनातन हिन्दू धर्म की सेवा या भी राष्ट्र अना भारत माता की सेवा आय. भारत ला यदि मूल स्वरूप मा बचावनो से त् सनातन हिन्दू धर्म ला सशक्त करनो येव आमरो महत्वपूर्ण दायित्व से.

अध्याय 15.

सनातन धर्म : पोवार समाज को दायित्व

Responsibility of Powar Community towards the "Sanstan Dharma"

1. धर्म व समाज को संबंध

पोवार समाज व सनातन धर्म को अन्योन्य संबंध से. परंतु आधुनिक युग मा सनातन हिन्दू धर्म पर पाश्चात्यीकरण, धर्मनिरपेक्षता, वामपंथी, बहुजन समाजवादी, आंबेडकरवादी विचारधारा व अन्य विदेशी धर्मो को आघात होय रही से. हिंदू धर्म विरोधी अविरत दुष्प्रचार को कारण येन् महान धर्म पर समाज को युवाओं की निष्ठा विचलित व कमजोर होय रही से.

सनातन धर्म को एक सूक्ष्म धागा लक पोवार समुदाय मुख्य राष्ट्रीय प्रवाह को साथ जुड़ेव से. येव धागा यदि तूटेव त् पोवार समाज की स्थिति ''कटी पतंग ''को समान होनो अथवा वोको पतन होनो अवश्यंभावी से. येन् वस्तुस्थिति को कारण वर्तमान समय मा, पोवार समाज मा सनातन धर्म को स्थान व महत्व ला परिभाषित करन की नितांत आवश्यकता से. येन् आवश्यकता की पूर्ति करनो येव प्रस्तुत अध्याय को प्रमुख उद्देश्य से.

2. ऐतिहासिक पार्श्वभूमी

परमार वंश की उत्पत्ति लगभग 2500 वर्ष पहले ऋषि वशिष्ठ द्वारा संपन्न यज्ञ संस्कारों को माध्यम लक भयी से. पोवार समुदाय की उत्पत्ति परमार वंश पासून मानेव जासे. पोवार समुदाय येव मालवा–राजस्थान को मूल निवासी आय. येव समुदाय लगभग 325 साल पहले मालवा लक स्थानांतरित होयके वैनगंगा अंचल मा स्थायी रुप लक वास्तव्य कर रहीं से.

सम्राट विक्रमादित्य प्रथम, महाराजा भोज ये परमार वंश का महान शासक आती. इन महान शासकों न् आपलो जीवन व शासनकाल मा राष्ट्र व सनातन धर्म ला अग्रक्रम देईन. सनातन धर्म को संरक्षण–संवर्धन व उत्थान कार्य मा उल्लेखनीय त्याग व बलिदान करीन. पोवार समुदाय वैनगंगा अंचल मा आयेव को पश्चात भी वोकी धार्मिक आस्था पूर्ववत कायम रहीं. पोवार समुदाय न् जहां–जहां गांव बसाईस वहां–वहां श्रीराम मंदिर, हनुमान मंदिर,मातामाय को बोहला आदि. की स्थापना करीस.

पोवार समाज वर्ण को दृष्टि लक क्षत्रिय व धार्मिक दृष्टि लक सनातन हिन्दू धर्म को अनुयाई से. वर्तमान पोवार समाज येव आपलो क्षत्रिय

होनो पर बारंबार गर्व करतो परिलक्षित होसे. परंतु सनातन हिन्दू धर्म सीन आपलो अटूट नातों से येको वोला ज्ञानात्मक स्तर पर विस्मरण होय रही से.

3. सनातन धर्म को महत्व

सनातन धर्म येव अनादि, विज्ञाननिष्ठ, प्रकृतिनिष्ठ व मानवतावादी धर्म से. वेद, वेदांत, उपनिषद, रामायण, श्रीमद्भगवद्गीता आदि. ग्रंथों मा सनातन हिन्दू धर्म को दर्शन निहित से. भारतवर्ष को अनेक महापुरुषों न् सनातन धर्म की श्रेष्ठता संसार को सम्मुख स्पष्ट करीसेन. विश्वविख्यात स्वामी विवेकानन्द न् शिकागो विश्व धर्मपरिषद (1893)मा सनातन धर्म की श्रेष्ठता एकबार पुनः सिद्ध करीन. शिकागो वैश्विक धर्म सम्मेलन को व्याख्यानों को कारण समकालीन विद्वानों मा श्रेष्ठतम विद्वान को रुप मा उनला एकस्वर लक जागतिक प्रतिष्ठा प्राप्त भयी.

पोवार समाज को दृष्टि लक सनातन धर्म ला अनन्य साधारण महत्व से. सनातन धर्म लक सनातन संस्कृति, क्षत्रिय वर्ण,क्षात्र धर्म,क्षात्र तेज, क्षत्रिय संस्कृति,पोवारी संस्कृति आदि सभी संकल्पनाओं अथवा तत्वों को उदय व विकास भयी से.

4. धर्म को प्रति समाज को दायित्व

पोवार समाज की संस्कृति या प्रत्यक्ष रुप लक सनातन संस्कृति पर व अंततः सनातन धर्म पर आधारित से. सनातन धर्म येवच पोवारी संस्कृति को पाया आय (Sanatan Dharma is the foundation of Powari Culture.) तात्पर्य, पोवार समुदाय येव वंश को दृष्टि लक क्षत्रिय कहलाव् से. परंतु क्षत्रिय धर्म धारण करन को पहले पासून सनातन धर्म को अनुयाई से. अतः पोवार समाज का युवा पोवारी संस्कृति व क्षत्रिय होनो पर जेतरो गर्व को एहसास कर् सेती, वोको दुन अधिक उनला सनातन धर्म को गर्व रहें पाहिजे.

पोवार समाज की युवाशक्ति न् आपलो क्षत्रिय वंश दुन सनातन धर्म व संस्कृति पर अधिक प्रेम करें पाहिजे, वोला अधिक महत्व देये पाहिजे व सनातन हिन्दू धर्म को दर्शन (philosophy)अना संस्कारों ला आत्मसात करें पाहिजे. येवच पोवार समाज को सही जीवन मार्ग (Way of Life)आय. येको माच पोवार समाज व सनातन धर्म को कल्याण निहित से.

अध्याय 16.

पोवार समुदाय को मूल चरित्र : संकट व समाधान

(Basic Character of the Powar Community : Crisis and Solutions)

1. समुदाय को मूल चरित्र

भारतवर्ष येव एक प्राचीन राष्ट्र से. हजारों वर्षों पासून येव आपली संस्कृति को संरक्षण कर रहीं से. राष्ट्रवादी विचारधारा को कारण संस्कृति को संरक्षण संभव भयेव. लेकिन आजादी को बाद मा वामपंथी विचारधारा न् आपली जड़् जमाय लेईस. परिणामस्वरुप भारतीय संस्कृति व सनातन हिन्दू धर्म को प्रति अनिष्ठा व अश्रद्धा का भाव उत्पन्न करेव गया. येको कारण भारतीय संस्कृति पर संकट का बादल मंडरान लग्या. याच बात पोवार समुदाय पर भी अक्षरशः लागू होसे.

2. वामपंथी विचारधारा को प्रभाव

वामपंथी विचारधारा को प्रमुख लक्षण से विभिन्न समुदायों की मायबोली, संस्कृति, पहचान, स्वतंत्र अस्तित्व अना धर्मनिष्ठता की उपेक्षा करनो व इन ला नष्ट करन साती, वामपंथी विचारधारा अंतर्जातीय विवाह की प्रबल समर्थक रव्ह् से. कारण कि असो विवाहों लक वामपंथियों को लक्ष्य, बिना विशेष प्रयास करेव साध्य होय जासे. वोला विभिन्न समुदायों की मातृभाषा, संस्कृति, पहचान, स्वतंत्र अस्तित्व, स्वस्थ परंपराएं व धर्मनिष्ठता ला नष्ट करन साती अलग लक विशेष प्रयास नहीं करनो पड़्.

वर्तमान भारतीय शिक्षा पद्धति या वामपंथी विचारधारा लक प्रभावित से. अतः जे व्यक्ति उच्च शिक्षण ग्रहण करके समाज मा विचरण कर रहया सेती वय स्वयं ला विद्वान व प्रगतिशील समझ् सेती. अन्य लोग भी इन ला विद्वान समझनो शुरु कर देसेती. अना उनको विचारों लक प्रभावित होयके वामपंथी विचारधारा का सहज शिकार होय जासेती.

उपर्युक्त प्रकिया मा उच्चशिक्षाविभूषित व्यक्ति येन् बात लक अनजान रव्ह् से कि वोकी मानसिकता वामपंथी विचारधारा लक ग्रसित भय गयी से. तसोच जो इनको रस्ता लक चलन लग जासेती उन ला भी येन् बात को अंदाजा नहीं रव्ह् कि वय वामपंथी विचारधारा का शिकार बन गया सेत.

3. राष्ट्रवादी विचारधारा को स्वरुप

वामपंथी विचारधारा या राष्ट्रवादी विचारधारा को ठीक विपरीत विचारधारा से. राष्ट्रवादी विचारधारा सभी समुदायों की मातृभाषाएं, संस्कृति, पहचान, स्वतंत्र अस्तित्व, धर्मनिष्ठता आदि. की प्रबल समर्थक असी विचारधारा

आय. इनको संरक्षण–संवर्धन साती राष्ट्रवादी विचारधारा पोषक से. या विचारधारा सनातन हिन्दू धर्म साती भी पोषक से.

4. राष्ट्रवादी विचारधारा का स्त्रोत

उपर्युक्त मुद्दा क्र. 2 को अंतर्गत लेखक द्वारा कहेव गयी से कि वर्तमान शिक्षण को द्वारा व्यक्ति वामपंथी विचारधारा लक ग्रसित होय जासे. अतः पाठकों को मन मा येव प्रश्न स्वाभाविकतः उत्पन्न होये कि राष्ट्रवादी विचारधारा लोगों मा कसी उत्पन्न होसे ? येको सही उत्तर येव से कि आमरो संत–महात्मा, राष्ट्रवादी संगठन अना स्वामी विवेकानन्द समान राष्ट्रवादी विचारकों को विचारों को अध्ययन लक जब् आमला भारतवर्ष, भारतीय समाज अना सनातन हिन्दू धर्म को संबंध मा बुनियादी जानकारी हासिल होय जासे तब् आपोआप व्यक्ति ला वामपंथी विचारधारा को अनिष्ट पहलुओं को बोध होसे, व कोनतोही व्यक्ति राष्ट्रवादी बन पाव् से.

5. समुदाय को चित्र अना चरित्र

आमरो समाज को चरित्र प्राचीन काल पासून राष्ट्रवादी विचारधारा को रही से. परंतु भारत की आजादी को पश्चात वर्तमान भारतीय शिक्षण पद्धति को परिणामस्वरूप आमरो सामाजिक संगठनों मा जे भी कर्णधार बन्या वय राष्ट्रवादी विचारधारा लक प्रेरित नहीं बल्कि वामपंथी विचारधारा लक ग्रसित होता. अतः इनको मा मातृभाषा, संस्कृति, ऐतिहासिक पहचान, समुदाय को स्वतंत्र अस्तित्व अना सनातन हिन्दू धर्म को प्रति सही दृष्टिकोण को अभाव होतो. परिणामस्वरुप इनको नेतृत्व मा मातृभाषा पोवारी, पोवारी संस्कृति, पोवार समाज की ऐतिहासिक पहचान, धर्मनिष्ठता आदि सभी पहलुओं की उपेक्षा भई. ये महानुभाव समुदाय को डोरा मा केवल धूल झोंकन साती मातृभाषा व संस्कृति को संरक्षण की कोरी डिंग हांकत गया, समाज ला आश्वस्त करावत गया लेकिन इनकी कथनी व करनी मा जमीन आसमान को अंतर से. वामपंथी विचारधारा लक संमोहित ये लोग मातृभाषा, संस्कृति, ऐतिहासिक पहचान व समाज को स्वतंत्र अस्तित्व नष्ट करन की साजिश ला अंजाम देन साती प्रयत्नशील सेत. तात्पर्य, आमरो समाज को ऐतिहासिक चरित्र राष्ट्रवादी से. लेकिन विचारविश्व वामपंथी विचारधारा लक ग्रसित से.

6. राष्ट्रवादी विचारधारा को पुनः बीजारोपण

समाज को चरित्र ला वामपंथी विचारधारा को लोगों द्वारा बदलेव जाय रही से. येकी प्रस्तुत लेखक ला पूर्ण कल्पना होती अना वोको विचारविश्व ला राष्ट्रवादी विचारधारा को मजबूत अधिष्ठान होतो. येको कारण अदम्य आशावाद को साथ वोको द्वारा 2018 पासून पोवारी भाषिक क्रांति को

साथोसाथ आमूलाग्र क्रांति अभियान भी चलायेव गयेव. येको तहत समाज मा आपली संस्कृति,पहचान, स्वतंत्र अस्तित्व अना सनातन हिन्दू धर्म को प्रति स्वाभिमान जगावन साती भरपूर प्रयास करेव गया. परिणामस्वरुप राष्ट्रवादी विचारधारा को उच्चशिक्षाविभूषित महानुभावों न् येन् आमूलाग्र क्रांति आंदोलन ला अनुकूल प्रतिसाद देईन. अना उनको सहयोग लक ये दूही पोवारी भाषिक क्रांति व पोवार समाज विश्व आमूलाग्र क्रांति अभियान सफल भया.

वामपंथी विचारधारा को लोगों न् येन् आंदोलन ला नष्ट करन साती आमरो खिलाफ साम–दाम–दण्ड–भेद आदि. कूटनीतिक शस्त्रों को वापर करीन. येन् कालखंड मा जेव वैचारिक संघर्ष भयेव वू उपरी तौर पर शायद महासभा V/S ओ सी पटले असोच सब ला प्रतीत भयेव. लेकिन अज प्रस्तुत लेखक प्रामाणिकता लक समाज को सम्मुख स्पष्ट करनो चाव्ह् से कि येव संघर्ष वामपंथी विचारधारा V/S राष्ट्रवादी विचारधारा को बीच को संघर्ष आय अना येन् संघर्ष को कारण पोवार समाज मा राष्ट्रवादी विचारधारा उभरकर सामने आयी से.

7. सारांश

पोवार समाज मा 2018 को पश्चात केवल भाषिक क्रांति नहीं भयी बल्कि आमूलाग्र क्रांति भी संपन्न भयी से अना लुप्तप्राय राष्ट्रवादी विचारधारा पुनः पूर्ण उन्मेष को साथ उभरकर सामने आयी से. आम्हीं भविष्य मा रव्हबी अथवा नहीं रव्हबी लेकिन आता समाज मा ज्या राष्ट्रवादी विचारधारा पुनः नवो उमंग लक उभरकर सामने आयी से वा सदैव जीवित रहें.

भारतवर्ष मा राष्ट्रवादी विचारों को माहौल 2014 पासून तैयार होय रहेव होतो असो वक्त पोवार समाज मा भाषिक व आमूलाग्र क्रांति को अलख जगायेव गयेव. येको कारण ये क्रांति सफल भयी. क्रांति की सफलता या कोनतो भी एक व्यक्ति अथवा काही व्यक्तियों की सफलता नोहोय. बल्कि या समुदाय को ऐतिहासिक चरित्र व राष्ट्रवादी विचारधारा की सफलता आय.

या राष्ट्रवादी विचारधारा मातृभाषा पोवारी,पोवारी संस्कृति, समाज की ऐतिहासिक पहचान, स्वतंत्र अस्तित्व व सनातन हिन्दू धर्म को प्रति स्वाभिमान आदि. को संरक्षण–संवर्धन अना समाजोत्थान पर गंभीरतापूर्वक निर्णय लेयके समुदाय साती कल्याणकारी कार्य करनो मा सदैव तत्पर रहें. समाज की युवाशक्ति न् राष्ट्रवादी विचारधारा व राष्ट्रवादी संगठनों को साथ उभो रहें पाहिजे. येको मा पोवार समुदाय को शाश्वत सामाजिक व सांस्कृतिक कल्याण निहित से.

अध्याय 17.

पोवारी भाषिक क्रांति : उदय को रोचक इतिहास

1. प्रास्ताविक

महाविद्यालयीन जीवन पासून पोवार समाज विषयक साहित्य मी बाचत होतो. येव साहित्य बहुतेक हिन्दी मा रव्हत होतो.

अतः पोवार समाज की मातृभाषा पोवारी रयके समाज ला दिशा देन को कार्य हिन्दी मा होय रही से, या बात मन मा खटकत होती. लेकिन या बात मन ला काहे खटक रही से? येकी स्पष्ट जाणीव मोला नव्हती.

तसोच, येको कारण पोवारी भाषा की उपेक्षा होय रही से, असो विश्लेषण भी मन मा साकार भयेव नव्हतो. कालप्रवाह असोच अबाधित गति लक बव्हत रहेव.

2. अभिनव कल्पना को उदय

महाविद्यालयीन शिक्षण को बाद शिक्षणक्षेत्र मा जीवन की शुरुआत भयी. भवभूति महाविद्यालय, आमगांव मा प्राध्यापक पद पर कार्यरत होतो तब् पोवार समाज विषयक साहित्य मा, ॲड. पन्नालाल बिसेन (बालाघाट) इनकी एक कविता बाचन मिली. कविता को शीर्षक होतो–''स्वजनों कुछ तो गुणगुणाओ. . ''

''एकच घटना पर, सब प्रेक्षकों की प्रतिक्रिया अलग–अलग रव्ह् सेती. ''याच बात साहित्य ला भी लागू होसे. बिसेन साहेब की कविता बाचके मोला लगन लगेव कि पोवार समाज मा पोवारी भाषा को महत्व की जाणीव जागृति करावन को दिशा मा सामाजिक संगठनों न् आपलो कर्तव्य को सही निर्वहन न् करेव को कारण समाज मौन से. अतः मोरों मन मा एक परिकल्पना साकार भयी कि ''समाज की युवाशक्ति मा मातृभाषा पोवारी को प्रति प्रेम जागृत करेव लक व साहित्य सर्जन को संभावित विविध विषयों को, स्वयं रचित विविध लेख व कविताओं को माध्यम लक प्रचार– प्रसार करेव लक, युवाशक्ति ला पोवारी साहित्य सृजन साती उपयुक्त विविध विषयों को बोध होये व आमरी मौन युवाशक्ति भी आपलो प्रिय मायबोली मा नित्य गुणगुणावन लगे. ''

3. भाषिक क्रांति को शंखनाद

अतः सोम. 1 जनवरी 2018 ला भाषिक क्रांति को संकल्प आमगांव को आपलो इष्टमित्रों को समक्ष जाहिर करके युवाशक्ति मा माय बोली पोवारी को प्रति प्रेम, अस्मिता व स्वाभिमान जगावन को कार्य युद्धस्तर पर शुरु कर

देयेव. प्रारंभिक काल खंड मा मोरो पोवारी साहित्य को व्यापक प्रचार–प्रसार मा श्री. संतोष पुंडकर (उपाध्यक्ष–भवभूति रिसर्च अकॅडमि आमगांव.) व श्री. धनराज भगत (उपसंपादक–न्यूज प्रभात डिजिटल नेटवर्क) इनन् अत्यंत उस्फूर्त सहकार्य करीन. पोवारी भाषिक क्रांति को शंखनाद उदय व सफलता का ये दुय मुख्य साक्षीदार सेती.

4. भाषिक प्रेम को साक्षात्कार

कर्मधर्म सहयोग लक फरवरी 2018 मा मोला ठाना (आमगांव) मा हैसोक शरणागत,पायल गौतम व पायल बिसेन को आर्केस्ट्रा देखन–आयकन को सुअवसर प्राप्त भयेव. ये गायक आपलो आर्केस्ट्रा मा ''आम्हीं पोवार भाई,आमरी पोवारी बोली'' या काव्यपंक्ति बारबार, विशिष्ट अंतराल को बाद अत्यंत उमंग लक गावत जाती.

गायक–गायिकाओ को पोवारी भाषा को प्रति प्रेम देखके मी अत्यधिक प्रभावित भयेव. येको बाद प्रसिद्ध गायिका विद्या बिसेन इनको सीन परिचय भयेव. पोवारी बोली को प्रति इनको भी अथांग प्रेम की मोला जाणीव भयी. अतः मी येन् निष्कर्ष पर पहुंचेव कि मायबोली पोवारी को प्रति गहरो प्रेम समाज मा परिव्याप्त से.

5. आत्मविश्वास की उत्तुंग भरारी

''समाज मा माय बोली को प्रेम परिव्याप्त से. अतः सुयोग्य व्यक्ति द्वारा समाज मा भाषिक क्रांति आनन की आवश्यकता से. शास्त्रीय पद्धति लक भाषिक क्रांति आनन का प्रयास यदि करेव गया व भाषिक क्रांति साती जनभावनाओं ला उद्दीपित करेव गयेव त् पोवार समाज मा भाषिक क्रांति आननो सहज संभाव्य से. '' असो मोरो आत्मविश्वास मन मस्तिष्क मा परिपूर्ण उंचाई पर पहुंच गयेव व क्रांति आनन साती, मी अविरत पूर्ण उमंग लक क्रियाशील भयेव.

6. भाषा साती जगबी, भाषा साती मरजाबी

निस्वार्थ व समर्पण भाव लक संपन्न होने वालो कार्य ला दैवी शक्ति व संपूर्ण निसर्ग भी सहयोग करन तत्पर होय जासे. व व्यक्ति को हाथ लक भव्य दिव्य कार्य सहज संपन्न होनो प्रारंभ होसे. येकी साक्षात अनुभूति मोला होन लगी.

'भाषा साती जगबी, भाषा साती मरजाबी आम्हीं'' या मोरी कविता गुरु. 5 जुलाई 2018 ला प्रकाशित भयी. येन् दिवस, माजी आमदार खोमेश भाऊ राहांगडाले (तुमखेड़ा) व स्व. ॲड. पी. डी. राहांगडाले (गोंदिया) इनको यहां सामाजिक कार्यक्रम होता.

संध्याकाल को समय मी स्वयं, श्री. धनराज भगत इनको आंबेडकर चौक आमगांव स्थित दुकान मा बसेव होतो. योगायोग लक वहां श्री. बंडू भाऊ राहांगडाले (फूक्कीमेटा) ये आय गया. इनन् सांगीन कि दूही कार्यक्रम लक मी आय रही सेव. दूही कार्यक्रमों मा तुम्हारी कविता या मुख्य चर्चा को विषय होती. श्री. बंडूभाऊ राहांगडाले इनकी वाणी लक सुखद समाचार आयकेव पर क्रांति की सफलता सुनिश्चित भय गयी व भाषिक क्रांति का प्रयास निर्धास्त आगे बढ़त यशोशिखर पर पहुंच गया. पोवारी भाषिक क्रांति को दैदीप्यमान, विराट स्वरूप मा सबको योगदान से. भाषिक क्रांति को सुखद चित्र आता सब स्वजन आपलो प्रत्यक्ष नयनों लक देख रहया सेती अना साक्षात अनुभूति भी कर रहया सेती.

7. पोवार समुदाय : एक वैचारिक क्रांति

(Ideological Revolution in the Powar Community.)

भारत की आज़ादी को पश्चात् यहां शिक्षण को विपुल प्रचार–प्रसार भयेव. पोवार समुदाय को अनेक व्यक्तियों न् उच्च शिक्षा ग्रहण करीन. इनको हाथ मा समाज को नेतृत्व आयेव अना इन लोगों न् पोवार समुदाय की मातृभाषा, संस्कृति, ऐतिहासिक पहचान, स्वतंत्र अस्तित्व अना धर्म निष्ठा विरोधी नीतियों ला क्रियान्वित करनो शुरु करीन. असो काहे भयेव ? येको रहस्य जान लेनो येव पोवार समुदाय को इतिहास को एक रोचक अध्याय से.
भारतीय शिक्षण पद्धति या वामपंथी विचारधारा को लोगों द्वारा संचालित से. अतः शिक्षण द्वारा वामपंथी विचारधारा लक ग्रसित लोग तैयार होन लग्या. इन लोगों ला विभिन्न समुदायों की मातृभाषा, संस्कृति, ऐतिहासिक पहचान, धर्मनिष्ठता आदि. बात् दकियानूसी विचारों की लगन लगी अना ये इन तमाम बातों ला नष्ट करनों येलाच प्रगतिशील होन को लक्षण समझन लग्या. परिणामस्वरुप इन लोगों न् येन् तमाम सांस्कृतिक विरासत ला नष्ट करन साती वांशिक एकता को आकर्षक नारा देईन.

प्रस्तुत लेखक साती ये सब बात् बहुत असंतोषजनक होती. परिणामस्वरुप 2018 मा पोवारी भाषिक क्रांति की चिंगारी प्रगट हुई. या चिंगारी धीरु–धीरु ज्वाला बन गयी व पोवार समुदाय को ऐतिहासिक चरित्र ला नष्ट करन साती कार्यरत तमाम षड़यंत्रों ला आपलो लपेट मा लेय लेईस.

पोवार समुदाय मा आमूलाग्र क्रांति की हवा चली तब् काही समय वरि समाज को बुद्धिजीवियों ला या बात अजिबात समझ मा नहीं आयी कि समुदाय मा का होय रही से ? लेकिन मातृभाषा पोवारी, पोवारी संस्कृति, पोवारों की ऐतिहासिक पहचान, पोवारों को धार्मिक चरित्र आदि. को संरक्षण

संवर्धन को पक्ष मा शुरु प्रचार–प्रसार उनला बहुत लुभावन लगेव. परिणामस्वरुप भाषिक क्रांति को रुप मा प्रगट चिंगारी न् आमूलाग्र क्रांति की विराट ज्वाला को रुप धारण कर लेईस. अना या ज्वाला प्रगतिशील कहलावने वाली वामपंथी विचारधारा वालों की रस्ता मा एक मोठो अवरोध बनकर उभी भय गई.

पोवार समुदाय मा 2018 पासून 2022 येन् पांच साल को कालखंड मा भाषिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व वैचारिक क्रांति आयी. अतः विगत 2018 पासून पोवार समुदाय मा जो संघर्ष घटित होय रही से, वोको सैद्धांतिक स्वरुप ला आता स्पष्ट शब्दों मा परिभाषित करनो नितांत आवश्यक से. या परिभाषा भविष्य साती लाभदायक व पथप्रदर्शक साबित होये.

येव संघर्ष स्वयं ला प्रगतिशील कहलावने वाली वामपंथी विचारधारा विरुध्द आपली समस्त अनमोल विरासत को संरक्षण–संवर्धन साती कटिबद्ध राष्ट्रवादी विचारधारा को बीच को संघर्ष से. यहां हर व्यक्ति गौण से, विचारधारा मुख्य से. येव पोवार समुदाय को भविष्य को निर्णायक दौर से. समुदाय की सुशिक्षित युवा पीढ़ी न् येन् नवीन दौर मा गंभीरता पूर्वक सोचनो से कि आपलो समुदाय की भावी दिशा कौनसी रहें पाहिजे ? आम्हीं आपलो महान पूर्वजों द्वारा विरासत मा मिली समस्त सांस्कृतिक विरासत अना आपलो समुदाय को मूल चरित्र ला आता नष्ट कर देये पाहिजे का ? अथवा पूरी ताकत को साथ वोको संरक्षण–संवर्धन करन साती कटिबद्ध होये पाहिजे ?

8. पोवारी को अतीत अना भविष्य

पोवार समुदाय को कर्णधारों न् आजादी को बाद सत्तर साल वरि मातृभाषा पोवारी को उपहास करीन अन् पोवार व पोवारी येन् दूही शब्दों को तिरस्कार करीन.

लेकिन मातृभाषा पोवारी को पतन, विधि को विधान ला नामंजूर होतो. येको कारण पोवारी का सुपुत्र मातृभाषा की खोई हुई प्रतिष्ठा पुनर्प्रस्थापित करनसाती 2018 पासून तन मन धन लक प्रयत्नशील भय गया. आता मातृभाषा पोवारी को भविष्य उज्ज्वल से.

मातृभाषा पोवारी ला क्षेत्रिय भाषा को दर्जा प्राप्त करावनों येव आमरों प्रथम लक्ष्य से. आम्हीं प्रबल इच्छाशक्ति अन् संगठित प्रयासों लक येव उद्देश्य शीघ्र प्राप्त करबी. अना येनच माध्यम लक पोवार समुदाय की ऐतिहासिक पहचान पर जे संकट का बादल मंडराय रहया सेती,उनला भी दूर हटावबी.

अध्याय 18.

संशोधन की निष्पति,निष्कर्ष व सुझाव

(ConclusionA nd Suggestions)

1. प्रस्ताविक

पोवार समुदाय मा भाषिक, सांस्कृतिक व वैचारिक क्रांति आनन को प्रयास लेखक द्वारा 2018 पासून शुरु से. येन् प्रयास को प्रदीर्घ कालखंड मा पोवार समुदाय को इतिहास व वर्तमान की गहण जानकारी लेखक ला अवगत भयी. जानकारी मा अवगत तथ्यों को आधार पर लेखक द्वारा पोवार समाज विषयक सिद्धांत व मार्गदर्शक तत्वों को संशोधन संपन्न भयेव. समग्र संशोधन को सारांश निम्नलिखित से–

2. राष्ट्र : एक संकल्पना

कोनतोच विशाल भूप्रदेश को विपुल जनसमुदाय मा सांस्कृतिक समानता को कारण ''आम्हीं सब एक आज्'' येव भाव प्रबल होसे, असो समुदाय ला राष्ट्र(Nation) को नाव लक संबोधित करेव जासे. येन् परिभाषा के अनुसार भारत येव एक प्रचीन राष्ट्र आय. अना सनातन हिन्दू धर्म येव भारतवर्ष की प्राणशक्ति आय.

3. सनातन हिन्दू धर्म को महत्व

3–1. सनातन धर्म मानवमात्र ला सही राह पर चलन प्रेरित कर् से. सनातन धर्म येव न्याय–नीति को मूलस्त्रोत आय. धर्म याच वा शक्ति आय जो गलत कार्य को निषेध कर् से व असो कार्य पासून परावृत्त कर् से.

3–2. सनातन धर्म कभी भी शिक्षण को विरोध नहीं कर्. बल्कि वू सदाचार युक्त शिक्षण साती प्रेरित करन को कार्य कर् से.

3–3. सनातन धर्म कभी भी नोकरी अथवा व्यापार न करन की शिक्षा नहीं देय. बल्कि इमानदारी लक नोकरी व व्यापार करन की सीख देसे.

3–4. वामपंथी विचारधारा स्वयं सत्तासीन होन को उद्देश्य लक धर्म को सदा विरोध कर् से. धर्म को खिलाफ लोगों ला भड़काव् से.

4. जाति की उत्पत्ति व उज्ज्वल पहलू

अनेक समुदायों न् विशेष भूप्रदेश मा प्रदीर्घ काल वरी एकसाथ रहेव को कारण स्वयं की स्वतंत्र मातृभाषा व विशेष परंपराएं विकसित कर लेईन. असो समुदाय को लोगों मा वय सब परस्पर रक्तसंबंधी आती, येव भाव उत्पन्न होन को कारण जब् उन लोगों न् केवल आपलो समुदाय को भीतर विवाह संबंध प्रस्थापित करनो शुरु कर देईन व अन्य समुदायों सीन विवाह संबंध

प्रस्थापित करनो वर्जित मान लेईन तब् ये समुदाय जाति मा परिवर्तित भय गया. असो प्रकार लक जाति प्रथा की उत्पत्ति भयी से.

काही लोगों की धारणा से कि ब्राम्हणों द्वारा जातिप्रथा नर्माण करेव गयी से. लेकिन प्रस्तुत लेखक को अनुसार अग्रलिखित तीन कारणों को आधार पर या धारणा सर्वथा गलत से. प्रथम, जातिप्रथा या स्वाभाविक रुप लक अस्तित्व मा आयी, येव अभिमत तर्कसंगत से. द्वितीय, ब्राम्हणों न् जाति निर्माण करीन येको पुरावा कहीच उपलब्ध नाहाय. तृतीय, गोंडों मा भी अनेक जाति सेती. लेकिन उनको इतिहास को अनुसार भी जातियां स्वाभाविक रुप लक अस्तित्व मा आयी सेत.

जाति प्रथा को कारण भारत मा विविध बोलिभाषा अना परंपराओं को दर्शन होसे अना या विविधता भारतवर्ष ला सौंदर्य व गौरव प्रदान कर् से. '' विविधता मा राष्ट्रीय एकता'' (National Unity in Diversity) को सिद्धांत अपनायके आम्हीं आपली सांस्कृतिक विविधता को जतन करत राष्ट्रीय एकात्मता को लक्ष्य भी हासिल कर सक् सेज्.

5. पोवार समुदायः अस्तित्व को संकट

36 कुलीय पोवार समुदाय या एक स्वतंत्र जाति आय. येव समुदाय जाति की दृष्टि लक लगभग 15 लाख जनसंख्या वालों एक समुदाय से. लेकिन धर्म अना राष्ट्रीयता की दृष्टि लक व्यापक से. परंतु पोवार समाज का काही मुट्ठीभर लोग संभावित वांशिक एकता को आधार पर पोवार, भोयर अना परमार इन तीन जातियों को आपस मा विलीनीकरण करन साती प्रयत्नशील सेती. पोवार समुदाय का 99 प्रतिशत लोग असो प्रकार को विलीनीकरण को विरोध कर रहया सेती. विलीनीकरण का पक्षधर लोग, जो लोग विलीनीकरण का विरोध कर रहया सेती, उन ला आपलो संख्याबल बढ़ाओं अना व्यापक बनो, अन्यथा पोवार समुदाय समाप्त होय जाये, असो कहकर गुमराह कर रहया सेती. येको पर प्रस्तुत लेखक को प्रामाणिक अभिमत से कि पोवार समुदाय का लोग धर्म अना राष्ट्रियिता की दृष्टि लक व्यापक सेत. मनगढ़ंत वांशिक एकता या धार्मिक एकता व राष्ट्रीयता को मार्ग मा अनावश्यक अवरोध साबित होये. वांशिक एकता की राह पोवार समुदाय ला अंतर्जातीय विवाह की दिशा मा लेजाये. या राह 36कुलीय पोवार समुदाय की स्वतंत्र मातृभाषा, परंपराएं, ऐतिहासिक पहचान, पारस्परिक आत्मियता अना स्वतंत्र अस्तित्व ला भी नष्ट कर देये. अतः मनगढ़ंत वांशिक एकता को कोनतोच मूल्य पर समर्थन करनो सर्वथा गलत से. वस्तुतः विलिनीकरण को षड़यंत्र को रुप मा

पोवार समुदाय की मातृभाषा, संस्कृति, ऐतिहासिक पहचान व येको स्वतंत्र अस्तित्व पर संकट का बादल मंडराय रहया सेती.

6. विविधता मा एकताःएक उत्तम सिद्धांत

प्रत्येक व्यवस्था मा काही गुणदोष रव्हनो स्वाभाविक से. धर्म अना जातिप्रथा मा भी अनेक गुणदोष सेत. महापुरुषों द्वारा इनमा समय– समय पर आवश्यक सुधार भी करेव गया सेत. धर्म अना जातिप्रथा को मुख्य गुण येव से कि ये दूही व्यक्ति को स्वेच्छाचार पर अंकुश लगाव् सेती, अना वोला एक योग्य दिशा देन को कार्य निरंतर कर् सेती.

जे लोग धर्म व जातिप्रथा को विरोध कर् सेती उनको संबंध मा दुय प्रमुख सच्चाई उल्लेखनीय सेत. प्रथम, वय धर्म अना जाति को सकारात्मक पहलुओं सीन अनभिज्ञ सेत. द्वितीय, धर्म अना जाति नष्ट होयेव पर समाज जवर मनुष्य को कल्याण साती अन्य कोनतीच पर्यायी व्यवस्था नाहाय. येन् सच्चाई लक भी वय अनभिज्ञ सेत. वस्तुतः धर्म अना जाति को विरोध को मार्ग निःसंदेह मानव ला स्वेच्छाचार की खाई मा धकेल देये व येव स्वेच्छाचार वर्तमान स्वस्थ सामाज व्यवस्था (Social Structure) अना परिवार व्यवस्था (Family Structure) ला भी उध्वस्त कर देये. अतः विविधता मा एकता को सिद्धांत अपनावनो श्रेयस्कर से. येन् सिद्धांत ला अपनायेव लक सभी समुदायों की स्वतंत्र मातृभाषा, संस्कृति, परंपराएं, ऐतिहासिक पहचान व स्वतंत्र अस्तित्व को जतन होये. येको मा सब समुदायों को कल्याण व राष्ट्र की खुबसूरती अना गौरव भी निहित से.

विभाग 2. पोवारी दिवस को दार्शनिक अधिष्ठान

अध्याय 19.

प्रभु श्रीरामः पोवार समाज का परम् आराध्य

♦ प्रभु श्रीराम पोवार समाज का परम् श्रेष्ठ आराध्य व सर्वोच्च आदर्श सेत.

♦ प्रभु श्रीराम ला हृदय मा बसायकर पोवार समुदाय का लोग मालवा लक नगरधन पहुंच्या होता.

1. श्रीरामः भारतीय संस्कृति का केंद्रबिंदु

प्रभु श्रीराम को जन्म चैत्र शुक्ल नवमी ला भयेव होतो. येन् कारण लक चैत्र शुक्ल नवमी ला रामनवमी को नाव लक जानेव जासे. प्रभु श्रीराम भारतीय संस्कृति का केंद्रबिंदु आत. भारतीय जनमानस मा प्रभु राम को प्रति अनन्य श्रद्धा से. येको कारण चैत्र नवरात्रि प्रारंभ होताच, प्रभु श्रीराम की मनोहारी प्रतिमा सनातन हिन्दू जनमानस मा विराजमान होय जासे व जनमानस ला प्रफुल्लित कर देसे.

पोवार समुदाय येव सनातन हिन्दू संस्कृति को अभिन्न अंग आय. येव समुदाय 1700 को आसपास मालवा–राजस्थान लक रामटेक को समीप नगरधन आयेव,तत्पश्चात येन् समुदाय का लोग वर्तमान गोंदिया, भंडारा, बालाघाट अना सिवनी इन चार जिला मा स्थाई रूप लक बस गया.

2. श्रीरामः समाज का सर्वोच्च आदर्श

पोवार समुदाय को लोकसाहित्य, विवाह का नेंग–दस्तूर अना वोको द्वारा निर्मित मंदिरों को आधार पर वोकी धार्मिक आस्था अवगत होसे. 1960 को दशक वरि पोवार समुदाय की वैवाहिक पत्रिकाओं पर प्रभु श्रीराम अना माता जानकी की फोटो अवश्य रव्हत होती. विवाह गीतों मा राम,जानकी, लक्ष्मण, राजा जनक आदि. शब्द प्रचुरता लक पाया जासेती. विवाह गीतों लक विदित होसे कि पोवार समुदाय मा वर–वधू ला श्रीराम–जानकी को समान पूजनीय मानके विवाह का नेंगचार संपन्न होसेती.

3. प्रभु श्रीराम : समाज का परम् श्रेष्ठ आराध्य

पोवार समुदाय का लोग वैनगंगा अंचल को जिन गांवों मा सेती, वहां उनन् जनसहयोग लक श्रीराम मंदिर, हनुमान मंदिर को निर्माण करीन. मंदिरों मा महादेव की पींडी अना नंदी की मूर्ति स्थापित करीन. गांव मा मातामाय को बोहला को निर्माण करीन. पोवार समुदाय मा रामायण अना श्रीमद्भगवद्गीता को पाठ ला विशेष महत्व रहीं से. इन तथ्यों लक स्पष्ट

होसे कि पोवार समुदाय का प्रमुख तीन आराध्य सेत. प्रथम– प्रभु श्रीराम, द्वितीय– देवों का देव महादेव अना तृतीय माता दुर्गा भवानी ! इन तीनों आराध्यों मा प्रभु श्रीराम ला सर्वोच्च स्थान प्राप्त से.

पोवार समुदाय को हर घर मा चवरी रव्ह् से. यहां त्यौहारों को दिवस कुलदेवताओं ला नैवेद्य चढ़ायेव जासे, जेला कागुर–बिरानी को नाव लक संबोधित करेव जासे.

4. युद्धजन्य माहौल मा आगमन

जेन् कालखंड मा पोवार समुदाय का लोग मालवा–राजस्थान लक वैनगंगा अंचल मा आया, वोन् समय भारत मा औरंगजेब का जुल्म शुरू होता व वैनगंगा अंचल मा वोको खिलाफ गोंड राजा बखत बुलंद को युद्ध शुरु होतो. तात्पर्य, बहुत विपरीत परिस्थिति मा पोवार समुदाय को आगमन वैनगंगा अंचल मा भयेव होतो.

पोवार समुदाय को धार्मिक पहलू को अध्ययन (Case Study) करनो पर अवगत होसे कि येन् समुदाय का लोग जब् नवीन घर बनाव् सेती त् वय पुरानो घर को चवरी की मुट्ठीभर माटी अवश्य लिजा सेती. येन् जूनी माटी मा मंग यथावश्यक नवी माटी मिलायकर नवो घर मा चवरी बनाई जासे. अनेक घरों को आंगन मा महादेव का बोहला भी पाया जासेती.

पोवार समुदाय न् वैनगंगा अंचल मा आवन को पश्चात आपलो प्रत्येक गांव मा जेन् पद्धति लक सुंदर श्रीराम मंदिर बनवायीन वोको पर लक स्पष्ट होसे कि येन् समुदाय का लोग अत्यत संघर्षमय परिस्थिति मा स्थानांतरित भया, वोन् समय उनन् आपलो संग मा जो भी साधन–संपत्ति आनी रहेन, वोको संबंध मा निश्चय पूर्वक काहीच कव्हनो असंभव से. लेकिन एक बात निश्चयात्मक ढंग लक कव्हनो संभव से कि वोन् भयानक विपदा को माहौल मा वय आपलो मनमंदिर मा आपलो परम् श्रेष्ठ आराध्य प्रभु श्रीराम की मंगलमय मूर्ति बसायकर नगरधन पहुंच्या होता. वैनगंगा अंचल मा जब् उनन् आपला गांव बसाईन, तब् उनन् मां वैनगंगा को आंचल मा प्रभु श्रीराम जी को सुंदर व भव्य मंदिरों को निर्माण करवाईन. पोवार समुदाय मा एक दूसरो सीन मिलनो पर राम–राम लेन की परंपरा आज भी मोठो पैमानों पर प्रचलित से.

5. पोवार समुदाय को धार्मिक जीवन

उपरोक्त पंक्तियों मा पोवार समुदाय को धार्मिक जीवन वर्णित करेव गयी से. आमरो पोवार समुदाय को धार्मिक पहलू को आधार पर प्रतिलिपि हिंदी मा खींचेव गयेव एक शब्द चित्र निम्नलिखित से–

♦ आराध्य हमारे श्रीराम हैं. ♦

आराध्य हमारे श्रीराम हैं।
आराध्य हमारे हनुमान हैं।
एक दूजे से मिलने पर हम,
प्रेम से जय श्रीराम कहा करते हैं ।।

पूर्वजों ने श्रीराम मंदिर बनवायें हैं।
पूर्वजों ने हनुमान मंदिर बनवायें हैं।
एक दूजे से मिलने पर हम,
प्रेम से जय श्रीराम कहा करते हैं ।।

पूर्वज रामायण पढ़ा करते थे।
पूर्वज गीता पाठ किया करते थे।
एक दूजे से मिलने पर हम,
प्रेम से जय श्रीराम कहा करते हैं ।।

पूर्वज हमारे जब नगरधन आये थे।
प्रभु श्रीराम का स्मरण करते आये थे।
एक दूजे से मिलने पर हम,
प्रेम से जय श्रीराम कहा करते है ।।

6. सर्वप्रथम आराध्य श्रीराम

प्रभु श्रीराम ये पोवार समुदाय का सर्वप्रथम व सर्वोच्च आराध्य आत. लेकिन विगत काही साल पासून पोवार समुदाय को काही कर्णधारों द्वारा प्रभु राम ला विस्थापित करन का अनुचित प्रयास शुरु सेती. असी गंभीर परिस्थिति मा प्रभु श्रीराम को महत्व समाज ला अवगत करावनो आवश्यक से. मेल मुलाकात को समय राम–राम लेन की सुंदर परंपरा कायम रव्हन देव, असो निवेदन को साथ–साथ प्रभु श्रीराम की अलौकिकता को सुंदर चित्रण सादर करती एक कविता अग्रलिखित से–

♦ प्रथम आराध्य प्रभु श्रीराम ♦

प्रथम आराध्य प्रभु श्रीराम।
राम ला राम वानी रव्हन देव।
एक दूजो सीन मिलनों पर,
प्रेम लक राम राम कव्हन देव ।।

संस्कृति का केंद्रबिंदु श्रीराम।
समाज का केंद्रबिंदु रव्हन देव।
एक दूजो सीन मिलनों पर,
प्रेम लक राम राम कव्हन देव ।।

राष्ट्र का प्राणतत्व श्रीराम।
समाज का प्राणतत्व रव्हन देव।
एक दूजो सीन मिलनों पर,
प्रेम लक राम राम कव्हन देव ।।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम।
निज नयनों मा झलकन देव।
एक दूजो सीन मिलनों पर,
प्रेम लक राम राम कव्हन देव ।।

सूर्य समान तेजस्वी श्रीराम।
उनला विस्थापित ना होन देव।
एक दूजो सीन मिलनों पर,
प्रेम लक राम राम कव्हन देव ।।

सर्वप्रथम आराध्य श्रीराम।
उनला सर्वप्रथम रव्हन देव।
एक दूजो सीन मिलनों पर,
प्रेम लक राम राम कव्हन देव ।।

श्रीरामनवमी, गुरु. 30/03/2023

अध्याय 20.

सनातन हिन्दू धर्म का ईश्वर :आमरा शाश्वत प्रेरणास्रोत

1. अनौपचारिक शिक्षण (Informal Education)

सनातन हिन्दू धर्म येव अत्यंत प्राचीन महान धर्म से. सनातन धर्म न् संसार ला सभ्यता को पयलो पाठ सिखाईस. सनातन धर्म मा अनेक देवी–देवता अना त्यौहार सेत.

आम्हीं आपलो देवी देवताओं की गोटा अथवा धातू की मूर्ति को रुप मा पूजा कर् सेज्. येको कारण नासमझ व्यक्तियों ला लग् से कि मूर्ति पूजा लक का फायदा से ? लेकिन इनकी या सोच अनुभवहीन, उथर ना अविवेकपूर्ण से.

वास्तव मा आमरो हर भगवान को एक इतिहास, एक कहानी अथवा कथा से. येको कारण आमरो प्रत्येक भगवान आमला नैतिक मूल्यों की भरपूर शिक्षा देसे.

भगवान श्रीराम ये भारतीय संस्कृति का केंद्रबिंदु आत. वय मर्यादा पुरुषोत्तम सेत. येको कारण उनको स्मरण करेव लक आमला आपलो जीवन मा नैतिक मूल्यों ला धारण करन की शिक्षा मिल् से. रामायण को हर चरित्र लक आमला सद्‌गुणों की शिक्षा मिल् से. वीर हनुमान जी को इतिहास आमला अवगत रहेव लक, उनकी भक्ति लक आमला स्फूर्ति अना शक्ति धारण करन की सीख मिल् से.

भगवान श्रीकृष्ण ये आमला कर्मयोग की शिक्षा देसेती. शिवशंकर भोलेनाथ आमला वैराग्य सिखाव् सेत. माता दुर्गा की भक्ति लक आमला दुष्टों को प्रतिकार करन की सीख मिल् से. तुलसी वृंदावन अना गौ माता की पूजा लक वृक्ष–वनस्पति अना पशु पक्षी को प्रति संवेदना विकसित होसे.

साम्यवादी विचारक कार्ल मार्क्स को कथन से कि ''धर्म येव अफीम की गोली आय.''

कार्ल मार्क्स को कथन पर प्रस्तुत लेखक को अभिमत से कि ''सनातन हिन्दू धर्म या संजीवनी आय. सनातन धर्म येव मानव ला जीवन की सही दृष्टि अना दिशा देसे. वास्तव मा धर्म नहीं बल्कि अंधविश्वास येव अफीम की गोली आय. अतः धर्म ला सही मायनो मा समझन की व नवी पीढ़ी ला धर्म की शिक्षा देन को साथ–साथ वोको मा वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करन की आवश्यकता से.''

सनातन हिन्दू धर्म मा व्रत–उपवास ला भी महत्वपूर्ण स्थान से. व्रत–उपवास ये स्वास्थ्य साती, मन पर नियंत्रण ठेवन की क्षमता विकसित करन व आत्मविश्वास बढ़ावन को दृष्टि लक लाभकारी सेत.

रामायण अना श्रीमद्भगवद्गीता ये सनातन हिन्दू धर्म का दुय श्रेष्ठतम ग्रन्थ सेत. येन् दूय ग्रंथों मा संपूर्ण हिन्दू जीवन दर्शन निहित से. उत्तम जीवन की प्राप्ति साती इनको श्रद्धापूर्वक पाठ करनो, इनकी सीख अंगीकार करनों व येन् दूही ग्रंथों को प्रति नवी पीढ़ी मा सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करनो येव प्रत्येक सनातनी हिन्दू को प्राथमिक दायित्व से.

2. राम–राम की परंपरा : मनोवैज्ञानिक व्याख्या

राम नाम मा मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम को संपूर्ण इतिहास, संपूर्ण जीवन चरित्र व संपूर्ण जीवन दर्शन भी समाविष्ट से. येको कारण राम को नाव लेयेव लक श्री रघुनंदन श्रीराम को संपूर्ण इतिहास, जीवन चरित्र व जीवनदर्शन को स्मरण होय जासे. अना अनायास वोन् श्रेष्ठ इतिहास,जीवन चरित्र व जीवनदर्शन को मानव मन पर अप्रत्यक्ष संस्कार होसेती. परिणामस्वरुप राम नाम को स्मरण होयेव लक काही जीवनमूल्यों ला मनुष्य आत्मसात कर लेसे. येको कारण व्यक्ति व समाज मा काही चांगलो गुणों को बीजारोपण होसे व व्यक्ति अना समाज दूही को कल्याण होसे.

उपरोक्त समझ को कारण समस्त सनातनी हिन्दू समाज मा परस्पर मुलाकात होयेव पर अथवा बिदाई को समय भी परस्पर ''राम राम'' लेन की परंपरा अस्तित्व मा आयी.

परंतु 1947 मा भारत ला स्वतंत्रता प्राप्त होन को पश्चात यहां शिक्षण को व्यापक प्रचार–प्रसार भयेव, सनातन धर्म विरोधी अनेक विचारधाराओं को उदय भयेव, वंशवाद की संकुचित विचारधारा भी अस्तित्व मा आयी अना पाश्चात्यीकरण की बाढ़ भी आयी. येको कारण परस्पर राम– राम लेन की परंपरा कम होन लगी.

वैनगंगा तटीय 36कुलीय पोवार समाज येव सनातन हिन्दू धर्म को अनुयाई से व येव समाज मूलतः रामभक्त से. येको कारण येको लोकसाहित्य मा,विवाह गीतों मा राम,जानकी,लक्ष्मण, राजा दशरथ,राजा जनक आदि. नाव प्रचुरता लक पायेव जासेती. पोवार समाज मा राम– राम लेन की परंपरा आज भी अडिगता लक अस्तित्व मा से.

परंतु विगत अनेक साल पासून पाश्चात्यीकरण को धून मा अनेक शिक्षित व्यक्ति राम–राम लेनो मा कमीपन महसूस कर रहया सेती. तसोच पोवार समुदाय का काही पुढारी संकुचित वंशवाद ला पुरस्कृत करके वय

राम–राम लेन की सुस्थापित परंपरा समाप्त करके पोवार समाज मा लक प्रभु श्रीराम को नाव ला विस्थापित करन साती प्रयत्नशील सेत.

प्रभु श्रीराम को परम् पावन नाव दैनंदिन जीवन मा लक हद्दपार होयेव लक प्रभु श्रीराम को इतिहास, चरित्र व जीवन दर्शन को प्रभाव पोवारी जनमानस पर लक कम होये. येकी अंतिम परिणति प्रभु श्रीराम समान एक संस्कारक्षम, परम् पावन, अद्वितीय सांस्कृतिक तत्व (Unique Cultural factor) आपलो दैनंदिन जीवन मा लक हद्दपार होन को अथवा खोय देन को स्वरुप मा होये. परिणामस्वरुप स्वरुप येन् अध्याय को प्रथम मुद्दा मा अंकित राम नाम को लाभ पासून पोवार समुदाय की नवीन पीढ़ी पूर्णतः वंचित होये.

अतः पोवार समाज को प्रबुद्ध वर्ग ला निवेदन से कि आओ! चलों!! सब जन स्वयं पासून शुरुआत करके आपलो समाज मा प्रचलित राम–राम अथवा जय श्रीराम कव्हन की परम् पावन परंपरा मा पूर्ण स्वाभिमान को साथ पुनः नवप्राण संचारित करबी.

3. देवी–देवताओं को महत्व

सनातन हिन्दू धर्म मा अनेक समुदायों को समावेश से. आजादी को पश्चात भारतवर्ष मा वामपंथी विचारधारा, बहुजनवादी विचारधारा, धर्म निरपेक्षता व विभिन्न सम्प्रदायों को हिन्दू विरोधी विचारों को कारण हिन्दुओं मा आपलोच श्रेष्ठ धर्म को प्रति अनिष्ठा व अश्रद्धा का भाव तेज गति लक विकसित भया सेत. लेकिन प्रस्तुत लेखक की दृढ़ मान्यता से कि सनातन हिन्दू धर्म संसार मा महान से. पोवार समाज को विशेष संदर्भ मा सनातन देवी देवताओं को प्रति लेखक को मनोभावों को एक शब्द चित्र काव्य स्वरुप मा निम्नलिखित है–

♦ पोवारी संस्कृति की वास्तविकता ♦

प्रभु राम आमरा आराध्य महान।
वीर हनुमान आमरा स्फूर्ति स्थान।
आमरा आराध्य आमला देसेती संस्कार,
ये आती पोवारी संस्कृति का गौरव स्थान ।।

रामायण येव ग्रंथ आमरों से महान।
श्रीमद्भगवद्गीता से आमरी श्रद्धा स्थान।
आमरी संस्कृति ला इन ग्रंथों को आधार,
ये आती पोवारी संस्कृति का गौरव स्थान ।।

शिवशंकर भोलेनाथ ये निष्ठा स्थान।
मां अंबे भवानी से मुख्य भक्ति स्थान।
इनकी आराधना देसे आमला संस्कार,
ये आती पोवारी संस्कृति का गौरव स्थान ।।

श्रीराम संस्कृति का केंद्रबिंदु महान।
पूर्वजों न् देईन उनला सर्वोच्च स्थान।
राम को नाम जोड़ देसे हृदय का तार,
मेल मुलाकात मा कहो प्रेम लक श्रीराम ।।

बुध. 29/03/2023.

●●●

अध्याय 21.

गांव की मातामाय : गांव की आस्था को केंद्रबिंदु

वैनगंगा अंचल को हर गांव मा श्रीराम मंदिर, हनुमान मंदिर व मातामाय को बोहला से. सब जाति समुदाय का लोग मातामाय ला मां दुर्गा भवानी मान् सेती. विवाह मा मातामाय ला हल्दी चढ़ाव् सेती. मातामाय को बोहला जवर नवरदेव उतार् सेती. शारदीय नवरात्रि मा मातामाय को चौक मा दुर्गा जी की मूर्ति स्थापित करके नवरात्रि पर्व मनायेव जासे. चैत्र नवरात्रि मा मातामाय जवर जवारा पेरेव जासे व समस्त गांव का लोग भक्तिभाव लक मातामाय की पूजा–अर्चना कर् सेत.

विगत काही साल पासून पोवार समाज को काही कर्णधारों न् समस्त अग्निवंशीय क्षत्रियों को आपस मा विलिनिकरण को उद्देश्य लक सबको मन मा माता धारेश्वरी गढ़कालिका को प्रति श्रद्धा जगावन को प्रयास करीन. ये कर्णधार यहांच नहीं रुक्या, बल्कि इनको द्वारा गांव की मातामाय या माता धारेश्वरी गढ़कालिकाच आय, असी मनगढ़ंत संकल्पना पोवार समुदाय मा रुढ़ करन का प्रयास शुरु सेत. येको कारण निकट भविष्य मा एकच देवी ला पोवार समाज न् गढ़कालिका कव्हनो व हिन्दू धर्म को सब समुदायों न् मातामाय (मां दुर्गा भवानी) संबोधित करनों, असो प्रकार देखनों मा आये व संपूर्ण हिन्दू समाज की धार्मिक भावना मा एक सूक्ष्म दरार उत्पन्न होये. या दरार हिन्दू धर्म मा समाहित समस्त जाति अना पोवार समुदाय को बीच पड़े.

समस्त अग्निवंशीय क्षत्रियों मा एकता निर्माण करनसाती हिन्दू समाज की धार्मिक समरसता व भावनिक एकात्मकता पर आघात करनों येव कोनतोच मूल्य पर समर्थनीय नाहाय. देवी का विभिन्न रुप सेती. अतः निवेदन से कि मतामाय की भक्ति मातामाय को नाव लक करन देव अना माता धारेश्वरी गढ़कालिका की भक्ति माता गढ़कालिका को नाव लक करन देव. अग्निवंशियों को विलिनिकरन को प्रयास को कारण हिन्दुओं की धार्मिक समरसता अना गांव की एकता–अखंडता पर प्रतिकूल परिणाम होये असो कोनतोही कृत्य पोवार समुदाय को कोनतो भी व्यक्ति द्वारा नहीं होये पाहिजे. विशेषतः पोवार समुदाय को कर्णधारों न् येको भान ठेवनों परम् आवश्यक से.

●●●

अध्याय 22.

धर्म व जाती : महत्वपूर्ण विवेचन

1. समाजोत्थान को धर्मो रक्षति रक्षितः सिद्धांत

धर्मों रक्षति रक्षितः येव संस्कृत को प्रसिद्ध श्लोक से. येव श्लोक श्रीमद्भगवद्गीता व मनुस्मृति मा पायेव जासे.

समाज व्यवस्था कायम ठेवनसाती जे सद्गुण मानव द्वारा धारण करनों आवश्यक से, वोन् सद्गुणों को समुच्चय ला धर्म को नाव लक संबोधित करेव जासे. येन् मान्यता को आधार पर सनातन हिन्दू धर्म अस्तित्व मा आयी से.

धर्म लक संस्कृति, संस्कार अना परंपराओं को उदय भयी से. संस्कृति व संस्कारों ला धारण करेव लक मानव जीवन मा सुख–शांति अना आनंद की प्राप्ति होसे व मानव वंदनीय बन जासे. येवच मानव जीवन को श्रेष्ठ मार्ग आय. मानव ला येन् श्रेष्ठ पथ को बोध होनो, येवच सही ज्ञान आय. संस्कार अना ज्ञान लक समाज व्यवस्था कायम रव्ह् से व सब ला सुरक्षा प्राप्त होसे. येको कारण कहेव जासे कि ''यदि आम्हीं धर्म को रक्षण करबी त् धर्म आमरों रक्षण करें. ''

धर्म अना संस्कृति ला धारण करन को अर्थ होसे संस्कारों ला जागृत करनों ! संस्कारों ला जागृत करके संस्कारित जीवन जगनों येव प्रत्येक मानव को प्रथम लक्ष्य रहें पाहिजे. कारण संस्कार यदि नाहात अना केवल विपुल संपत्ति से त्, वा संपत्ति मनुष्य ला पतीत कर देसे अना नष्ट कर देसे. याच बात समाजोत्थान ला भी लागू होसे. समाजोत्थान का चाहें लाख प्रयास करों परंतु जबवरि कोनतोही समाज आपली नवी पीढ़ी मा सद्गुणों अथवा संस्कारों को बीजारोपण करन का प्रयास नहीं कर् तबवरि वोन् समाज को विकास सार्थक नहीं होय. तात्पर्य, संस्कारक्षम समाज को निर्माण येव समाजोत्थान को अत्यंत महत्वपूर्ण पहलू से.

धर्मो रक्षति रक्षितः को एक अन्य अर्थ येव भी होसे कि सनातन हिन्दू धर्म येव आमरों धर्म आय अना येव आमरों राष्ट्र की प्राणशक्ति भी आय. अतः आम्हीं सब सनातन हिन्दू धर्म को अनुयायियों न् जागृत रयके आपलो धर्म को रक्षण करें पाहिजे. कारण जबवरि सनातन धर्म अस्तित्व मा से, तबवरि राष्ट्र को रुप मा आमरों अस्तित्व कायम रहें. जेन् दिवस ला सनातन हिन्दू धर्म कमजोर होय जाये, वोन् दिवस ला राष्ट्र को रुप मा आमरों स्वतंत्र अस्तित्व भी नष्ट होये.

2. जाति की नैसर्गिक उत्पत्ति को सिद्धांत (Theory of Natural Origin of the Castes)

मानव न् अलग अलग समुदाय बनायके विशेष भूप्रदेश मा प्रदीर्घ काल वरी एकसाथ रव्हन को कारण स्वयं की स्वतंत्र मातृभाषा अना विशेष परंपराएं विकसित कर लेईस. कालांतर मा असो समुदाय को लोगों मा, वय सब परस्पर रक्तसंबंधी सेत, येव भाव उत्पन्न होन को कारण जब् केवल आपलोच समुदाय मा विवाह संबंध प्रस्थापित करनो शुरु कर देईन व अन्य समुदायों लक विवाह संबंध प्रस्थापित करनो वर्जित मान लेईन तब् येन् प्रकार का समुदाय जाति मा परिवर्तित भय गया. असो पद्धति लक जाति प्रथा की स्वाभाविक रुप लक उत्पत्ति भयी से.

पूर्व सरसंघचालक पूजनीय गोलवलकर गुरूजी न् ''We and our nationhood defined'' येन् ग्रंथ (p.32) मा नमूद करीसेन कि स्वाभाविक रुप लक जातिप्रथा की उत्पत्ति भयी से. येन् ग्रंथ मा जाति बनन की स्वाभाविक प्रक्रिया ला भी गुरुजी न् समझाई सेन. अन्य तथ्यों को आधार पर व तर्क को दृष्टि लक भी उनका विचार विश्वसनीय, प्रामाणिक व वैध सेत.

गोंड जनजाति मा अनेक जाति सेत. उनको इतिहास को माध्यम लक भी आमला येव निष्कर्ष प्राप्त होसे कि जातिप्रथा या पंडितों अथवा सनातन हिन्दू धर्म न् नहीं बनाई सेस. बल्कि जातिप्रथा स्वाभाविक रुप लक अस्तित्व मा आयी से.

अलग–अलग समूह बनायके रव्हनो या मानव की स्वाभाविक (lnstinctive) प्रवृत्ति से. जाति व्यवस्था या येन् जन्मजात प्रवृत्ति की परिणति आय.

●●●

अध्याय 23

पोवारी दिवस : व्याख्या, महत्व व उद्देश्य

1. प्रास्ताविक

पोवार समुदाय द्वारा आपली भाषा, संस्कृति व ऐतिहासिक पहचान को सम्मान मा पोवारी दिवस मनायेव जासे. पोवारी संस्कृति या सनातन हिन्दू संस्कृति को अभिन्न अंग आय. अतः हिन्दू नववर्ष दिन ला पोवारी दिवस मनायेव लक पोवारी भाषा व संस्कृति को प्रचार–प्रसार होये अना नवी पीढ़ी मा आपली मातृभाषा, संस्कृति व सनातन हिन्दू धर्म को प्रति निष्ठा मजबूत होये. असो विश्वास को साथ पोवारी दिवस मनायेव जासे. अतः पोवारी दिवस की नवीन संकल्पना की विस्तृत जानकारी समाज ला अवगत करावनो येव येन् अध्याय को प्रमुख उद्देश्य से.

2. पोवारी दिवस की व्याख्या (Definition of the Powari Diwas)

अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार) महासंघ या 36 कुलीय पोवार समुदाय की सर्वोच्च संस्था से. महासंघ द्वारा इ. स. 2020 पासून नवी पीढ़ी मा आपली मातृभाषा, संस्कृति, धर्म, पहचान व स्वतंत्र अस्तित्व को संरक्षण करन की व्यापक जागृति उत्पन्न करन को उद्देश्य लक हिन्दू नववर्ष दिन ला ''पोवारी दिवस'' को रुप मा मनायेव जासे.

पोवारी दिवस या संकल्पना केवल मातृभाषा पोवारी पुरती मर्यादित नाहाय. पोवार समाज मा आपली ऐतिहासिक पहचान (मातृभाषा व समाज को नाव) को प्रति निष्ठा विकसित करके समाज मा भाषिक, सामाजिक,सांस्कृतिक व धार्मिक चेतना विकसित करनो ये पोवारी दिवस का प्रमुख उद्देश्य व कार्य सेत. पोवार समाज को अतीत गौरवशाली होतो,येकी जाणीव कायम ठेयके समाज को उज्ज्वल भविष्य साकार करनो येव ''पोवारी दिवस'' मनावन को पावन लक्ष्य से.

हर साल 36 कुलीय पोवार समाज द्वारा हिन्दू नववर्ष दिन ला पोवारी दिवस मनायेव जासे. पोवारी दिवस को उपलक्ष्य मा पोवार समाज को समस्त साहित्यिकों द्वारा विपुल पोवारी साहित्य की निर्मिति, व्हिडिओ रेकार्डिंग व प्रकाशन,पोवारी भाषा मा शुभकामनाओं को आदान प्रदान आदि. विभिन्न प्रकार लक पोवारी दिवस, पोवारी संस्कृति व एकता ला चैतन्यमय बनायेव जासे.

3. पोवारी दिवस की आवश्यकता (Nessecity of the Powari Diwas)

पोवारी दिवस मनावन की प्रमुख आवश्यकता निम्नलिखित से–

(1) पोवार समाज को काही संगठनों द्वारा समाज मा मातृभाषा

पोवारी व ऐतिहासिक पहचान को प्रति तिरस्कार का भाव उत्पन्न करके समाज की ऐतिहासिक पहचान नष्ट करन का षड़यंत्र शुरु सेत. तात्पर्य, मातृभाषा पोवारी व पोवार समाज को ऐतिहासिक नाव पर संकट का बादल मंडराय रहया सेती. अतः पोवार समुदाय द्वारा आपली ऐतिहासिक पहचान बचावन साती पोवारी दिवस मनावनो आवश्यक से.

(2) सनातन हिन्दू येव आमरो धर्म आय. पोवारी संस्कृति ला सनातन हिन्दू धर्म व संस्कृति को अधिष्ठान से. रामायण व श्रीमद्भगवद्गीता ये आमरा श्रेष्ठतम ग्रंथ आती. प्रभु श्रीराम ये आमरा श्रेष्ठतम आराध्य आत. येवच ऐतिहासिक सत्य से. परंतु पोवार समुदाय को काही तथाकथित कर्णधारों द्वारा समाज मा मातृभाषा व ऐतिहासिक पहचान को प्रति तिरस्कार उत्पन्न करन को साथ–साथ नवा–नवा आदर्श प्रस्तुत करेव गया. येको कारण पोवार समुदाय मा प्रभु श्रीराम, भगवान महादेव, मां दुर्गा भवानी व संपूर्ण सनातन हिन्दू धर्म दुर्लक्षित व उपेक्षित होय जाये कि का ? असी गंभीर परिस्थिति उत्पन्न भय गयी. येको कारण 36कुलीय पोवार समुदाय ला सनातनी हिन्दू जीवनधारा सीन जोड़ के ठेवनसाती पोवारी दिवस मनावन की परंपरा प्रस्थापित करनो अनिवार्य भय गयेव होतो.

4. उद्देश्य (Aim and Objectives)

मातृभाषा पोवारी व समाज की ऐतिहासिक पहचान ला पुनर्प्रतिष्ठित करन को साथ–साथ 36 कुलीय पोवार समाज ला सनातनी हिन्दू जीवनधारा सीन जोड़ के ठेवन को पावन उद्देश्य लक पोवारी दिवस मनावन की नवी परंपरा प्रारंभ भयी से.

पोवार समाज की संस्कृति ला सनातन हिन्दू धर्म को अधिष्ठान प्राप्त से अतः पोवारी दिवस ला भी सनातन हिन्दू संस्कृति को मजबूत अधिष्ठान (Philosophical Base) देयेव गयी से. पोवार समाज की सांस्कृतिक व ऐतिहासिक पार्श्वभूमी को आधार पर समाज को उज्ज्वल भविष्य साकार करनो येव पोवारी दिवस मनावन को पावन उद्देश्य से. प्रस्तुत लेखक को अनुसार हिन्दू नववर्ष दिन ला पोवारी दिवस मनावन को महत्व निम्नलिखित से–

हिन्दू नववर्ष ला पोवारी दिन
मनावन की संकल्पना से महान।
मानों देवघर की चवरी पर
दिवो ना बाती उजारनों समान ।।

अध्यक्ष 24.

पोवारी दिवस : दार्शनिक अधिष्ठान पर आधारित प्रेरक कविता

पोवार समाज की सांस्कृतिक व ऐतिहासिक पार्श्वभूमी को आधार पर समाज को उज्ज्वल भविष्य साकार करनो येव पोवारी दिवस मनावन को पावन उद्देश्य से. अतः पोवारी दिवस ला चालना देन साती प्रस्तुत लेखक द्वारा अनेक भावपूर्ण कविताओं को सृजन करेव गयी से. येन् कविताओं ला समाजोत्थान अथवा समाज नवनिर्माण की कविताओं को नाव लक संबोधित करनो भी सर्वथा संयुक्तिक से. समाजोत्थान की प्रमुख 15 कविता अग्रलिखित सेती–

1. पोवारी दिवस

पोवार समाज की वास्तविकता

(भारतीय नववर्ष दिन, पोवारी दिन)

पोवार आम्हीं, मातृभाषा पोवारी।
आराध्य आमरा श्रीराम धनुष धारी।
श्री रामायण अना श्रीमद्भगवद्गीता,
ये श्रेष्ठ ग्रंथ आमरा कल्याणकारी ।।

संस्कृति आमरी से सुंदर मनोहारी।
राष्ट्र भक्ति की परंपरा से आमरी।
इतिहास मा कऱ्या संकटों को सामना,
हिम्मत आमरी अजवरि कभी न हारी ।।

कर्म प्रधान सोच रहीं सदा आमरी ।
आम्हीं सेज् संस्कृति का सच्चा प्रहरी ।
अजिंक्य से सदा आमरी विचारधारा,
शक्तिस्थान से आमरों सुदर्शन धारी ।।

गुरु. 9/3/2023.

2. पोवारी दिवस

चलों! चलों! युवा साथियों तुम्हीं चलों

(भारतीय नववर्ष दिन,पोवारी दिन)

चलों!चलों! युवा साथियों तुम्हीं चलों।
आओ! पोवारी दिवस मनावन चलों।

तुम्हीं! ध्वजा पोवारी की धरके चलों।
यहां पोवारी को रंग बिखेरन चलों।
समाज की ऐतिहासिक पहचान धरके,
आओ ! पोवारी दिवस मनावन चलों ।।

तुम्हीं! ध्वजा पूर्वजों की धरके चलों।
यहां एकता को रंग बिखेरन चलों।
समाज की ऐतिहासिक पहचान धरके,
आओं ! पोवारी दिवस मनावन चलों ।।

तुम्हीं! पूर्वजों ला याद करके चलों।
यहां पूर्वजों की पहचान धरके चलों।
समाज की ऐतिहासिक पहचान धरके,
आओं!पोवारी दिवस मनावन चलों ।।

तुम्हीं! पोवारी स्वाभिमान धरके चलों।
यहां पोवारी स्वाभिमान बढ़ावन चलों।
समाज की ऐतिहासिक पहचान धरके,
आओं! पोवारी दिवस मनावन चलों ।।

गुरु 9/03/2023

3 पोवारी दिवस

चलों! चलों! प्रिय स्वजनों तुम्हीं चलों

(भारतीय नववर्ष दिन,पोवारी दिन)

चलों! चलों! प्रिय स्वजनों तुम्हीं चलों।
आओ! पोवारी दिवस मनावन चलों।

तुम्हीं! चेतना की ज्योति धरके चलों।
यहां पोवारी चेतना जगावन चलों।
आपली भाषा को स्वाभिमान धरके,
चलों!पोवारी दिवस मनावन चलों ।।

तुम्हीं ! एकता को भाव धरके चलों।
यहां संगठन की शक्ति जगावन चलों।
आपली भाषा को स्वाभिमान धरके,
चलों !पोवारी दिवस मनावन चलों ।।

तुम्हीं! साहित्य की ज्योति धरके चलों।
यहां साहित्यिक प्रेम जगावन चलों।
आपली भाषा को स्वाभिमान धरके,
चलों! पोवारी दिवस मनावन चलों ।।

तुम्हीं! पूर्वजों की पहचान धरके चलों।
यहां आपलो इतिहास बचावन चलों।
आपली भाषा को स्वाभिमान धरके,
चलों ! पोवारी दिवस मनावन चलों ।।

शुक्र 10/03/2023

4. पोवारी दिवस

सृष्टि मा बसंत ऋतु को सौंदर्य से

(भारतीय नववर्ष दिन,पोवारी दिन)

सृष्टि मा बसंत ऋतु को सौंदर्य से।
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को दिन से।
हिन्दू नववर्ष दिन की शुरुआत से।
असो शुभ दिन ला से पोवारी दिवस,
समाज साती या गौरव की बात से ।।

सृष्टि मा बसंत ऋतु की बहार से।
प्रभु श्रीराम को विजयोत्सव से।
विक्रमादित्य को विजयोत्सव से।
असो पावन दिन ला से पोवारी दिवस,
समाज साती या गौरव की बात से ।।

सृष्टि मा बसंत ऋतु को उल्लास से।
चैत्र नवरात्रि पर्व को शुभारंभ से।
विश्व ज्योतिष दिवस को उत्सव से।
असो मंगल दिन ला से पोवारी दिवस,
समाज साती या गौरव की बात से ।।

सृष्टि मा रंगीबेरंगी माहौल से।
सृष्टि को उत्पत्ति को पावन दिन से।
सूर्य को उत्तरायण को महापर्व से।
येन् दिवस मनावबी पोवारी दिवस,
समाज साती या गौरव की बात से ।।

रवि. 12/03/2023

5. पोवारी दिवस

पोवार समाज को मोठो दिन से पोवारी

(भारतीय नववर्ष दिन,पोवारी दिन)

पोवार समाज को मोठो दिन से पोवारी।
अस्तित्व बचावन को संकल्प से पोवारी ।।

पोवारी दिन से पोवारी पहचान को।
पोवारी दिन से पोवारी स्वाभिमान को।
पोवार समाज को मोठो दिन से पोवारी।
अस्तित्व बचावन को संकल्प से पोवारी ।।

येव दिन से पहचान को शंखनाद को।
येव दिन से स्वाभिमान को शंखनाद को।
पोवार समाज को मोठो दिन से पोवारी।
अस्तित्व बचावन को संकल्प से पोवारी ।।

पोवारी दिन से भाषा को सम्मान को।
पोवारी दिन से भाषा को गौरवगान को।
पोवार समाज को मोठो दिन से पोवारी।
अस्तित्व बचावन को संकल्प से पोवारी ।।

येव दिन से शक्ति की आराधना को।
येव दिन से श्रीराम की आराधना को।
पोवार समाज को मोठो दिन से पोवारी।
अस्तित्व बचावन को संकल्प से पोवारी ।।

मंग. 14/03/2023

6. पोवारी दिवस

चलों! पोवारी दिवस मनावन चलों

(भारतीय नववर्ष दिन, पोवारी दिन)

चलों! पोवारी दिवस मनावन चलों।
छत्तीस कुल की एकता बढ़ावन चलों।
मंग नहीं मंडरान का काला–काला बादल,
चलों!समाज मा नवी चेतना जगावन चलों ।।

चलों! इतिहास पर निष्ठा देखावन चलों।
मूल पहचान पर निज निष्ठा बढ़ावन चलों।
मंग नहीं मंडरान का काला–काला बादल,
चलों!समाज मा नवी चेतना जगावन चलों ।।

चलों!समाज मा अस्मिता जगावन चलों।
आपस मा एकता– ममता बढ़ावन चलों।
मंग नहीं मंडरान का काला–काला बादल,
चलों!समाज मा नवी चेतना जगावन चलों ।।

चलों ! शक्ति को एहसास करावन चलों।
निज समाज को सामर्थ्य देखावन चलों।
मंग नहीं मंडरान का काला– काला बादल,
चलों!समाज मा नवी चेतना जगावन चलों ।।

बुध. 15/03/2023.

7. पोवारी दिवस

पोवारी दिवस को दार्शनिक अधिष्ठान

(भारतीय नववर्ष दिन,पोवारी दिन)

सुनो ! सुनाऊं सू दर्शन पोवारी दिन को।
चलों! आलोक फैलावन पोवारी दिन को ।।

पोवारी दिन से पोवारी अस्मिता को।
पोवारी दिन से पोवारी स्वाभिमान को।
छत्तीस कुलीय पोवारों को येव दिन से,
ऐतिहासिक पहचान को शंखनाद को ।।

पोवारी दिन से धार्मिक अस्मिता को।
पोवारी दिन से धार्मिक स्वाभिमान को।
छत्तीस कुलीय पोवारों को येव दिन से,
सनातन हिन्दू धर्म को शंखनाद को ।।

पोवारी दिन से भाषिक अस्मिता को।
पोवारी दिन से भाषिक स्वाभिमान को।
छत्तीस कुलीय पोवारों को येव दिन से,
पोवारी भाषा उत्कर्ष को शंखनाद को ।।

पोवारी दिन से आराध्य प्रभु राम को।
पोवारी दिन से आदिशक्ति मां दुर्गा को।
छत्तीस कुलीय पोवारों को येव दिन से,
मूल सांस्कृतिक निष्ठा को शंखनाद को ।।

गुरु. 16/03/2023

8. पोवारी दिवस

हिन्दू नववर्ष को हाथ धरके आयेव

(भारतीय नववर्ष दिन, पोवारी दिन)

हिन्दू नववर्ष को हाथ धर के येव आयेव।
बसंती बहारों ला साथ धर के येव आयेव ।।

समाज मा धर्म–चेतना जगावन आयेव।
समाज मा भाषिक चेतना जगावन आयेव।
आयेव आयेव आमरो पोवारी दिन आयेव।
बसंती बहारों ला साथ धरके येव आयेव ।।

स्वजनों ला नीति–धर्म समझावन आयेव।
मूल पहचान को प्रति प्रेम जगावन आयेव।
आयेव आयेव आमरो पोवारी दिन आयेव।
बसंती बहारों ला साथ धरके येव आयेव ।।

समाज हित की बात् समझावन आयेव।
भूलेव जनों की घरवापसी करावन आयेव।
आयेव आयेव आमरो पोवारी दिन आयेव।
बसंती बहारों ला साथ धरके येव आयेव ।।

शुक्र. 17/03/2023

9. पोवारी दिवस

चलों! पोवारी दिन मनावबी हर साल

(भारतीय नववर्ष दिन,पोवारी दिन)

चलों!पोवारी दिन मनावबी हर साल।
समाज की पहचान ठेवबी खुशहाल ।।

पोवारी दिवस से तारणहार।
समाज की नैया करें येव पार।
पोवारी दिन से समाज की ढाल।
चलों!पोवारी दिन मनावबी हर साल ।।

समाज की पहचान पर प्रहार।
स्वछंदता कर रहीं से बार– बार।
पोवारी दिन से एकता की ढाल।
चलों!पोवारी दिन मनावबी हर साल ।।

आम्हीं सब समाज का शिल्पकार।
समाज की पहचान ठेवबी बरकरार।
पोवारी दिन मिटाए साजिशों को जाल।
चलों!पोवारी दिन मनावबी हर साल ।।

शनि. 18/03/2023

10. पोवारी दिवस

स्वागत से पोवारी दिन को

(भारतीय नववर्ष दिन, पोवारी दिन)

स्वागत से पोवारी दिन को।
मन आनंदित से जन–जन को ।।

सूर्य उत्तरायण को दिन से।
सृष्टि मा उल्लास को संचार से।
मोठो दिन से पोवारी जागर को।
मन आनंदित से जन–जन को ।।

मां दुर्गा ला वंदन को दिन से।
प्रभु राम ला वंदन को दिन से।
मोठो दिन से पोवारी जागर को।
मन आनंदित से जन–जन को ।।

धार्मिक अस्मिता को दिन से।
भाषिक अस्मिता को दिन से।
मोठो दिन से पोवारी जागर को।
मन आनंदित से जन–जन को ।।

हिन्दुओं को पावन पर्व से।
पोवारी को पावन पर्व से।
मोठो दिन से पोवारी जागर को।
मन आनंदित से जन–जन को ।।

रवि. 19/03/2023.

11. पोवारी दिवस

स्वागत गीत

(भारतीय नववर्ष दिन, पोवारी दिन)

मंगलमय स्वागत से नववर्ष दिन को।
स्वागत से हिन्दू नववर्ष को शुभ दिन को ।।

स्वागत से हिन्दू नववर्ष दिन को।
सनातन संस्कृति को पावन दिन को।
पोवारी नवचेतना को मोठो दिन को।
मंगलमय स्वागत से पोवारी दिन को ।।

स्वागत से चैत्र नवरात्रि को दिन को।
आदिशक्ति मां भवानी को दिन को।
पोवारी नवचेतना को मोठो दिन को।
मंगलमय स्वागत से पोवारी दिन को ।।

स्वागत से राम राज्याभिषेक दिन को।
विक्रमादित्य विजयोत्सव को दिन को।
पोवारी नवचेतना को मोठो दिन को।
मंगलमय स्वागत से पोवारी दिन को ।।

नववर्ष दिन से राष्ट्र निष्ठा जगावन को।
नववर्ष दिन से धर्म निष्ठा जगावन से।
पोवारी नवचेतना को मोठो दिन को।
मंगलमय स्वागत से पोवारी दिन को ।।

मंग. 21/3/2023

12. पोवारी दिवस

वा! पोवारी आय आमरी मातृभाषा

(भारतीय नववर्ष दिन,पोवारी दिन)

जेको चरणों मा सदा आमरो माथा।
वा!पोवारी आय आमरी मातृभाषा ।।

जेन् भाषा को विवाह गीतों मा।
राम जानकी अना लछमन का।
पावन नाव सेती गूंथेव गया,
वा!पोवारी आय आमरी मातृभाषा ।।1।।

जेन् भाषा को विवाह गीतों मा।
संस्कारित करन की से क्षमता।
भाव स्नेह का सेती गूंथेव गया,
वा!पोवारी आय आमरी मातृभाषा ।।2।।

जेको गीतों मा सब रिश्ता नाता।
परिचय करावन की से क्षमता।
वधू का रिश्ता सेती गूंथेव गया,
वा! पोवारी आय आमरी मातृभाषा ।।3।।

जहां विवाह की रश्मों मा।
स्नेह बरसावन की से क्षमता।
मधुर भाव सेत गूंथेव गया,
वा ! पोवारी आय आमरी मातृभाषा ।।4।।

जेन् भाषा को विवाह गीतों मा।
आपलोपन जगावन की से क्षमता।
रिश्ता नाता सेत गूंथेव गया,
वा! पोवारी आय आमरी मातृभाषा ।।5।।

समृद्ध संस्कृतिक घरानों मा।
विकसित भयी से जो भाषा।
आत्म भाव सेती गूंथेव गया,
वा! पोवारी आय आमरी मातृभाषा ।।6।।

जेला आम्हीं जान्या मायमाता।
जेको सुख आमला सुखदाता।
जेको साती आम्हीं छलेव गया,
वा!पोवारी आय आमरी मातृभाषा ।।7।।

शुक्र. 17/3/2023

●●●

13. पोवारी दिवस

गीत पोवारी का लिखत चलों

(भारतीय नववर्ष दिन,पोवारी दिन)

गीत पोवारी का रोज लिखत चलों।
नातों हिन्दू धर्म सीन जोड़त चलों ।।

सनातन हिन्दू धर्म से महान।
निज आचरण मा आनत चलों।
निज धर्म ला ना भुलावों कभी,
गीत धर्म का तुम्हीं गावत चलों ।।

मातृभाषा आमरी से महान।
मातृभाषा को प्रेम बढ़ावत चलों।
निज भाषा ला ना भुलावों कभी,
गीत पोवारी का तुम्हीं गावत चलों ।।

संस्कृति आमरी से महान।
संस्कृति आचरण मा आनत चलों।
निज संस्कृति ला ना भुलावों कभी,
गीत संस्कृति का तुम्हीं गावत चलों ।।

समाज की पहचान से महान।
पहचान पर गर्व बढ़ावत चलों।
निज पहचान ला ना भुलावों कभी,
गीत पहचान का तुम्हीं गावत चलों ।।

बुध. 22/03/2023.

14. पोवारी दिवस

पोवारी दिन मा अर्थ महान से

(भारतीय नववर्ष दिन, पोवारी दिन)

——

पोवारी दिन मा निहित अर्थ महान से।
येकी पार्श्वभूमी मा राष्ट्रीय स्वाभिमान से।
हिन्दू नववर्ष ला येव दिन मनायेव लक,
पोवारी दिन की परंपरा जग मा महान से।।

पोवारी दिन मा संस्कृति को भान से।
पोवारी दिन मा धर्म को स्वाभिमान से।
हिन्दू नववर्ष ला येव दिन मनायव लक,
पोवारी दिन की परंपरा जग मा महान से।।

पोवारी दिन मा इतिहास को भान से।
पोवारी दिन मा अस्तित्व को भान से।
हिन्दू नववर्ष ला येव दिन मनायेव लक,
पोवारी दिन की परंपरा जग मा महान से।।

पोवारी दिन मा पोवारी को सम्मान से।
पोवारी दिन मा पोवारी को उत्थान से।
हिन्दू नववर्ष ला येव मनायेव लक,
पोवारी दिन की परंपरा जग मा महान से।।

मंग. 21/03/2023.

15. जयजयकार पोवारी दिवस की

या रम्य कथा पोवारी दिवस की।
या पुण्य कथा नववर्ष दिवस की।
या जयजयकार पोवारी दिवस की। या जयजयकार नववर्ष दिवस की ।।
चैत्र मास की नवरात्रि को,
पहलों पावन दिवस की।
मातृभाषा को उत्सव को,
पावन मंगल दिवस की ।।
या जयजयकार पोवारी दिवस की, या जयजयकार नववर्ष दिवस की ।।
भारतीय नववर्ष को,
पहलों पावन दिवस की।
श्रृष्टि को शुभारंभ को,
चैतन्यमय दिवस की ।।
या जयजयकार पोवारी दिवस की, या जयजयकार नववर्ष दिवस की ।।
सम्राट विक्रमादित्य को,
राज्यारोहण को दिवस की।
विक्रमी संवत् को,
शुभारंभ को दिवस की।
या जयजयकार पोवारी दिवस की, या जयजयकार नववर्ष दिवस की ।।
हिन्दुओ की पंचाग को,
शुभारंभ को दिवस की।
चैत्रमास की शुरुआत को,
उत्तरायण को दिवस की।
या जयजयकार पोवारी दिवस की, या जयजयकार नववर्ष दिवस की ।।
पोवारी भाषा की महिमा,
याद करन को दिवस की।
संस्कृति को उत्थान को,
संकल्प लेन को दिवस की।
या जयजयकार पोवारी दिवस की। या जयजयकार नववर्ष दिवस की ।।
या रम्य कथा पोवारी दिवस की। या पुण्यकथा नववर्ष दिवस की ।।

शनि. 10/04/2021.

●●●

अध्याय 25.

संस्कृति को संरक्षण व संवर्धनः एक मौलिक दायित्व'

1. संस्कृति को अभिप्राय

संस्कृति को सही अर्थ से जीवनशैली! संस्कृति मा मातृभाषा, परम्परा, रीति रिवाज, रिश्ता–नाता, सण–त्यौहार, पर्व, व्रत–उपवास, धार्मिक मान्यता, धार्मिक निष्ठा, धर्म ग्रंथ, देवी–देवता, महापुरुषों को प्रति निष्ठा, वेशभूषा–केशभूषा आदि. विषयों को समावेश होसे. प्रत्येक समुदाय की संस्कृति अलग रव्ह् से अना वू समुदाय आपली संस्कृति को संरक्षण–संवर्धन साती प्रयत्नशील रव्ह् से. कारण स्वयं की संस्कृति मा जगनो येवच सुखदाई रव्ह् से.

2. भारतीय त्यौहारः शैक्षणिक पहलू

(Educational Aspect of the Indian Festivals)

भारतीय त्यौहारों को समय प्रत्येक भारतीय को व्यवहार मा मधुरता,स्नेह,सौहार्दता, उदारता आदि. गुणों को दर्शन होसे. येको कारण घर, परिवार,अना समाज मा अलौकिक सुख–शांति की अनुभूति होसे. त्यौहारों को संबंध मा आम्हीं यदि येतरी भी बात् अधोरेखांकित कर लेया त् निश्चित रूप लक कह सक् सेज् कि सण–त्यौहार या एक अनमोल सांस्कृतिक विरासत आय. अना ये मानव जीवन साती वरदान सेती.

येको पर लक येव साबित होसे कि हिन्दू संस्कृति मा अधिक त्यौहार रहेव को कारण या संस्कृति आलोचना की नहीं बल्कि गुणगौरव साती पात्र से, अना या विश्व की सबसे खूबसूरत व समृद्धशाली संस्कृति से.

त्यौहारों को माध्यम लक बालकों, युवाओं अना प्रत्येक मानव पर शालिनता, सदाशयता,परस्पर प्रेमभाव,सौजन्यशीलता आदि. सद्गुणों अथवा जीवनमूल्यों (Values of Life) का संस्कार होसेती. प्रस्तुत लेखक को अनुसार–''भारतीय त्यौहार या मानव निर्माण की अनौपचारिक पाठशाला आय. बालकों को भावनात्मक विकास (Emotional Development) मा त्यौहारों को अमूल्य योगदान से.

3. संस्कृति व धर्म मा अभिन्नता

धर्म व संस्कृति ला अलग–अलग सांगके वोन् दूहीं को बीच मा स्पष्ट सीमारेखा खींचनों असंभव से. धर्म व संस्कृति ये दुय अलग–अलग व्यवस्था (System) नोहत. लोगों की धार्मिक आस्था यदि बदलत रहें त् येव बदलाव संस्कृति साती बहुत चिंताजनक रव्ह् से. येको कारण संस्कृति कमजोर होन को व नष्ट होन को खतरा उत्पन्न होय जासे.

आमरी संस्कृति या सनातन हिन्दू संस्कृति से. आमरों समाज वेद, रामायण, श्रीमद्भगवद्गीता ला मानने वालों,शक्ति व सूर्य को उपासक, श्रीराम,

श्रीकृष्ण, शिवशंकर महादेव, श्री लक्ष्मी, सरस्वती, पार्वती, तुलसी, पिपल, बड़, गौमाता ला पूजने वालों से.

असो स्थिति मा आमरों समाज मा यदि येशु, मोहम्मद पैगंबर,सांई बाबा,पीर–फकिर–मजार का भक्त बनन की प्रवृत्ति बढ़ रही से त् येला आस्था को विषय कहके दुर्लक्षित करनों अथवा असी प्रवृत्ति ला बढ़ावा देनों येव कार्य अविवेकपूर्ण अना आमरी अनमोल सांस्कृतिक विरासत साती मारक साबित होये. दूसरों धर्म को प्रति बढ़ती आस्था येव एक सांस्कृतिक संकट आय.

4. आमरों दायित्व

सनातन हिन्दू धर्म मा वसुधैव कुटुंबकम्, सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वधर्म समभाव, धार्मिक सहिष्णुता आदि अनेक उदात्त सिद्धांत समाविष्ट सेत. अतः आमरों साती या गौरव की बात से कि आमरों जन्म एक महान संस्कृति मा भयी से व आम्हीं हिन्दू धर्म का अनुयाई सेज्.

आमरों सभी प्राचीन व मध्ययुगीन महान पूर्वजों न् सनातन धर्म अना भारतवर्ष को रक्षण साती महान त्याग व बलिदान देयी सेन व विरासत मा महान सनातन हिन्दू संस्कृति आमला सौंपी सेन. यदि आमला आपलो महान पूर्वजों पर गर्व रहें, उनको त्याग व बलिदान को मोल आमला समजत रहें व उनको वानी सनातन हिन्दू संस्कृति को संरक्षण–संवर्धन करन को दायित्व निभावनों रहें त् आम्हीं आपली धार्मिक आस्थाओं ला मजबूत बनावनों परम् आवश्यक से.

5. आओं ! आत्मशक्ति जगावबी !!

सम्राट विक्रमादित्य प्रथम न् इ. स. पूर्व 57 मा शक आक्रांताओं ला अरबस्तान को भी आगे वरि खदेड़ देई होतीन. वहां वरि आपलो साम्राज्य प्रस्थापित करी होतीन. वोको पश्चात इसाई व इस्लाम धर्म को उदय भयेव. इस्लाम मा उदित जिहादी विचारधारा न् विगत 1400 साल मा 56 राष्ट्र बनाय लेईस. येको विपरीत भारत खंडित होत जाय रही से. भारत को हिन्दुओं मा मानसिंह, जयसिंह,गणूजी शिर्के उत्पन्न होत जासेती अना आपलोच राष्ट्र व सनातन हिन्दू धर्म ला हानि पहुंचावत जासेती.

आमला यदि सनातन धर्म अथवा आपलो समाज को उत्कर्ष करनो रहें त् वोन् दिशा मा प्रयास शुरु करताच विरोध करन मानसिंह, जयसिंह अथवा गणूजी शिर्के वानी आपलाच स्वजन अग्रिम कतार मा उभा होय जासेती. परंतु फिर भी आमला स्वराष्ट्र, स्वधर्म अना निज समाज साती जे कार्य कल्याणकारी व परम् हितकारी सेती,वय कार्य करनोच पड़े. आपलो मंजिल कर आमला बढ़नोच पड़े. आओं ! आत्मशक्ति बढ़ाओं ! निर्भय बनों ! लक्ष्य प्राप्ति वरि रुकों नहीं!!

अध्याय 26.

चरित्र निर्माण को एक मौलिक सिद्धांत

1. चरित्र को अर्थ

कोनतो भी व्यक्ति जसो कार्य अथवा आचरण कर् से, वोको आधार पर समाज को सम्मुख वोकी प्रतिमा (Image) साकार होसे. येन् प्रतिमा ला वोको चरित्र (Charector) कसेती.

2. चरित्र निर्माण का विविध माध्यम

परिवार या मानव निर्माण की प्रथम अनौपचारिक पाठशाला आय. माता –पिता, शिक्षक, धर्म, संस्कृति, संस्कार, शिक्षा, सामाजिक परिसर इनको माध्यम लक मानव को चरित्र साकार होसे.

3. चरित्र निर्माणः एक आजीवन प्रक्रिया

चरित्र निर्माण की प्रक्रिया या केवल बालपन पुरती मर्यादित नाहाय. या जन्म पासून मृत्यु पर्यन्त चलनेवाली एक अखंड प्रक्रिया से.

बालपन मा चरित्र निर्माण की जवाबदारी परिवार, शिक्षण संस्था व समाज पर रव्ह् से. परंतु मोठो होनो पर या जिम्मेदारी प्रत्येक व्यक्ति ला स्वयं वहन करनों पड् से. उदा. एक व्यक्ति स्वार्थी व अवसरवादी से लेकिन दूसरों व्यक्ति परोपकारी तथा सिद्धांतवादी से त् दूही की अलग–अलग प्रतिमा समाज मा साकार होते. व्यक्ति की जसो चरित्र साकार होसे, तसो मान–अपमान वोला समाज मा प्राप्त होसे.

4. निष्कर्ष व सुझाव

1. सर्वप्रथम समाज को प्रबुद्ध वर्ग न् स्वयं को चरित्र निर्माण करें पाहिजे . सुशिक्षित –बुद्धिजीवि वर्ग की प्रेरणा लक समस्त समाज प्रेरित होसे. असो पद्धति लक कोनतो भी समाज को चरित्र उंचाई पर पहुंच सक् से व गौरवशाली समाज को निर्माण संभव होय सिक् से.
2. प्रत्येक समाज मा विद्यमान प्रत्येक स्तर को सामाजिक संगठन न् चरित्र निर्माण ला आपलो प्राथमिक दायित्व मानके कार्य करनों आवश्यक से. आपलो आचरण को माध्यम लक चरित्र निर्माण ला अनुकूल वातावरण निर्माण करें पाहिजे.
3. समाज न् स्वार्थी, महत्वाकांक्षी, अवसरवादी व्यक्तियों ला नहीं, बल्कि जिन व्यक्तियों मा समाज को उज्ज्वल भविष्य साकार करन की तीव्र इच्छाशक्ति से असो सुयोग्य, समाज हितकारी व्यक्तियों ला सामाजिक संगठनों मा निर्वाचित करके पठावनों आवश्यक से.

4. कोनतो भी समाज जब् सही व गलत सिक्का की पहचान करनों सीख जाये अना गलत व्यक्तियों ला सामाजिक मंचों पर बसावनों जेन् दिवस बंद कर देये, वोन् दिवस गौरवशाली समाज नवनिर्माण का सभी द्वार ईश्वर स्वयं आपलो करकमलों द्वारा खोल देये.
5. जेन् कालखंड मा समाज ला जागृत करनों मा सक्षम, युवाशक्ति ला सही दिशा देनेवाला व्यक्ति अथवा मार्गदर्शक समाज प्रबोधन को दायित्व स्वयं प्रेरणा लक आपलों कंधाओं पर उठाय लेसेती वोन् कालखंड मा समाज को नवनिर्माण होसे. अन्य कालखंड मा नहीं!

परिशिष्ट (APPENDIX)

लेखक का मार्मिक आवाहन (हिन्दी)

- 36 कुलीय पोवारों ने यदि स्वयं को पवार लिखा तो वे आरक्षण के लाभ से वंचित होंगे।
- समाज और मातृभाषा का ऐतिहासिक नाम न बदलने का पोवार समाज से आवाहन !
- आधुनिकता अथवा किसी के बहकावे में आकर अपने जाति का नाम बदलना यह बुद्धिमानी नहीं, यह समाज का अपमान है।
- मातृभाषा का ऐतिहासिक नाम बदलना यह स्वाभिमान हीनता का लक्षण और मातृभाषा के उत्थान के लिए घातक

प्रत्येक समुदाय को अपने जाति नाम और मातृभाषा के नाम पर स्वाभिमान होना चाहिए और होता भी है। लेकिन समाज के तथाकथित कर्णधार यदि समाज और मातृभाषा के ऐतिहासिक नाम को बदलने के लिए प्रयत्नशील हो तो ऐसा दौर समाज के लिए दुर्भाग्यपूर्ण और हानिकारक होता है।

पोवार समुदाय (Powar Community)के लोग सम्राट औरंगजेब के शासनकाल में 1700 के आसपास मालवा से स्थानांतरित होकर वैनगंगा अंचल का स्थाई निवासी बन गये हैं। वैनगंगा अंचल में महाराष्ट्र के गोंदिया, भंडारा और मध्यप्रदेश के बालाघाट, सिवनी इन चार जिलों का समावेश होता है। इन चार जिलों में पोवार समाज की घनी आबादी पाई जाती है।

भारत की आज़ादी के पश्चात पोवार समुदाय के लोग व्यवसाय के उद्देश्य से बड़ी तादाद में नगरों में जाकर बसे। इसलिए इस समाज के लोग बड़ी तादाद में वर्तमान छत्तीसगढ़ के भिलाई, राजनांदगांव और रायपुर में भी जाकर बसे है. अतः वर्तमान समय में महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ इन तीन राज्यों में विशेष रुप से पोवार समाज की आबादी पाई जाती है।

स्वयं के प्रत्यक्ष अनुभव एवं ऐतिहासिक दस्तावेजों से पता चलता है कि पोवार यह इस समाज का ऐतिहासिक नाम है तथा इस समाज की मातृभाषा पोवारी कहलाती है। लेकिन भारत में 19 वी सदी सुधारों की सदी कहलाती है। सुधारवादी आंदोलन के प्रभाव से पोवार समाज भी प्रभावित हुआ और 1900 के आसपास मध्यप्रदेश में पोवार समुदाय के कुछ लोगों ने स्वयं को पंवार (Panwar) लिखना प्रारम्भ किया। स्वयं को पंवार लिखने वाले ये सब लोग 36 कुलीय पोवार ही है और यही इनकी मूल पहचान है।

आरक्षण की दृष्टि से यदि विचार किया जाएं तो महाराष्ट्र में इस समाज के छात्रों द्वारा पोवार (Powar)नाम से जाति वैधता प्रमाणपत्र बनाने पर आरक्षण का लाभ मिलता है। लेकिन मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ मे पोवार अथवा पंवार (Powar/Panwar) इन दो में से किसी भी नाम से जाति वैधता प्रमाणपत्र बनवाने पर आरक्षण का लाभ मिलता है।

पोवार समाज के कुछ तथाकथित कर्णधारों ने आरक्षण की इस व्यवस्था को ध्यान में न रखते हुए 1982 से पोवार समाज को अपनी मूल पहचान अर्थात पोवार और पोवारी यह नाम त्यागकर पवार और पवारी यह नये नाम अपनाने के लिए प्रेरित करना शुरु किया। इन प्रयासों की हद तो तब हो गई जब 2014के इटारशी अधिवेशन में राष्ट्रीय क्षत्रिय महासभा के अध्यक्ष डॉ. शरणागत (बालाघाट निवासी) जी ने पोवार भी अब इसके बाद पवार (Pawar) कहलायेंगे ऐसी घोषणा कर दी. गूगल (Google) में पोवार समाज के नाम से सर्च करने पर इस घोषणा से संबंधित दैनिक भास्कर का समाचार पढ़ा जा सकता है।

डॉ. शरणागत जी की घोषणा यह दो दृष्टिकोण से नाजायज है। पहली बात यह की यह घोषणा पोवार समाज की ऐतिहासिक पहचान और स्वाभिमान के खिलाफ है। दूसरी बात यह कि इस घोषणा के अनुसार पोवार समाज के जो लोग स्वयं को पवार लिखेंगे उनके लड़के–लड़कियां महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ इन तीनों राज्यों में आरक्षण के लाभ से वंचित होंगे। अतः इस लेख के माध्यम से प्रस्तुत लेखक द्वारा यह जाहिर आवाहन किया जाता है कि अब से आगे पोवार समाज का कोई भी व्यक्ति अपने समाज का नाम पूर्ववत लिखें, पोवार को बदलके पवार न करें।

आधुनिकता के नाम पर अथवा किसी के बहकावे में आकर अपने समुदाय का ऐतिहासिक नाम बदलना यह बुद्धिमानी नहीं बल्कि अपने समुदाय का जाहिर अपमान है और ऐसा करना आरक्षण के लाभ की दृष्टि से भी हानिकारक है। उसी प्रकार अपनी मातृभाषा का ऐतिहासिक नाम बदलना यह स्वाभिमान हीनता का लक्षण और मातृभाषा के संरक्षण–संवर्धन के लिए घातक है।

समस्त पोवार समाज से जाहिर अनुरोध है कि आप सब गर्व से कहें कि हम पोवार है और हमारी मातृभाषा पोवारी है। यह स्वाभिमान जब आपमें निर्माण हो जायेगा तब आपकी मातृभाषा के उत्कर्ष और आपके समाजोत्थान के सब दरवाजे स्वयं खुल जायेंगे।

●●●

स्वाभिमान : सामाजोत्थान का मूलमंत्र ! (हिन्दी)

- अपनी ऐतिहासिक पहचान का स्वाभिमान होना यह गौरवास्पद और प्रशंसनीय है।
- स्वाभिमान यह मानव जीवन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व है।
- स्वाभिमान हीनता यह व्यक्ति, समाज, धर्म और राष्ट्र को कमजोर करती है।
- किसी समाज, भाषा, धर्म या राष्ट्र को शक्तिशाली बनाने के लिए उसके सदस्यों में स्वाभिमान जागृत करना यह प्रथम बुनियादी कार्य है।

हमारे शास्त्रों और महापुरुषों की हमेशा यह सीख रहीं है कि मानव के मन में स्वराज्य, स्वधर्म और स्वजाति और कुल–खानदान का स्वाभिमान होना चाहिए स

यदि राष्ट्र, धर्म और जाति इन तीनों तत्वों को एकसाथ हमारी सेवा की आवश्यकता हो तो, हमें प्रथम प्राथमिकता राष्ट्र को द्वितीय प्राथमिकता धर्म को एवं तीसरी प्राथमिकता जाति को देनी चाहिए यह सीख भी हमारे शास्त्रों और महापुरुषों ने दी है।

उपरोक्त प्रकार के शास्त्रीय ज्ञान और भारतीय महापुरुषों के विचारों के आलोक में प्रस्तुत लेखक जब अपने पोवार समुदाय पर दृष्टिपात करता है तो यहां दिखाई देता है कि भारत की आजादी के बाद सत्तर वर्षों तक हमारे समाज के कर्णधारों ने पोवार समाज में उसके ऐतिहासिक नाम और मातृभाषा पोवारी के प्रति अनादर, अश्रद्धा और तिरस्कार के भाव उत्पन्न किए। कुछ तथाकथित कर्णधारों ने 1982 से पोवार समाज का पवारीकरण करने का कार्य प्रारंभ किया. वे समाज को पोवार के स्थान पर पवार तथा मातृभाषा पोवारी को पवारी कहने–लिखने के लिए निरन्तर प्रेरित कर रहें है। परिणामस्वरुप पोवार समाज(Powar Community) के कुछ पढ़े –लिखे लोग अपने को पवार (Pawar) और अपनी मातृभाषा को पवारी (Pawari) कहने में गर्व महसूस करते हैं।

जो लोग पोवारों को अपनी मूल पहचान छोड़ने प्रेरित कर रहें है वे पोवार समाज को उनकी संस्कृति और मातृभाषा के संरक्षण–संवर्धन के आश्वासन भी देते हैं और पोवार समाज के उत्थान की बातें करते हुए पाये जाते हैं। इसपर प्रस्तुत लेखक का प्रामाणिक अभिमत निम्नलिखित है –

1. एक तरफ 36 कुलीय पोवार समाज को अपनी मूल पहचान छोड़ने के लिए प्रेरित करना और दूसरी ओर पोवार समाज की मातृभाषा और संस्कृति के संरक्षण–संवर्धन की बातें करना, इन दोनों कार्यो में परस्पर विसंगति है। इस तरह की परस्पर विरोधी बातें करना यह उनके षड़यंत्र का हिस्सा है।
2. पोवार समाज की अपने पौराणिक नामों पर जो निष्ठा है उसे यदि आप नष्ट कर रहें है तो इसके परिणामस्वरूप पोवार समाज की समग्र निष्ठा में बिखराव आयेगा, और निष्ठा का यह बिखराव धीरे–मातृभाषा और पोवारी संस्कृति को नष्ट कर देगा ।
3. समाजोत्थान यह संकल्पना (Concept)केवल भौतिक प्रगति तक मर्यादित नहीं है. समाजोत्थान में समाज का सर्वांगीण उत्थान अपेक्षित है। इसमें भाषिक और सांस्कृतिक विकास के साथ–साथ भौतिक विकास की अवधारणा भी समाविष्ट है। परंतु पोवार समाज की ऐतिहासिक पहचान के प्रति निष्ठा के साथ खिलवाड़ की जा रही है । इससे इस समाज की समग्र निष्ठा में बिखराव की स्थिति उत्पन्न होगी। परिणामस्वरुप समाज की मातृभाषा और संस्कृति के संरक्षण–संवर्धन के सपने चकनाचूर हो जायेंगे।

समाज की संस्कृति और मातृभाषा के विकास के साथ–साथ भौतिक विकास का लक्ष्य साध्य करने के लिए समाज में अपनी ऐतिहासिक पहचान के प्रति प्रखर निष्ठा जगाना और समाज को अपने ऐतिहासिक नाम के साथ–साथ अपनी मातृभाषा का ऐतिहासिक नाम भी सही लिखने के लिए प्रेरित करना यह हमारा प्रथम कर्तव्य है। ऐतिहासिक पहचान के प्रति स्वाभिमान विकसित करके ही हमें सर्वांगीण समाजोत्थान के लक्ष्य को हासिल करना संभव हो पायेगा.

सिद्धांत

मानव जीवन का सामाजिक, सांस्कृतिक, राजकीय, आर्थिक, धार्मिक, नैतिक, वैज्ञानिक आदि. विविध पहलू सेती. सभी क्षेत्रों मा सिद्धांतों की आवश्यकता महसूस करेव जासे. बिखरेव विचारों ला अध्ययन, अनुभव, अवलोकन, निरीक्षण, परिक्षण को आधार पर सुव्यवस्थित, वर्गीकृत व परस्पर संबंधित करेव पर एक सुस्पष्ट विचार, अभिमत अथवा संकल्पना साकार होसे. वोन् संकल्पना ला सिद्धांत को नाव लक संबोधित करेव जासे.

नवी पीढ़ी साती सिद्धांत ये पथप्रदर्शक साबित होसेती. सिद्धांतों द्वारा व्यक्ति वैचारिक दृष्टि लक समृद्ध होसे. वोला वोको ज्ञान मा पाई जानेवाली त्रुटि अवगत होसे.

प्रस्तुत लेखक को अभिमत से कि पोवार समुदाय को सामाजिक संगठनों द्वारा पंजीयन को समय प्रस्तुत करेव गयेव ज्ञापन (Memorandum) को अनुसार अथवा समय - समय पर विशिष्ट ध्येय व उद्दिष्ट (Aims and Objectives) निर्धारित करके कार्य होत गयेव. परंतु सामाजिक संगठनों ला सैद्धांतिक अधिष्ठान नोहतो. येको कारण समय की हवा को रुख को अनुसार सामाजिक संगठन कार्य करत गया व समाज की ऐतिहासिक/परंपरागत पहचान मिटावन को षड़यंत्र भी प्रारंभ करीन. भाषिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक व राष्ट्रीय अस्मिता आदि. पहलू दुर्लक्षित - उपेक्षित भया व समाज को अतोनात नुकसान भयेव. अतः पोवार समुदाय व सामाजिक संगठनों ला पथप्रदर्शक साबित होयेत असो सिद्धांतों की आवश्यकता महसूस होन लगी. येन् ग्रंथ को माध्यम लक पोवार समुदाय को उत्थानसाती पथप्रदर्शक साबित होयेत असा सिद्धांत उपलब्ध करायेव गया सेत. प्रस्तुत ग्रंथ मा निहित सिध्दांत, सनातन हिन्दू धर्म मा निहित सभी समुदायों साती समान रुप लक उपयोगी सेती.
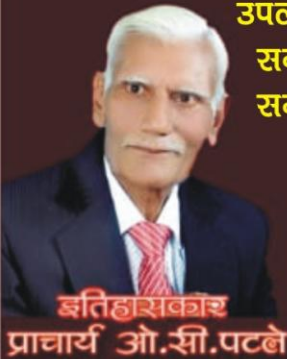
इतिहासकार
प्राचार्य ओ.सी.पटले

ISBN : 978-93-5812-951-9